तेरे ख़ुशबू में बसे ख़त

उर्दू शायरी



राजेन्द्र नाथ रहबर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तेरे ख़ुशबू में बसे ख़त

राजेन्द्र नाथ रहबर
पठानकोटी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

विशेष आभार

मैं अपने प्यारे मित्र श्री राकेश ओबराय एडवोकेट और उनकी धर्म पत्नी श्रीमति संगीता ओबराय के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना अपना ईश्वरादिष्ट कर्तव्य मानता हूं। उन्होंने मुझे यह काव्य संग्रह देवनागरी लिपि में प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया। वह कई वर्षों से स्थायी रूप से कैनेडा में रह रहे हैं किन्तु शायरी के लिए बे–पनाह महब्बत और प्यारे भारत की सोंधी मिट्‌टी की ख़ुशबू आज भी उन के दिलों में रची बसी हुई है। उन की प्रेरणा और परामर्श के फलस्वरूप ही यह काव्य संग्रह भारत वर्ष की प्रधान लिपि देवनागरी में प्रकाशित हो कर प्यारे पाठकों के हाथों में पहुंचा है। इस प्रेरणा और परामर्श के लिए ओबराय दम्पति का कोटि–कोटि धन्यवाद !

पठानकोट

राजेन्द्र नाथ रहबर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अनुक्रम

ग़ज़लें

1. ये कैसी चारागरी है इलाज कैसा है 33
2. क्या करे एतिबार अब कोई 34
3. बस चन्द ही दिनों के थे डेरे चले गए 35
4. शाम कठिन है रात कड़ी है 36
5. करते रहेंगे हम भी ख़ताएं नई नई 37
6. सफ़र को छोड़ कश्ती से उतर जा 38
7. बे–सबब ही उदास हो जाना 39
8. कल तक था नाम जिनका बदनाम बस्तियों में 40
9. मुन्तज़िर बैठे हुए हैं शाम से 41
10. इक आग तन बदन में लगाती है चांदनी 42
11. शमअ जलती है ता–सहर तन्हा 43
12. तय करें मिल के हम तुम बहम रास्ता 45
13. किस ने अपना दामन झटका किस ने अपना हाथ छुड़ाया 46
14. जिस्मो–जां घायल, परे–परवाज़ हैं टूटे हुए 47
15. अपना डेरा फ़कीर छोड़ गये 48
16. तो आस्तीं में कोई सांप पालिए साहिब 49
17. अंजाम से वाक़िफ़ है मगर झूम रहा है 50
18. मुदावा दर्दे–दिल का ऐ मसीहा छोड़ देना 52
19. महताब नहीं निकला सितारे नहीं निकले 53
20. सर को वो आस्तां मिले न मिले 54
21. बरसती आग से कुछ कम नहीं बरसात सावन की 55
22. नसीमे–सुब्ह का झोंका इधर नहीं आया 56
23. महब्बत चार दिन की है अदावत चार दिन की है 57
24. जलवों की अरज़ानी कर दो 58

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

25.	बेवफ़ाओं को वफ़ाओं का ख़ुदा हम ने कहा	59
26.	हम से मत पूछ कि क्या हम ने दुआ मांगी है	60
27.	सुलगती धूप में साया हुआ है	61
28.	दिल ने जिसे चाहा हो क्या उस से गिला रखना	62
29.	आया न मेरे हाथ वो आंचल किसी तरह	63
30.	हज़ार बार तुम उभरे मिरे ख़्यालों में	64
31.	आंखों में तजस्सुस है रफ़तार में तेज़ी है	65
32.	क्या आज उन से अपनी मुलाक़ात हो गई	66
33.	तुम जन्नते कश्मीर हो तुम ताज महल हो	67
34.	मेले में ये निगाह तुझे ढूंडती रही	68
35.	जाने वालो, हज़ार दरवाज़े	69
36.	पड़ी रहेगी अगर गम की धूल शाख़ों पर	71
37.	दिल ने भी किस से लौ लगाई है	72
38.	हर डगर पुर–ख़ार है हर राह नाहमवार सी	73
39.	हर एक शय से अलम आइना है कमरे में	74
40.	दिलों से गर्दे–जहालत को साफ़ करता है	75
41.	न कोई गुल न कोई पात बाक़ी	76
42.	देखो तो हमदर्द बड़े हैं	77
43.	साफ़ शफ़्फ़ाफ़ आब हैं हम लोग	78
44.	सबाहतें भी हैं कुर्बां वो साँवलापन है	79
45.	कभी जब उन के शानों से ढलक जाता रहा आंचल	80
46.	दामने सद चाक को इक बार सी लेता हूं मैं	81
47.	मौसम मिज़ाज अपना बदलने लगा है यार	82
48.	दिल को जहान भर के महब्बत में ग़म मिले	83
49.	मचलते गाते हसीं वलवलों की बस्ती में	85
50.	ग़ाज़े हैं नए और हैं रुख़्सार पुराने	87
51.	कैसा डेरा कैसी बस्ती	89

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

52. कभी हमारे लिए थीं महब्बतें तेरी 91

53. देखें वो कब शाद करे है 93

नज़्में

54. तेरे ख़ुश्बू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे 94

55. बदला 96

56. गुफ़्तगू 98

57. मीना कुमारी 99

58. ख़मसे 100

59. विद्यार्थी की आरज़ू 106

60. क़तए 108

61. अजमेर कौर 110

62. नई दुनिया 114

63. नादान बुजुर्ग 115

64. चले आओ कहीं से 117

65. ऐ वतन 118

66. दूधिया आंचल 121

67. आ जाना 123

68. ज़वाल 125

69. भीगी पलकें 127

70. तुम्हारी याद 129

71. उसूल 130

72. गुले–खंदां 131

73. आ मिरी बाती में तेल डाल 133

ग़ज़लें

74. महब्बत कर के पछताना पड़ा है 134

75. कोई जीना है जीना ऐ सनम तुझ से जुदा होकर 135

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

76.	मैं इक चिराग़ हूं दहलीज़ पर सजा मुझ को	136
77.	वो दूर हों तो आग का दरिया है ज़िन्दगी	137
78.	हम उन के मुस्कराने की अदा पर जान देते हैं	138
79.	याद कर कर के आप की बातें	139
80.	जब मिरे प्यार पे ग़ुस्से से बिफर जाते हैं	140
81.	बराबर जामे–मय के जामे कौसर हो नहीं सकता	141
82.	जो ग़म दिया हो उस ने वो ग़म कोई ग़म नहीं	142
83.	मुल्तफ़ित जब तिरी नज़र होगी	143
84.	बात दिल की अदा नहीं होती	144
85.	दिल बन रहा है मरकज़े–आफ़ात इन दिनों	145
86.	ग़म के मारों से दोस्ती कर लो	146
87.	कुछ दिये तारीकी–ए–शब में जला देता हूं मैं	147
88.	जब मज़ा है हम में लुत्फ़े–ख़ास फ़रमाए शजर	148
89.	प्यार में डूबे हुए गीत सुना कर किस ने	149
90.	तारों से भी आगे की ख़बर दी गई मुझको	150
91.	जागते हैं रात भर मयख़ाने तेरे शहर में	151
92.	खिला है फूल तो वो चिहरा याद आया है	152
93.	फ़साना–गो है तेरे वस्ल की टूटी हुई चूड़ी	153
94.	जिसे देखो वो ग़म में मुब्तला है	154
95.	खिला हुआ है शफ़क़ की मिसाल फिर कोई	155
96.	कोई भूला हुआ ग़म दिल में बसाए रखना	157
97.	जब से दिल में तुम्हें बसाया है	159
98.	सख़्त नासाज़ है दुनिया की फ़ज़ा ऐ साक़ी	160
99.	चूम लेता हूं हाथ क़ातिल के	161
100.	काम रहता है हर घड़ी ग़म से	162
101.	आप के हिज्र में ये आलम है	163
102.	नज़र के तीर दिलों में उतारने वाले	164

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

103. न गुन्चे हैं न गुल हैं आह अपने 165
104. हाल दिल का सुना नहीं सकते 166
105. हस्रते–दिल कभी नाकाम भी हो जाती है 167
106. उन को क्या चाहने लगा हूं मैं 168
107. मस्त आंखों का फ़ैज़ जारी है 169
108. वो नज़र बदगुमां सी लगती है 170
109. लुत्फ़ गो जज़बात के दरिया में बह जाने में है 171
110. इक दुश्मने वफ़ा से तमन्ना वफ़ा की है 172
111. ख़्यालों में जब उस महवश की बज़्मे–नाज़ होती है 173
112. कभी फ़र्याद बर–लब तेरे दीवाने नहीं होते 174
113. जोशे जज़बाते महब्बत का असर देखा किए 175
114. चले आओ कि याद अकसर दिले–दीवाना करता है 176
115. जाने–दिल, जाने जिगर, जाने तमन्ना आप हैं 177
116. रंज की खूगर तबीयत हो गई 178

नज़्में

117. बुलबुल के ज़मज़में हैं 179
118. मिट्टी का मकां 180
119. मिन्नत 181
120. मरसिया प्रो. पुरुषोतम लाल 'ज़िया' 183
121. आया ज़बां पे नाम 186
122. ब्रहमन् 188
123. ताजदारों के अमीर 189
124. रूठे हुओं को हम ने मनाना है दोस्तो 190
125. ईद 192
126. बूटा सिंह की 'ज़ैनब' के नाम 193
127. ऐ मेरे उस्ताद 194
128. तिरंगा 195
129. मुतफ़र्रिक अशआर 196

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

राजेन्द्र नाथ रहबर के काव्य–संग्रह 'ज़ेबे–सुख़न', 'और शाम ढल गई' और 'मल्हार' आदि पर मशाहीर[1] का इज़हारे–ख़्याल

जनाब अली सरदार जा'फ़री साहिब

ब्रादरम् ! तसलीम

आप की किताब 'ज़ेबे–सुख़न' का नुस्ख़ा[2] मिला, शुक्रिया ऐसी अच्छी, साफ़ सुथरी, दिलकश और दिलावेज़ शायरी पर मुबारक बाद क़बूल कीजिए!

खिलेंगे रोज़ नए फूल इस की शाख़ों पर
बहारें रक़्स करेंगी तुम्हारे शे'र के साथ

दुआ गो,
मुम्बई
सरदार जाफ़री
(ज्ञानपीठ अवार्ड विजेता)

1. मशहूर लोग 2. प्रति

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जनाब शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी साहिब

ब्रादरम् राजेन्द्र नाथ रहबर साहिब!
तसलीमात वा आदाब !

आप के कलाम[1] में जो मश्शाक़ी[2] और उस्तादाना रवानी है उस से दिल बहुत मुतआस्सिर हुआ। मुझे (प्रो. प्रेम कुमार) 'नज़र' ने बताया कि आप ने उस दयार के कई शायरों के अदबी ज़ौक़ की तर्बियत की है। ये बात मेरे लिए और ख़ुशी का बाइस हुई। अब ऐसे लोग कम रह गए हैं जो अपनी फ़न्नी महारत से दूसरों को इस्तिफ़ादा[3] करने का मौक़ा फ़राहम कर सकें।

उम्मीद कि मिज़ाज बख़ैर होगा

आप का
शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी
(के. के. बिरला फ़ाउँडेशन के
सरस्वती सम्मान से सम्मानित)

इलाहाबाद

1 शायरी 2. फ़न्नी महारत 3. विद्या आदि का लाभ प्राप्त करना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जनाब काली दास गुप्ता रिज़ा

(माहिर–ए–ग़ालबियात)*

शे'री मजमूआ 'ज़ेब–ए–सुख़न' मेरे पेश–ए–नज़र है। ये मेरी जनम भूम यानी पंजाब के एक कुहना–मश्क़ उर्दू शायर की तस्नीफ़[1] है। लब–ए–शौक़ से इसे बोसा[2] दिया और सर आंखों से लगाया। बेहद मसर्रत हुई कि आज भी हमारे हिस्से के बचे खुचे पंजाब में कुछ जियाले मौजूद हैं जो उर्दू ज़बान को गले लगाए बैठे हैं और जवाहिर उगल रहे हैं।

किताब की वर्क़–गर्दानी[3] से मालूम हुआ कि जनाब राजेन्द्र नाथ 'रहबर' शे'र ही नहीं कहते बल्कि कहने की तरह शे'र कहते हैं। ज़बान साफ़ सुथरी, मुहावरे और रोज़–मर्रे से आरास्ता[4], कहीं आमियाना–पन[5] नहीं और सब से बढ़ कर ये कि बा–मा'नी।

वज़्अ–दार[6] हैं तो ऐसे,

> मिल गए जब तुम तो कैसा काम फिर
> घर से हम निकले थे यूं तो काम से

तन्ज़[7] किया तो ऐसा तीखा,

> कहीं ज़मीं से तअल्लुक़ न ख़त्म हो जाए
> बहुत न ख़ुद को हवा में उछालिए साहिब

उन का ये शे'र ख़ुद उन्हीं पर सादिक़ आता है :

> अभी न गुलशने–उर्दू को बे–चिराग़[8] कहो
> खिले हुए हैं अभी चन्द फूल शाखों पर

हैरत है कि पठानकोट ऐसे उर्दू से ना–ख़ांदा[9] इलाक़े में भी आप उर्दू के गुलज़ार खिला रहे हैं ।

मुख़लिस

मुम्बई — काली दास गुप्ता रिज़ा

---

1. रचना 2. चुंबन 3. पन्ने पलटना 4. सुसज्जित 5. हल्कापन
6. अपने तौर तरीक़े पर क़ाइम रहने वाला 7. कटाक्ष 8. उजड़ा हुआ 9. अनपढ़

* 'ग़ालिब' पर अथारिटी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जनाब वाली आसी साहिब

(मक़बूल शायर)

ब्रादरे गिरामी क़द्र! तस्लीमात,

'ज़ेब–ए–सुख़न' का तुहफ़ा दस्तयाब हुआ। अज़ अव्वल ता आख़िर पढ़ा और हर एक मिस्रे पर वाह–वाह और सुब्हान–अल्लाह कहा। यक़ीन कीजिए कि काफ़ी दिनों के बाद कोई अच्छा शे'री मजमूआ पढ़ने को मिला। ग़ज़ल के कलासिकल रचाव के साथ–साथ एक ख़ुशगवार ताज़गी और शिगुफ़्तगी आप के कलाम का ख़ास्सा है वरना ईमानदारी की बात तो यह है कि नई ग़ज़ल के नाम पर जो हज़यान[1] बका गया है वो किसी भी सिक़ह[2] ज़िह्न को मुतआस्सिर नहीं कर सकता। मुबारकबाद के मुस्तहक़[3] हैं आप जैसे लोग जो इस अंधेरे में एक रौशनी की लकीर बनाए हुए हैं।

लखनऊ

हक़ीर फ़क़ीर
वाली आसी

1. बुख़ार की हालत में रोगी की न समझ आने वाली बड़बड़ाहट 2. विश्वस्त मस्तिष्क
3. हक़दार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

भाषा विभाग पंजाब सरकार, पटियाला

सम्मान पत्र

पिछले पांच दशकों से निरंतर काव्य साधना करने वाले जनाब राजेन्द्र नाथ 'रहबर' का उर्दू काव्य जगत में विशेष स्थान है। अबुल–बलाग़त पं. रतन पंडोरवी के लाइक़ शार्गिद के रूप में अपना शे'री सफ़र शुरू करने वाले श्री 'रहबर' अब ख़ुद रेख़्ता (उर्दू का प्राचीन नाम) के कामिल उस्ताद का दर्ज़ा हासिल कर चुके हैं। आप की रचनाएँ जहां कला पक्ष से जीवन और सादगी का ख़ूबसूरत मुजस्समा (प्रतिमा) हैं वहां विषय पक्ष से इन्सानी ज़मीर की आवाज़ भी हैं। आसान और सादा शब्दों में बे–हद गम्भीर ख़्यालात के इज़हार में महारत रखने वाले जनाब 'रहबर' की काव्य–कृतियां जीवन की मूल वास्तविकता, नैतिक क़द्रों क़ीमतों और इन्सानी रिश्तों का दपर्ण हैं। आप की तहरीरें बहते पानियों को आग लगाने वाली ही नहीं बल्कि इनसानी रगों में दौड़ रहे ख़ून को भी हरारत प्रदान करती हैं। आप की शायरी महबूब की ज़ुल्फ़ों की असीर नहीं बल्कि यह नए और मौलिक अंदाज़ में आधुनिक इन्सान को दर–पेश समस्याओं और मानसिक तनावों का सार्थक विश्लेषण भी है।

समूह साहित्यिक जगत को, समाज की सेहतमन्द रहनुमाई करने वाले ऐसे अदबी रहबर पर गर्व है।

पठानकोट — धन्न लिखारी नानका

21.4.2001 — भाषा विभाग पंजाब

नोट :– भाषा विभाग पंजाब के तत्वावधान में 21 अप्रैल 2001 को पठानकोट में आयोजित सम्मान समारोह में श्री रहबर को पेश किए गए कांस्य पदक पर कन्दा (खुदी हुई) पंजाबी इबारत का हिन्दी अनुवाद ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जनाब रिफ़अत सरोश साहिब

(सरोश इस दौर में सच बोलना भी इक इबादत है)

मुकर्रमी रहबर साहिब! तसलीम

किताब बहुत खूबसूरत छपी है। आप के यहां कलासिकी रखरखाव के साथ नए मज़ामीन को बांधने का रुजहान मिलता है। अशआर जगह जगह दामने–दिल को पकड़ लेते हैं और एक अनोखे तजरबे का एहसास होता है जैसे

तू ख़ुशबू है तो फिर क्यों है गुरेज़ां
बिखरना ही मुक़द्दर है, बिखर जा

शमअ जलती है ता–सहर तन्हा
हम को जलना है उम्र भर तन्हा

कितना सादा और पुर–कार मतला है। आप की ग़ज़लों में दबी दबी सी चिंगारियां हैं।

मुफ़र्रस[1] तरकीबों और रिवायती तशबीहों[2] और इसतिआरों[3] के माहौल से निकल कर आप ने जदीद ग़ज़ल को सजाया संवारा है। मुझे उम्मीद है कि आप का मजमूआ–ए– कलाम बे–हद मक़बूल होगा और नई ग़ज़ल कहने वालों में आप को नुमायां[4] मक़ाम अता करेगा ।

नोइडा (यू. पी.) रिफ़अत सरोश

1. फारसी विधि 2. पुरानी उपमाओं 3. रूपक, लक्षण 4. प्रत्यक्ष

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्री जगजीत सिंह

(विश्व प्रसिद्ध गायक)

माई डियर रहबर जी,

आप का काम सराहनीय है और आप की नज़्म 'तेरे खुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे' में ये ख़ास तौर पर सराहनीय है।

आप के क़लम द्वारा लिखी गई कोई भी रचना सब से पहले मेरे पास आनी चाहिए ।

मुम्बई

एहतिराम के साथ,
आप का मुख़लिस,
जगजीत सिंह

अंग्रेज़ी से अनुवाद

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रो. प्रेम कुमार नज़र साहिब
(मशहूर शायर)

राजेन्द्र नाथ रहबर का शुमार पंजाब की उन अदबी हस्तियों में होता है जिन्हों ने उर्दू की बुझती हुई शमअ को रौशन रखने में अपना ख़ूने–जिगर जलाया है। आज उन की हैसियत एक कुहना–मश्क़ शायर और मुसल्लमुल–सबूत उस्तादे–फ़न के तौर पर तसलीम[1] की जा चुकी है। उन की बे–पनाह ज़िहानत और फ़न्नी महारत ने उन्हें अदबी हल्क़ों में एक मुम्ताज़[2] मक़ाम पर फ़ाइज़[3] कर दिया हैं उन के आबाई शह्‌र पठानकोट में एक दबिस्ताने–शायरी आलमे–वजूद में आ चुका है। पंजाब में इस वक़्त शायद ही कोई दूसरा और शह्‌र होगा जहां उर्दू शायरी की रिवायत इस क़दर मुस्तहकम[4] है जैसी कि पठानकोट में। मुझे इस बात से बे–हद ख़ुशी होती है कि उन्होंने अपने शह्‌र में उर्दू शायरी की एक बे–मिसाल शमअ रौशन कर रक्खी है।

राजेन्द्र नाथ रहबर ने पंजाब के एक कामिल उस्तादे–फ़न और कुहना–मश्क़ शायर जनाब रतन पंडोरवी से फ़न्नी इस्‌तिफ़ादा[5] किया। रतन पंडोरवी साहिब क़लन्दराना ज़िन्दगी गुज़ारते थे। उन पर हमेशा रूहानी वजदान की कैफ़ियत छाई रहती थी। वो फ़क़्र (सन्यास) को ज़िन्दगी का तुर्रा–ए–इम्‌तियाज़ समझते थे और दुनियावी आसाइशों[6] से कोसों दूर रहते थे। रहबर को अपने उस्ताद से फ़न की बे–पनाह दौलत और ज़िन्दगी करने की अदा विरासत में मिली और सच तो ये है कि आप ने इस रिवायत को ईमान की तरह निभाया और हस्बे–तौफ़ीक़ आगे बढ़ाया।

सिले और सिताइश[7] की तमन्ना किए बग़ैर रहबर बरसों से एक पुर–वक़ार ख़ामोशी के साथ उर्दू की ख़िदमत में मसरूफ़ हैं बलकि कई बार तो ऐसा महसूस होता है कि किसी ग़ैबी ताक़त[8] ने आप को इस काम पर मामूर[9] कर रक्खा है। अगर आज के पंजाब में उर्दू का ख़ामोश और बे–लौस ख़िदमत–गार देखना हो तो राजेन्द्र नाथ रहबर को देखिए

होशियारपुर — प्रेम कुमार नज़र

---

1. स्वीकृत 2. श्रेष्ठ 3. पदासीन 4. मज़बूत 5. विद्या का लाभ प्राप्त किया 6. सांसारिक सुख 7. इनाम और प्रशंसा 8. ईश्वरीय शक्ति 9. नियुक्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जनाब ज्ञान सिंह शातिर

शायर जो कुछ लिखता है उस में कुछ आप बीती होती है और कुछ जग बीती, कुछ रूहानी तज्रिबात होते हैं और कुछ वजदानी मुहर्रिकात्। आप की शायरी में वो सब कुछ मौजूद है। जिन अशआर को मैं ने ज़ेबे–सुख़न में ख़तगीर[1] किया है उन में से चंद ज़ैल में दर्ज हैं :

जो कोई खाता है करता है ज़ह्र अफ़शानी[2]
हमारे अह्द[3] का यारो अनाज कैसा है

तुम आ गए बहार सी हर शय पे छा गई
महसूस हो रही हैं फ़ज़ाएँ नई नई

वो फूल पहुंचे न जाने कहां कहां रहबर
नहीं था जिन को ठहरना क़बूल शाख़ों पर

सुनने को जिसे गोश–बर–आवाज[4] है दुनिया
वो गीत अभी साज़ के पर्दों में छुपा है

हो उस के ज़िह्न में शायद ख़याले–नौ[5] कोई
हर एक शख़्स से वो इख़्तिलाफ़[6] करता है

इस शे'र का ख़्याल निहायत अर्फ़ा वा आ'ला[7] है

हैदराबाद

ज्ञान सिंह शातिर
(साहित्य अकादमी अवार्ड विजेता)

---

1. वह शे'र जिन के नीचे पसंदीदगी का निशान लगाया जाए 2. ज़हर उगलना 3. युग 4. आवाज़ पर कान लगाए हुए 5. नया ख़्याल 6. प्रतिकूलता 7. बहुत ऊँचा और बढ़िया

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डा. जगतार

मुहतरम जनाब रहबर साहिब! आदाब

'ज़ेबे–सुख़न' के बारे में क्या लिखूं। अरे भाई, आप कुहना मश्क़ उस्ताद शायर हैं। इतना ही कह सकता हूं कि बहुत महज़ूज़[1] और मुतआस्सिर[2] हुआ हूं आप के कलाम से। बड़ी ताज़गी, शिगुफ़्तगी और तग़ज़्ज़ल है आप के अशआर में।

काश! मैं ऐसे अशआर[3] कह सकता ।

आप का अपना,
जगतार
(साहित्य अकादमी अवार्ड विजेता)

जालंधर

This book is available on internet at Website :
in.geocities.com\rehbarsaab

1. आनंदित 2. प्रभावित 3. शे'र

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डा. अख़्तर बस्तवी

राजेन्द्र नाथ रहबर को हर तरह सिन्फ़े–ग़ज़ल का मिज़ाज–दां[1] कहा जा सकता है। सादगी और पुर–कारी[2] का कैसा इम्तिज़ाज[3] ग़ज़ल के अच्छे शे'रों को जनम देता है इस से वो बख़ूबी वाक़िफ़ हैं। सादगी उनके कलाम का बहुत बड़ा जौहर है लेकिन ये सादगी न सपाट है न बे–रंग। इस में ऐसी पुर–कारी समोई हुई है जो ग़ैर महसूस तौर पर क़ारी[4] के ज़िह्न में फ़न–कारी का जादू जगाती है।

फ़िक्रो–फ़न दोनों के एतिबार से रहबर साहिब की शायरी ख़ूब से ख़ूब–तर की जुस्तजू से इबारत है। उनका एक शे'र है

सुनने को जिसे गोश–बर–आवाज़[5] है दुनिया
वो गीत अभी साज़ के पर्दों में छुपा है

साज़ के पर्दों में छुपे हुए इसी गीत को दुनिया के कानों तक पहुंचाने की कोशिश को अगर उन की शायरी का मुद्दा वा मक़सद कहा जाए तो ग़लत न होगा।

अख़्तर बस्तवी

अध्यक्ष, उर्दू विभाग
गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर

---

1. स्वभाव से परिचित 2. जड़ाऊपन 3. संमिश्रण 4. पाठक
5. सुनने के लिए सरापा कान बन जाना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डा. तारिक़ किफ़ायत

जनाब राजेन्द्र नाथ रहबर का शुमार उर्दू के कुहना–मश्क़ शायरों में होता है और आप की अदबी ख़िदमत कमो–बेश निस्फ़ सदी[1] पर मुहीत है बक़ौल हफ़ीज़ जालंधरी 'निस्फ़ सदी का क़िस्सा है दो चार बरस की बात नहीं'। एक तरफ़ आप की ग़ज़ल सह्ले–मुमतना (ऐसा शे'र जो बहुत सरल जान पड़े परन्तु वैसा कहना असंभव हो) का नमूना है, तो दूसरी तरफ़ एक ऐसे सोज़ की मौजूदगी का एहसास जिस में रचाव, जज़्ब और तासीर है और जो दिल से निकल कर दिल में उतर जाने की सलाहियत[2] रखता है। तनहाई पसन्दी, वज़अ–दारी, सुलगता सुलगता, ख़ामोश सा इदराक[3] ग़मे–'मीर' से क़ुर्बत[4] अता करता है तो 'नासिर काज़मी' की याद भी ताज़ा करता है जिस की शहादत आप के इस क़िस्म के अश्आर फ़राहम करते हैं :

बे–सबब ही उदास हो जाना
किस ने दिल के मिज़ाज को जाना

मैं था, किसी की याद थी, जामे–शराब था
ये वो निशस्त थी जो सहर तक जमी रही

बे इख़्तियार आंखों से आंसू छलक पड़े
कल रात अपने आप से जिस वक़्त हम मिले

रहबर साहिब की एक और शनाख़्त[5] आप का मानूस लबो–लहजा[6] जदीद लफ़्ज़ियात और शे'री तलामज़ों[7] में छुपी आप की इस्री हिसियत[8] भी है।

डिपार्टमैंट आफ़ फ़ारसी, उर्दू, अरबी,
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

तारिक़ किफ़ायत

1. आधी शताब्दी 2. योग्यता 3. बोध 4. समीपता 5. पहचान 6. जाना पहचाना तर्जे–कलाम 7. मज़मून अदा करने हेतु शब्दों का प्रयोग 8. वर्तमान शायरी की प्रवृत्ति को महसूस करने की समर्थता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्री प्रेम वार बर्टनी

(प्रसिद्ध शायर)

राजेन्द्र नाथ रहबर का शुमार उर्दू के उन गिने चुने शायरों में होता है जिन के बारे में वाक़िई ये फ़ैसला करना दुशवार है कि उन की नज़्में ज़ियादा ख़ूबसूरत हैं या ग़ज़लें। वो निहायत पाकीज़ा, सच्चे और पुर–खुलूस अशआर तख़लीक़ करते हैं और तनक़ीद[1] की काली खुर्दरी कसौटी पर उन के अकसर अशआर अनमोल अशरफ़ियों की तरह दमकते और खनकते हैं। दरअसल उन की मासूम वा पाकीज़ा शायरी किसी गाती गुनगुनाती हुई नदी की लहरों पर बहते हुए उस नन्हे दिये की मानिन्द है जो किसी सुहागिन ने अपने रंग भरे हाथों से बसद–ख़ुलूस गंगा की गोद के हवाले किया हो।

रहबर की शायरी का सब से नुमायां वस्फ़ यह है कि वह रिवायती अंदाज़े–फ़िक्र से सीधे सपाट रास्तों पर नहीं चलती बल्कि क़दम क़दम रोक कर हमें दा'वते–नज़्ज़ारा देती है। कहीं 'अजमेर कौर' के पैकर[2] में ढल कर क़ारईन[3] से कोई सवाल करती है और कहीं गंगा में बहाए हुए ख़तों की आग किसी ग़ैरते–नाहीद[4] की याद दिलाती है, कहीं शबे–वस्ल[5] किसी की माला के मोती टूटते हैं तो दिल के आसमान पर कहकशां की तरह बिखर जाते हैं, कहीं 'गुफ्तगू' में शायर ख़ुद से हम–कलाम है और कहीं पूरी काइनात से।

राजेन्द्र नाथ रहबर ब–हैसियत शायर सिर्फ़ रंगा–रंग मोतियों के शायर नहीं बल्कि उन के दामन में कंकर भी हैं, चंद ऐसे नोकीले और निराले कंकर जिन की दिल नवाज़ चुभन पर मोतियों की आबो–ताब और उनका सारा लम्स न्योछावर किया जा सकता है।

रहबर चाहे शिमला में रहें चाहे चंडीगढ़ में या पठानकोट में, मैं ज़ाती तौर पर उन्हें हिन्दोस्तान गीर शुहरत का शायर तसलीम करता हूं और अदब के साथ उन्हें सलाम करता हूं।

चंडीगढ प्रेम वार बर्टनी

1. आलोचना 2. शक्ल 3. पाठक 4. जुहरा नामक सय्यारा (शुक्कर) को भी शर्मा देने वाली, अति सुन्दर 5. मिलन की रात

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सुरेश चन्द्र शौक़ शिमलवी

किताब का नाम (ज़ेबे–सुख़न) निहायत दिलकश और गैट–अप निहायत दीदा–ज़ेब[1] है और कलाम, वो तो मैं अज़ल[2] से आप का मद्दाह[3] रहा हूं। बहुत सी ग़ज़लें मेरे लिए नई हैं इस लिए आराम से मुतालआ[4] कर के दिली और रूहानी सुकून हासिल करूंगा।

बे–सबब ही उदास हो जाना
किस ने दिल के मिज़ाज को जाना

वो मिरा ढूंडना तुझे हर सू
वो तिरा इस जहां में खो जाना

घोला था ज़हर किस ने कोई न जानता था
तेग़ें[5] खिंची हुई थी इक शाम बस्तियों में

नतीजा कुछ न निकला उन को हाले–दिल सुनाने का
वो बल देते रहे आंचल को बल खाता रहा आंचल

शिकस्त खा के महब्बत में यूं उदास न हो
ये हार जीत से बेहतर है हारने वाले

जाने ऐसे कितने अशआर बासिरा–नवाज़[6] होंगे जो वो लज़्ज़त अता फ़रमाते हैं जिन के लिए दिलो–दिमाग़ तरसते हैं। ख़ुदा आप को और आप के फ़न को सलामत रक्खे ।

शिमला — सुरेश चन्द्र शौक़ शिमलवी

---

1. देखने लायक़ 2. अनादि काल 3. प्रशंसक 4. अध्ययन 5. तलवारें 6. दर्शनीय

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जनाब ईश्वर दत्त अंजुम

श्री राजेन्द्र नाथ रहबर मेरे सगे छोटे भाई हैं। उन की शायरी की तारीफ़ में कुछ कहना मेरा काम नहीं है किन्तु मैं उन के पाठकों का ध्यान इस बात की ओर अवश्य दिलाना चाहूंगा कि रहबर के कलाम की एक बड़ी ख़ूबी यह है कि उस में हिन्दोस्तानियत पाई जाती है। वह फ़ारसी और अरबी शायरी की तशबीहें[1] और इसतिआरे इस्तेमाल नहीं करते बल्कि हिन्दू देवमालाई गाथा श्रृंखला ही से अपना नाता जोड़ते हैं। यह एक ऐसी विशेषता है जो कम उर्दू शायरों के हिस्से में आई है। इस सम्बन्ध में पेश हैं श्री रहबर के कुछ शे'र :

तू कृष्ण ही ठहरा तो 'सुदामा' का भी कुछ कर
काम आते हैं मुशकिल में फ़क़त यार पुराने

जो पिता के हुक्म का पालन करें
अब कहां बेटे जहां में 'राम' से

सुब्ह सवेरे, नूर के तड़के ख़ुशबू सी हर जानिब फैली
फेरी वाले बाबा ने जब सन्त कबीर का दोहा गाया

दिल करता है दुनिया तज दें जंगल का रस्ता अपनाएँ
जैसे इक दिन गौतम बुद्ध ने जंगल का रस्ता अपनाया

वो था 'सुकरात' कि थी कृष्ण की 'मीरा' कोई
पी लिया ज़हर का छलका हुआ साग़र किस ने

नई दिल्ली

ईश्वर दत्त अंजुम

---

1. रूपक, लक्षण

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्री अजीत सिंह हसरत

आप के कलाम में 'मीर' की सी तर्ज़े–सुख़न और दर्द–मन्दी दिल को छू जाती है।

लिपट के जिस से तिरे दर्द–मन्द रो लेते
वही दरख़्त सरे–रहगुज़र नहीं आया

इन्सान के बाद दरख़्त को ही ये रुत्बा[1] हासिल है जिस के गले मिल कर रोया जा सकता है, बातें की जा सकती हैं, दिल का दर्द कहा जा सकता है। ऐसे बे–साख़्ता और मुराक़बा (समाधि, ध्यान मग्नता) के आलम में कहे गए शे'रों पर मुझ से अपने अश्क नहीं रोके जाते। मेरी आंखें भी बे–साख़्ता दाद देने लगती हैं। बस यही सच्ची शायरी की पहचान है। दो मिसरों में पूरी ख़ुदाई को बांधना आप के हिस्से में आया है

सुब्ह सवेरे, नूर के तड़के ख़ुशबू सी हर जानिब फैली
फेरी वाले बाबा ने जब संत कबीर का दोहा गाया

ऐन मुम्किन है कि फेरी वाले बाबा का ज़िक्र उर्दू शायरी में पहली बार हुआ हो। इस शे'र को पढ़ कर दिल का कँवल खिल उठा।

शाम ढले ये किस जोगिन ने कानों में रस घोल दिया है
मन्दिर के आंगन में किस ने 'मीरा' के भजनों को गाया

सुब्ह फेरी वाले बाबा और शाम ढले किसी जोगिन का कानों में रस घोलना ऐन इबादत हुई।

आरिफ़ाना रंग में रंगे हुए ये दोनों शे'र ख़ूब हैं इसी लिए मैने जब भी आप का ज़िक्र किया वलियों[2] के से एहतिराम[3] के साथ आप का नाम लिया है।

अजीत सिंह हसरत

लुधियाना

1. ऊँचा मरतबा 2. ऐसा इन्सान जो खुदा के क़रीब हो 3. सम्मान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्री मनोहर कपूर 'बेख़ुद'

अच्छे शे'रों का सफर शताब्दियों तक जारी रहता है। प्रस्तुत हैं श्री राजेन्द्र नाथ 'रहबर' के कुछ शे'र जो निरन्तर दिलों के द्वार पर दस्तकें देते रहेंगे :

फुटपाथ का बिस्तर है तो है ईंट का तकिया
ये नींद के यूं कौन मज़े लूट रहा है

कहीं ज़मीं से तअल्लुक़ न ख़त्म हो जाए
बहुत न ख़ुद को हवा में उछालिए साहिब

तू कृष्ण ही ठहरा तो 'सुदामा' का भी कुछ कर
काम आते हैं मुश्किल में फ़क़त यार पुराने

जब भी हमें मिलो ज़रा हंस कर मिला करो
दें'गे फ़क़ीर तुम को दुआएँ नई नई

अभी न गुलशने–उर्दू को बे–चिराग़ कहो
खिले हुए हैं अभी चन्द फूल शाखों पर

ज़िन्दगी अब तेरे लब से वो भी ग़ाइब हो गयी
रक़्स करती थी जो कल तक इक हंसी बीमार सी

इन शे'रों के अतिरिक्त श्री राजेन्द्र नाथ रहबर की अमर नज़्म 'तेरे ख़ुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे, तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूं' शताब्दियों तक फ़ज़ाओं में गूंजती रहेगी। श्री रहबर की इस नज़्म को गंगा मैया के प्रसाद के रूप में अपार ख्याति प्राप्त हुई है।

कोलम्बस (अमरीका) — मनोहर कपूर 'बेख़ुद'

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कुछ अपने बारे में

शायर को ख़ुदा का बेटा और शायरी को पैग़म्बरी कहा गया है ग़ज़ल को उर्दू शायरी की आबरू और ऐशिया की सब से लोकप्रिय सिन्फ़े–सुख़न तसलीम किया गया है। सीमाव अकबराबादी लिखते हैं 'नज़्म आज़ाद हो या पाबंद, ग़ज़ल का कभी मुक़ाबिला नहीं कर सकती' किन्तु देखा गया है कि कभी कभी कोई नज़्म भी मक़बूल हो जाती है जैसे साहिर लुधियानवी की 'ताजमहल', और अख़्तर शीरानी की नज़्म 'ओ देस से आने वाले बता, क्या अब भी वहां के पनघट पर, पिन्हारियां पानी भरती हैं' और उनकी एक और नज़्म 'बस्ती की लड़कियों में बदनाम हो रहा हूं, सलमा से दिल लगा कर' अख़्तर शीरानी नज़्म के शायर थे और लोगों को उन की नई नज़्म का इन्तिज़ार रहता था.। ख़ुदा का हुक्म, मुक़द्धर की मौज, मेरी एक नज़्म को भी ख़्याति प्राप्त हुई है जिस का शीर्षक है 'तेरे ख़ुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे'

शायरी न क़दीम होती है न जदीद। शायरी सिर्फ़ दो प्रकार की होती है, अच्छी और बुरी शायरी। अच्छी शायरी दिल से दिलों में उतर जाने का हुक्म रखती है। अच्छा शे'र ध्यान मग्नता के से आलम में कहा जाता है और मुद्दतों तक दिलों की फ़ज़ा को महकाता रहता है। अब कुछ अपने बारे में !

मेरा जनम क़स्बा शकरगढ़ में हुआ जो इसी नाम की एक तहसील का सद्र मक़ाम था। मेरे पिता पं. त्रिलोक चन्द वहां वकालत करते थे। 1947 ई. के बटवारा में ज़िला गुरदासपुर (पंजाब) की यह तहसील पाकिस्तान को मिल गई तो दूसरे लाखों परिवारों की तरह हमारा परिवार भी आवारा–ए–वतन हुआ और मैं अपने माता पिता और परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ पठानकोट आ गया। मेरे पिता यहां वकालत करने लगे और हम लोग यहीं के हो गये।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मैं ने हिन्दू कालिज, अमृतसर से बी. ए. ख़ालसा कालिज़, अमृतसर से एम. ए. (अर्थशास्त्र) और पंजाब यूनिवर्सिटी के डिपार्टमैंट आफ़ लॉज़ से एलएल.बी. की परीक्षाएँ पास कीं।

शायरी का शौक़ लड़कपन ही से दामनगीर हो गया था और यह ज़िन्दगी के हर दौर में मेरा हमसफ़र रहा। शायरी का फ़न मैं ने पंजाब के उस्ताद उर्दू शायर पं. रतन पंडोरवी से सीखा जो मशहूर शायर अमीर मीनाई के चहेते शार्गिद जनाब 'दिल' शाहजहानपुरी के शार्गिद थे। रतन पंडोरवी साहिब शिव भक्त थे और श्री हरगोबिन्दपुर (तहसील बटाला, ज़िला गुरदासपुर) के एक शिव मन्दिर में रहते थे जो दरिया ब्यास के किनारे स्थित था। दरिया का किनारा होने के कारण वहां दूर दूर तक बेला उगा रहता था। वीरानी का यह आलम था कि सुब्ह के वक्त जंगली मोर शिव मन्दिर की मंडेरों पर आ बैठते। इसी शिव मन्दिर में मैं ने अकसर उस्ताद साहिब के क़दमों में बैठकर शायरी की शिक्षा प्राप्त की। मेरी प्रकाशित पुस्तकों का व्यौरा इस प्रकार है।

(1) 'तेरे ख़ुश्बू में बसे ख़त' :– काव्य संग्रह देवनागरी लिपि में। यह पाठकों के हाथों में है।

(2) ज़ेबे–सुख़न :– काव्य संग्रह उर्दू लिपि में। 1997 ई. में दर्पन पब्लिकेशन्ज़ पठानकोट के तत्वावधान में छपी। पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने इसे साल 1997 की बैस्ट प्रिंटिड उर्दू बुक क़रार देते हुए इस पर अवार्ड दिया।

(3) '....... और शाम ढल गई' :– काव्य संग्रह उर्दू लिपि में। 1978 में अंजुमन–तरक़्क़ी–उर्दू (हिन्द) शाख़ पठानकोट के तत्वावधान में छपी। बिहार उर्दू अकाडमी, पटना की ओर से इस पर अवार्ड दिया गया।

(4) 'मल्हार' :– काव्य संग्रह देवनागरी लिपि में! 1975 ई. में शिलालेख प्रकाशन चण्डीगढ़ ने प्रकाशित की।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(5) 'कलस' :– काव्य संग्रह उर्दू लिपि में! 1962 में बज़्में–अदब शिमला ने प्रकाशित की। इस का दूसरा संस्करण 1964 में छपा।

(6) 'आग़ोश–ए–गुल' :–हिमाचल प्रदेश के 22 उर्दू शायरों का प्रसंग! उर्दू लिपी में 1961ई. में बज़्मे अदब शिमला ने छापी।

तबीअतें क़ुदरत की ओर से बदीअत होती हैं, मैंने अपने बेटे का नाम दर्पन पठानकोटी इस ख़्याल से रक्खा था कि यदि वह शायरी करेगा तो उस का जनम नाम ही उसका तख़ल्लुस होगा। वह शायर तो नहीं बना लेकिन सुख़न शनास ज़रूर बन गया और मिर्ज़ा ग़ालिब उस के मनपसन्द शायर हैं।

इस काव्य संग्रह के लिए मशहूर शायर जनाब अली सरदार जा'फ़री, जनाब वाली आसी, डा. अख़्तर बस्तवी और माहिरे ग़ालबियात श्री काली दास गुप्ता 'रिज़ा ने अपनी अपनी राय भेजी थी किन्तु इस काव्य संग्रह के प्रकाशित होने से पहले ही यह शायर इस जहाने फ़ानी से हमेशा के लिए रुख़सत हो गए। काश ये काव्य संग्रह उन के जीवन काल में छपता। बहरहाल उन की राय बड़े अदब और एह्तिराम के साथ इस काव्य संग्रह की ज़ीनत है। मैं ने इन सब शायरों के नाम के साथ स्वर्गीय नहीं लिखा क्योंकि यह सब उर्दू शायरी के ज़िन्दा और ताबिन्दा नाम हैं और उर्दू शायरी के इतिहास का हिस्सा हैं।

आख़िर में यही कहना चाहूंगा कि यदि मेरे पाठकों को इस काव्य संग्रह में से एक शे'र भी पसन्द आता है तो मैं ख़ुद को कामयाब समझूंगा क्योंकि बक़ौल जनाब शाहिद कबीर

चलने की तमन्ना थी पहुँचने की नहीं थी
अब डूब भी जाऊँ तो मुझे पार समझना

धन्यवाद और ख़ुदा हाफ़िज़!

राजेन्द्र नाथ रहबर
पठानकोट

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

एक 'रहबर'* की सर पे ओट रहे
नग़मगी में पठानकोट रहे

पूरन एहसान

* राजेन्द्र नाथ रहबर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ये कैसी चारागरी[1] है इलाज कैसा है
पिला के ज़ह्र कहे है मिज़ाज कैसा है

ये मानता हूं तिरा कल था ताबनाक[2] बहुत
मगर ये ग़ौर भी कर तेरा आज कैसा है

जो कोई खाता है करता है ज़ह्र–अफ़शानी[3]
हमारे अह्द[4] का यारो अनाज कैसा है

बदल के भेस महल से निकल कभी शब[5] को
जो देखना है तिरा राम राज कैसा है

मैं सोचता हूं उन्हें क्या जवाब दूं 'रहबर'
वो पूछते हैं तुम्हारा मिज़ाज कैसा है

1. उपचार 2. उज्जवल 3. विष उगलना
4 युग 5 रात्रि

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

क्या करे एतिबार अब कोई
रूठ जाये न जाने कब कोई

वो तो ख़ुशबू का एक झोंका था
उस को लाये कहां से अब कोई

क्यों उसे हम इधर उधर ढूंडें
दिल ही में बस रहा है जब कोई

वो हसीं[1] कौन था, कहां का था
पूछ लेता हसब–नसब[2] कोई

प्यार से हमको कह के दीवाना
दे गया इक नया लक़ब[3] कोई

आज दिन क़हक़हों में गुज़रा है
रो के काटेगा आज शब[4] कोई

उस से क्या अपनी दोस्ती 'रहबर'
वो समझता है ख़ुद को रब कोई

OO

1. रूपवान 2. वंश, अता पता
3. पदवी, उपाधि, ख़िताब 4. रात्रि

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बस चन्द ही दिनों के थे डेरे चले गए
ख़ाना–बदोश लोग सवेरे चले गए

हाथों में अपने जाल सुनहरी लिए हुए
गहरे समुन्दरों के मछेरे चले गए

कुछ मैकदे की सम्त गए झूमते हुए
कुछ मनचले फ़क़ीर के डेरे चले गए

पहले से अब कहां वो मुहब्बत के रोज़–ओ–शब[1]
शामें चली गयीं वो सवेरे चले गए

ए दोस्त जिन से हम को तवक़्क़ो गुलों की थी
वो रास्तों में ख़ार[2] बिखेरे चले गए

जो लूटते थे दिन का स्कूं[3] रात का क़रार
किस देस वो हसीन लुटेरे चले गए

---

1. दिन रात 2. कांटे 3. चैन, शान्ति

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शाम कठिन है रात कड़ी है
आओ कि ये आने की घड़ी है

वो है अपने हुस्न में यकता[1]
देख कहां तक़्दीर लड़ी है

मैं तुम को ही सोच रहा था
आओ तुम्हारी उम्र बड़ी है

काश कुशादा[2] दिल भी रखता
जिस घर की दहलीज़[3] बड़ी है

फिर बिछड़े दो चाहने वाले
फिर ढोलक पर थाप पड़ी है

किस ने ये आंचल लहराया
जंगल जंगल धनक पड़ी है

वो पहुंचा इमदादी बन कर
जब जब हम पर भीड़ पड़ी है

शहर में है इक ऐसी हस्ती
जिस को मिरी तकलीफ़ बड़ी है

हंस ले 'रहबर' वो आए हैं
रोने को तो उम्र पड़ी है

1. अद्वितीय, 2. विशाल, 3. चौखट,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

करते रहेंगे हम भी ख़ताएं[1] नई नई
तजवीज़[2] तुम भी करना सज़ाएं नई नई

जब भी हमें मिलो ज़रा हंस कर मिला करो
देंगे फ़क़ीर तुम को दुआएं नई नई

दुनिया को हम ने गीत सुनाये है प्यार के
दुनिया ने हम को दी हैं सज़ाएं नई नई

ये जोगिया लिबास, ये गेसू[3] खुले हुए
सीखीं कहां से तुम ने अदाएं[4] नई नई

तुम आ गये बहार सी हर शय पे छा गई
महसूस हो रही हैं फ़ज़ाएं[5] नई नई

आंखों में फिर रहे हैं मनाज़िर[6] नए नए
कानों में गूंजती हैं सदाएं[7] नई नई

गुम हो न जायें मंज़िलें गर्दो–ग़ुबार[8] में
रहबर नये नये हैं दिशाएं नई नई

जब शायरी हुई है वदीअत[9] हमें तो फिर
गज़लें जहां को क्यों न सुनाएं नई नई

'रहबर' कुदूरतों[10] को दिलों से निकाल कर
हम बस्तियां वफ़ा की बसाएं नई नई

OO

1. भूलचूक, 2. प्रस्तावित, 3. केश 4. नाज़ अन्दाज़ 5. वातावरण
6. दृश्य 7. आवाजें 8. धूलि 9. धरोहर 10. रंजिशों

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुक़ाबिल से कभी हंस कर गुज़र जा
मिरे दामन को भी फूलों से भर जा

सफ़र को छोड़ कश्ती से उतर जा
किसी तन्हा जज़ीरे पर ठहर जा

हथेली पर लिये सर को गुज़र जा
जो जीने की तमन्ना है तो मर जा

नई मंज़िल के राही, जाते जाते
सब अपने ग़म हमारे नाम कर जा

ये बस्ती है हसीनों की, यहां से
किसी आवारा बादल सा गुज़र जा

बरस जा दिल के आंगन में किसी दिन
ये धरती भी कभी सेराब[1] कर जा

तू ख़ुशबू है तो फिर क्यों है गुरेज़ां[2]
बिखरना ही मुक़द्दर है बिखर जा

ज़माना देखता रह जाये तुझ को
जहां में कोई ऐसा काम कर जा

सुना है आयेंगे वो तुझ से मिलने
परेशां बाल कंघी कर, सँवर जा

इधर से आज वो गुज़रेंगे 'रहबर'
तू ख़ुशबू बन के रस्ते में बिखर जा

1. सिंचित 2. बच कर निकलना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बे–सबब ही उदास हो जाना
किस ने दिल के मिज़ाज को जाना

वो मिरा ढूंडना तुझे हर सू[1]
वो तिरा इस जहां में खो जाना

आंसुओ एक दिन रवां हो कर
आसियों[2] के गुनाह धो जाना

अह्‌दे–हाज़िर[3] के नेक इन्सानो
बीज तुम नेकियों के बो जाना

और क्या काम है समुन्दर का
आस की कश्तियां डुबो जाना

ग़म की फुंकारती हुई नागिन
एक शब[4] मेरे साथ सो जाना

आ के ऐ यादे–यार निश्तर[5] सा
रगे–एहसास[6] में चुभो जाना

हम को आता है ये भी फ़न 'रहबर'
ख़ार[7] से भी लिपट के सो जाना

---

1. दिशा 2. गुनहगार लोग 3. वर्तमान युग 4. रात 5. ज़ख़्म चीरने का औज़ार 6. एहसास की रग 7. कांटा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कल तक था नाम जिनका बदनाम बस्तियों में
चलते हैं आज उन के एहकाम[1] बस्तियों में

हर सू मचा हुआ है कुहराम[2] बस्तियों में
तहज़ीब[3] हो न जाये नीलाम बस्तियों में

घोला था ज़हर किस ने कोई न जानता था
तेग़ें[4] खिंची हुई थीं इक शाम बस्तियों में

जिन के नफ़स नफ़स[5] में तख़रीब[6] बस रही है
ऐसे हलाकुओं का क्या काम बस्तियों में

कोई न हो शनासा[7] कोई न जानता हो
आओ कि जा बसें हम बे–नाम बस्तियों में

सूने पड़े हैं मन्दिर, वीरान मस्जिदें हैं
धूमें मची हैं क्या क्या बदनाम बस्तियों में

किस किस का आज ईमां देखें कि डोलता है
निकले हैं बन सँवर कर असनाम[8] बस्तियों में

सब शोरिशें[9] हों 'रहबर' नापैद[10] बस्तियों से
अमन–ओ–अमां का फैले पैग़ाम बस्तियों में

OO

1. हुकम 2. हाहाकार 3. सभ्यता 4. तलवारें 5. सांस 6. विनाश
7. परिचित 8. माशूक़ 9. फसाद 10. ग़ाइब

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुन्तज़िर[1] बैठे हुए हैं शाम से
और हम वाक़िफ़ भी हैं अंजाम से

मिल गये जब तुम तो कैसा काम फिर
घर से हम निकले थे यूं तो काम से

आ मिरी गहराइयों में डूब जा
कह रही है ये सुराही जाम से

भर गया कांटों से दामन प्यार में
दिल मिरा वाक़िफ़ न था अन्जाम से

जो पिता के हुक्म का पालन करें
अब कहां बेटे जहां में 'राम' से

ले गये वो इक नज़र में नक़दे–दिल[2]
लुटने वाले लुट गये आराम से

रफ़्ता रफ़्ता[3] सुब्ह तक सब बुझ गये
वो दिये जो जल उठे थे शाम से

ये भी है उस की मुरव्वत[4] की अदा
पी गया वो आज मेरे जाम से[5]

क्यों न हों मक़बूल[6] 'रहबर' मेरे शे'र
लिख रहा हूं हट के राहे–आम से

---

1. प्रतीक्षा में 2. दिल की दौलत 3. आहिस्ता आहिस्ता
4. प्यार 5. मेरे जाम में से 6. स्वीकृत

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

इक आग तन बदन में लगाती है चांदनी
हां दिल जलों को और जलाती है चांदनी

नग़मे महब्बतों के सुनाती है चांदनी
जादू खुली छतों पे जगाती है चांदनी

आती है दिल को एक शबे–दिलनशीं[1] की याद
जब साहिलों पे धूम मचाती है चांदनी

पुर–दर्द लय में पिछले पहर इक उदास गीत
महरूमियों[2] के साज़ पे गाती है चांदनी

सैरे–चमन[3] को तुम जो निकलते हो रात को
फूलों से रास्तों को सजाती है चांदनी

लेती है तेरी ज़ुल्फ़ से बादे–सबा[4] महक
तेरे बदन से रूप चुराती है चांदनी

यकसां[5] हैं चांदनी की नज़र में गदा–ओ–शाह[6]
दर पर गदा–ओ–शाह के जाती है चांदनी

पड़ती है ये दिलों पे कभी तो फुहार सी
'रहबर' कभी दिलों को जलाती है चांदनी

1. प्यारी रात 2. निराशाओं 3. उपवन की सैर
4. प्रभात समीर 5. बराबर 6. भिखमंगा और अमीर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शम्अ जलती है ता–सहर[1] तन्हा
हम को जलना है उम्र भर तन्हा[2]

हो लिया साथ एक रस्ता भी
चल रही थी कोई डगर तन्हा

वाए[3] मजबूरियां महब्बत की
तुम उधर और हम इधर तन्हा

तेरे जोगी तलाश में तेरी
फिर रहे हैं नगर नगर तन्हा

कोई साथी नहीं किसी का यहां
राहे–हस्ती से तू गुज़र तन्हा

सारे चालाक लोग बच निकले
तुह्मत[4] आई तो मेरे सर तन्हा

1. सुब्ह तक 2. अकेले 3. हाए 4. मिथ्यारोप

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वो जनम से नहीं है पागल, जो
बैठा रहता है मोड़ पर तन्हा

बाम–ओ–दर[1] इस क़दर उदास थे कब
ज़िन्दगी कब थी इस क़दर तन्हा

क़हक़हे उस में गूंजते थे कभी
देखते हो जो एक घर तन्हा

उड़ गए यक–बयक सभी पंछी
रह गया पेड़ सर–बसर तन्हा

कौन है किस के वास्ते रहबर
फिरते रहते हो रात भर तन्हा

ꝏ

1. अट्टालिका, अटारी और द्वार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तय करें मिल के हम तुम ब'हम[1] रास्ता
बढ़ के ले गा हमारे क़दम[2] रास्ता

कौन गुज़रा है आहों में डूबा हुआ
हो गया किस के अश्कों से नम[3] रास्ता

लम्से–अव्वल[4] तिरे पाँव का जब मिला
हो गया और भी मुहतरम[5] रास्ता

राहे–उल्फ़त के पुर–जोश राही हैं हम
चूमता है हमारे क़दम रास्ता

ख़ुद–बख़ुद आयेंगी मंज़िलें सामने
ख़ुद बतायेगा नक़्शे–क़दम[6] रास्ता

हम भी पहुंचें सरे–मंज़िले–सरख़ुशी[7]
दे अगर हम को शामे–अलम[8] रास्ता

ये सफ़र, ये हसीं शाम ये घाटियां
कितना दिलकश[9] है पुर–पेचो–ख़म[10] रास्ता

बैठ जाना न थक कर मिरे हम–सफ़र[11]
रह गया अब तो बस दो क़दम रास्ता

क्यों न 'रहबर' चलूं मंज़िलों मंज़िलों
मेरी तक़दीर में है रक़म[12] रास्ता

1 परस्पर 2. इज्जत से पैर छूना 3. गीला 4 प्रथम स्पर्श 5. पूजनीय 6 पदचिन्ह 7. खुशी की मंजिल 8. दुखों भरी शाम 9. सुन्दर 10. टेढ़ा मेढ़ा 11. साथी 12. लिखा हुआ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

किस ने अपना दामन[1] झटका किस ने अपना हाथ छुड़ाया
बस्ती बस्ती, महफ़िल महफ़िल हम ने ख़ुद को तन्हा पाया

दिल करता है दुनिया तज दें जंगल का रस्ता अपनाएं
जैसे इक दिन गौतम बुद्ध ने जंगल का रस्ता अपनाया

सुब्ह सवेरे, नूर के तड़के ख़ुशबू सी हर जानिब फैली
फेरी वाले बाबा ने जब सन्त कबीर का दोहा गाया

शाम ढले ये किस जोगिन ने कानों में रस घोल दिया है
मंदिर के आंगन में किस ने मीरां के भजनों को गाया

मुझ से बिछड़ कर तेरे दिल पर क्या बीती मालूम नहीं है
तुझ से बिछड़ कर मैं ने बरसों अश्क बहाये सोग मनाया

बैठे हैं हम आस लगाये पलकों पर कुछ दीप जलाये
बीत गयीं कितनी ही सदियां चाहत का सन्देश न आया

अपने इक इक शे'र में रहबर तू ने दर्द की फ़स्लें बो दीं
इतना सोज़[2] कहां से आया इतना दर्द कहां से पाया

1. पल्लू 2. दर्द

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जिस्मो–जां घायल, परे–परवाज़[1] हैं टूटे हुए
हम हैं यारो एक पंछी डार से बिछड़े हुए

आप अगर चाहें तो कुछ कांटे भी इस में डाल दें
मेरे दामन में पड़े हैं फूल मुरझाये हुए

आज उस को देख कर आंखें मुनव्वर[2] हो गयीं
हो गई थी इक सदी[3] जिस शख़्स को देखे हुए

फिर नज़र आती है नालां[4] मुझ से मेरी हर ख़ुशी
सामने से फिर कोई गुज़रा है मुंह फेरे हुए

तुम अगर छू लो तबस्सुम–रेज़[5] होंटों से इसे
देर ही लगती है क्या कांटे को गुल[6] होते हुए

वस्ल की शब[7] क्या गिरी माला तुम्हारी टूट कर
जिस क़दर मोती थे वो सब अर्श[8] के तारे हुए

क्या जचे 'रहबर' ग़ज़ल–गोई[9] किसी की अब हमें
हम ने उन आंखों को देखा है ग़ज़ल कहते हुए

---

1. उड़ने वाले पंख 2. प्रकाश मान 3. शताब्दी 4. रूदित 5. मुस्कुराहटें बखेरते हुए
6. फूल 7. मिलन की रात 8. आकाश 9 ग़ज़ल कहने की कला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अपना डेरा फ़क़ीर छोड़ गये
ख़ुशबुओं की लकीर छोड़ गये

आइना देखते तो किस मुंह से
आइना बे–ज़मीर[1] छोड़ गये

अह्ले–दुनिया की रहबरी[2] के लिये
अपने दोहे कबीर छोड़ गये

रूह में जा के हो गये पैवस्त[3]
तन्ज़[4] के तुम जो तीर छोड़ गये

ईद फ़ाक़ा–कशों[5] की हो जाये
जूठे टुकड़े अमीर छोड़ गये

उस के हम पासदार[6] हैं 'रहबर'
वो विरासत[7] जो 'मीर'[8] छोड़ गये

OO

---

1. अंतः करण रहित लोग 2. नेतृत्व 3. प्रविष्ट 4. व्यंग्य 5. भूख के मारे
6. रखवाले 7. उत्तराधिकार 8. प्रसिद्ध उर्दू शाइर मीर तक़ी मीर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ये भीगी शाम है इस को न टालिए साहिब
जो जेब में है रक़म तो निकालिए साहिब

जो चखना चाहें कभी आप ज़ाइक़ा[1] विष का
तो आस्तीं में कोई सांप पालिए[2] साहिब

कहीं ज़मीं से तअल्लुक़ न ख़त्म हो जाये
बहुत न ख़ुद को हवा में उछालिए साहिब

जबीन–ए–वक़्त[3] पे उभरीं हज़ारहा शिकनें
कभी जो भूले से हम मुस्करा लिए साहिब

मुरव्वतों[4] की नई बस्तियां बसानी हैं
कदूरतों[5] को दिलों से निकालिए साहिब

गुल–ए–मुराद[6] से भर दो हमारे दामन को
हमें न वादा–ए–फ़र्दा[7] पे टालिए साहिब

जो रौशनी के अमीं[8] हो तो इस अंधेरे से
किरण उमीद की कोई निकालिए साहिब

वतन की बात करें, ग़म–ज़दों[9] का ज़िक्र करें
महब्बतों के बहुत गीत गा लिए साहिब

तलाशे–गौहरे–नायाब[10] है तो 'रहबर' जी
समुन्दरों की तहों को खंगालिए साहिब

1. स्वाद 2. कोट, कुर्ते आदि की बांह में सांप पालना अर्थात दोस्ती के पर्दे में दुश्मनी करने वाले को साथ रखना 3. समय के माथे पर 4. लिहाज, महब्बत 5. रंजिशें 6. इच्छापूर्ति का फूल 7. आने वाले कल का वादा 8. अमानतदार 9. ग़म के मारे हुए 10. अप्राप्य [illegible]

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अंजाम से वाक़िफ़ है मगर झूम रहा है
वो फूल महब्बत का दिलों में जो खिला है

वो बाब[1] मिरे अह्द[2] के इन्सां ने लिखा है
तारीख़ के सफ़्हों[3] ने जो देखा न सुना है

सुनने को जिसे गोश–बर–आवाज़[4] है दुनिया
वो गीत अभी साज़ के पर्दों में छुपा है

इक उम्र गुज़ारी है सुलगते हुए मैं ने
मैं ऐसा दिया हूं जो जला है न बुझा है

फुट–पाथ का बिस्तर है तो है ईंट का तकिया
ये नींद के यूं कौन मज़े लूट रहा है

1. अध्याय 2. युग 3. इतिहास के पन्ने
4. सुनने के लिए सरापा कान हो जाना ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ठहरे हुए पानी की तहें चौंक पड़ी हैं
कंकर कोई यादों के सरोवर में गिरा है

आईना–ए–दिल में तू कभी देख उसे भी
इक और भी चिहरा तिरे चिहरे में छुपा है

इस राह से गुज़रो तो कभी तुम को सुनाऊँ
इक गीत तुम्हारे लिये अश्कों से लिखा है

ख़ुशियां हैं यहां दोस्तो महरूमे–तब्स्सुम[1]
मा'मूरा–ए–एहसास[2] में ग़म नग़मा–सरा[3] है

करता है इसे संग[4] पे तहरीर[5] अबस[6] तू
ऐ दोस्त तिरा नाम तो पानी पे लिखा है

1. मुस्कुराहट से वंचित 2. एहसास की बस्ती 3. गीत गाना
4. पत्थर 5. लिखना 6. व्यर्थ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुदावा[1] दर्दे–दिल का ऐ मसीहा[2] छोड़ देना
हमारे हाल पर हम को ख़ुदारा[3] छोड़ देना

तुम्हीं ईमान से कह दो कहां तक है मुनासिब
किसी को यूं भरी दुनिया में तन्हा छोड़ देना

यही मस्लक[4] था जब तुम साथ होते थे हमारे
जहां से सब गुज़रते हों वो रस्ता छोड़ देना

ज़माने भर की ख़ुशियां अपने दामन में समोना
हमारे वास्ते ग़म का ख़ज़ाना छोड़ देना

हथेली पर लिए सर को निकलना घर से यारो
जो जीना है तो जीने की तमन्ना[5] छोड़ देना

गुलों से खेलना तुम ये दुआ है और हम को
किसी जलते हुए सहरा[6] में तन्हा छोड़ देना

जो दिल में पार उतरने की तमन्ना है तो 'रहबर'
किसी तूफ़ान में अपना सफ़ीना[7] छोड़ देना

1. उपचार 2. हज़रत ईसा, मुर्दे को जीवित कर देने वाला 3. प्रमात्मा के लिए
4. नियम 5. इच्छा 6. मरूस्थल, निर्जल 7. नाव

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

महताब[1] नहीं निकला सितारे नहीं निकले
देते जो शबे–ग़म[2] में सहारे नहीं निकले

कल रात निहत्ता कोई देता था सदाएं[3]
हम घर से मगर ख़ौफ़[4] के मारे नहीं निकले

क्या छोड़ के बस्ती को गया तू कि तिरे बाद
फिर घर से तिरे हिज्र[5] के मारे नहीं निकले

बैठे रहो कुछ देर अभी और मुक़ाबिल[6]
अरमान अभी दिल के हमारे नहीं निकले

निकली तो हैं सज धज के तिरी याद की परियां
ख़ाबों के मगर राज दुलारे नहीं निकले

कब अह्ले–वफ़ा[7] जान की बाज़ी नहीं हारे
कब इश्क़ में जानों के ख़सारे[8] नहीं निकले

अंदाज़ कोई डूबने के सीखे तो हम से
हम डूब के दरिया के किनारे नहीं निकले

वो लोग कि थे जिन पे भरोसे हमें क्या क्या
देखा तो वही लोग हमारे नहीं निकले

अशआर[9] में दफ़तर है मआनी का[10] भी 'रहबर'
हम लफ़्ज़ों[11] ही के महज़[12] सहारे नहीं निकले

OO

1. चांद 2. ग़मों भरी रात 3. आवाज़ें 4. डर 5. वियोग 6. सामने 7. वफ़ा करने वाले 8. घाटे 9. शेर का बहुवचन 10. शब्दों, जज़बों और अर्थ का वृत्तांन्त 11. शब्दों 12. केवल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सर को वो आस्तां[1] मिले न मिले
ख़ाक को आस्मां मिले न मिले

आओ खिल जायें चांदनी की तरह
फिर ये मौसम जवां मिले न मिले

दिल को होने दो हम–कलामे–दिल[2]
फिर दिलों को ज़बां मिले न मिले

आज की सुहबतें[3] ग़नीमत[4] जान
कल हमारा निशां मिले न मिले

कह ही दूं दिल का मुद्दा उन से
वक़्त फिर मह्‌रबां मिले न मिले

चल के 'रहबर' से कुछ कलाम सुनें
फिर वो जादू–बयां[5] मिले न मिले

---

1. चौखट 2. दिल के साथ दिल की वार्तालाप 3. संगति, साथ
4. क़द्र के क़ाबिल 5. जिस के कलाम में जादू की सी तासीर हो

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बरसती आग से कुछ कम नहीं बरसात सावन की
जला कर ख़ाक कर देती है दिल को रात सावन की

उठी हैं काली काली बदलियां क्या तुम न आओगे
गुज़र जायेगी क्या तन्हा[1] भरी बरसात सावन की

हमारी रात यूं कटती है सावन के महीने में
इधर बरसात अश्कों की, उधर बरसात सावन की

किसी की याद आई है लिये अश्कों की तुग़यानी[2]
मिली है झोलियां भर कर हमें सौग़ात सावन की

डगर सुन्सान, बिजली की कड़क, पुर–हौल तारीकी[3]
मुसाफ़िर राह से ना–आशना[4], बरसात सावन की

तुम्हारे मुन्तज़िर[5] रहते हैं सावन के हसीं झूले
किया करती है याद अकसर तुम्हें बरसात सावन की

तही–दस्ती का आलम[6], जामे–मय, साक़ी न पैमाना
ये किस ने छेड़ दी ऐसे में 'रहबर' बात सावन की

1. अकेले 2. बाढ़ 3. भयंकर अंधेरा 4. अनजान
5. प्रतीक्षक 6. निर्धनता की दशा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

नसीमे–सुब्ह[1] का झोंका इधर नहीं आया
जो देता दिल को दिलों की ख़बर नहीं आया

लिपट के जिस से तिरे दर्द–मंद रो लेते
वहीं दरख़्त सरे–रहगुज़र[2] नहीं आया

भरोसा इतना मुझे उस की दोस्ती का था
कि उस के हाथ का ख़ंजर[3] नज़र नहीं आया

बस एक बार झलक उसकी हम ने देखी थी
वो उस के बाद मुकर्रर[4] नज़र नहीं आया

अलख जगाते जहां, हम जहां सदा[5] करते
बहुत तलाश थी जिस की वो दर[6] नहीं आया

रहे–अदम[7] के मुसाफ़िर तिरा ख़ुदा–हाफ़िज़
कि इस सफ़र से कोई लौट कर नहीं आया

1. सुब्ह की ठण्डी खुशगवार हवा 2. रास्ते में 3. कटार 4. पुनः
5. (फ़क़ीर के मांगने की) आवाज़ 6. द्वार 7. परलोक की राह

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

महब्बत चार दिन की है अदावत[1] चार दिन की है
ज़माने की हक़ीक़त दर–हक़ीक़त[2] चार दिन की है

बनाऐ हैं मकीनों[3] ने मकां किस शान–ओ–शौकत से
मगर उन में ठहरने की इजाज़त चार दिन की है

जो सैरे–गुलशने–हस्ती[4] को आये हो तो सुन रक्खो
कि सैरे–गुलशने–हस्ती की मुहलत चार दिन की है

अभी से किस तरह मैं अर्ज़[5] दिल का मुद्दा[6] कर दूं
अभी उन से मिरी साहिब–सलामत[7] चार दिन की है

हर इक ताज़ा मुसीबत पर ये कह कर मुस्कराता हूं
ये आफ़त चार दिन की, इस की शिद्दत[8] चार दिन की है

रफ़ीक़ों[9] की रफ़ीक़ाना अदा है दिल–नशीं[10] लेकिन
ये महफ़िल चार दिन की है ये सुहबत[11] चार दिन की है

हवाऐ–ज़र[12] में ऐ अपनी हक़ीक़त भूलने वाले
ये हशमत[13] चार दिन की, शान–ओ–शौकत चार दिन की है

न देते दिल न भरते दम महब्बत का कभी 'रहबर'
अगर ये जानते उन की महब्बत चार दिन की है

---

1. शत्रुता 2. वास्तव में 3. मकान निवासी 4. संसार रूपी बाटिका 5. निवेदन 6. उद्देश्य
7. जान पहचान 8. तीव्रता 9. मित्र, सहचर 10. दिल में उतर जाने वाली
11. संगति 12. दौलत के नशे में 13. वैभव

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जलवों की अरज़ानी[1] कर दो
रोज़–ओ–शब नूरानी कर दो

चिहरे से आंचल को हटा कर
चांद को पानी पानी कर दो

छू कर अपने हाथ से मुझ को
फ़ानी से लाफ़ानी[2] कर दो

बख़्श दो सुब्हों को ताबानी
शामों को रूहानी कर दो

बेसुधा जोड़े नाच रहे हैं
रक़्स[3] की लय तूफ़ानी कर दो

गुल करके इन रोशनयों को
कुछ लम्हे[4] नूरानी कर दो

उस महफ़िल में अर्ज़ किसी दिन
अपनी राम कहानी कर दो

हिज्र[5] में जीने वालों पर अब
वस्ल[6] को भी इमकानी[7] कर दो

बज़्मे–सुख़न[8] में तुम भी 'रहबर'
कुछ गौहर–अफ़शानी[9] कर दो

1. दर्शनाभिलाषियों को दर्शन देने की प्रतिक्रिया तेज़ कर दो 2. नश्वर से अनश्वर का दो 3. नृत्य 4. क्षण 5. वियोग 6. मिलन 7. सम्भावित 8. शायरी की महफ़िल 9. मोती बखेरना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बेवफ़ाओं को वफ़ाओं का ख़ुदा हम ने कहा
क्या हमें कहना था ऐ दिल और क्या हम ने कहा

लब[1] को गुन्चा[2], ज़ुल्फ को काली घटा हम ने कहा
दिल ने हम को जो भी कहने को कहा हम ने कहा

किस क़दर मजबूर होंगे उस घड़ी हम ऐ खुदा
जब तिरे बे–फ़ैज़[3] बन्दों क़ो ख़ुदा हम ने कहा

दाद देना[4] तुम हमारी चश्म–पोशी[5] की हमें
राह में जो गुम थे उन को रहनुमा[6] हम ने कहा

जब मरीज़–ए–इश्क़ को कोई दवा आई न रास
दर्द ही को दर्द की आख़िर दवा हम ने कहा

गिऱ गया अपनी निगाहों में ही अपना सब वक़ार[7]
जब सरे–बाज़ार[8] खोटे को खरा हमने कहा

1. अधर 2. कली 3. वह मनुष्य जो उदार और दानशील न हो और जो किसी के लिए लाभदायक न हो 4. प्रशंसा करना 5. देखकर अनदेखा करना 6. मार्गदर्शक 7. प्रतिष्ठा 8. भरे बाज़ार में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हम से मत पूछ कि क्या हम ने दुआ[1] मांगी है
तेरे आंचल तिरे दामन की हवा मांगी है

रंग फूलों ने लिया है तिरे रुख़सारों[2] से
तेरे जलवों से सितारों ने ज़िया[3] मांगी है

ख़ैर हम मांगते रहते हैं जहां की यारो
हम ने कब अपने लिये कोई दुआ मांगी है

हाथ उट्ठे थे किसी और की ख़ातिर उनके
मैं यह समझा कि मिरे हक़ में दुआ मांगी है

क्या दुआ मांगते हम अह्ल–ए–महब्बत 'रहबर'
सांस लेने को महब्बत की फ़ज़ा[4] मांगी है

1. ईश्वर से प्रार्थना करना 2. गालों 3. रौशनी 4. वातावरण

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सुलगती धूप में साया हुआ है
कहीं आंचल वो लहराया हुआ है

दिलों में बस रही है कोई सूरत
ख़्यालों पर कोई छाया हुआ है

पढ़ो तो, हम ने अपने बाज़ुओं पर
ये किस का नाम गुदवाया हुआ है

उस आंसू को कहो अब एक मोती
जो पलकों तक ढलक आया हुआ है

किसी का अब नहीं वो होने वाला
वो दिल जो तेरा कहलाया हुआ है

किसी हीले[1] उसे मिल आओ 'रहबर'
वो दो दिन के लिए आया हुआ है

1. बहाने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिल ने जिसे चाहा हो क्या उस से गिला रखना
उस के लिये होंटों पर हर वक़्त दुआ रखना

जब क़िस्मतें बटती थीं ऐसा भी न था मुश्किल
उस वक़्त सनम तुझको क़िस्मत में लिखा रखना

जब हम ने अज़ल[1] ही से तय एक डगर कर ली
फिर रास न आयेगा राहों को जुदा रखना

वो नींद के आलम से बेदार[2] न हो जायें
हौले से क़दम अपना ऐ बादे–सबा[3] रखना

आयेगा कोई भँवरा रस चूसने फूलों का
तुम फूल तबस्सुम[4] के होंटों पे खिला रखना

आयेंगे वो ऐ 'रहबर' सो जायेगी जब दुनिया
पत्तों की भी आहट पर तुम कान लगा रखना

1. अनादिकाल 2. जाग्रत 3. सुब्ह की ठण्डी हवा 4. मुस्कान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आया न मेरे हाथ वो आंचल किसी तरह
साया मिला न धूप में दो पल किसी तरह

मैं हूं कि तेरी सम्त[1] मुसलसल[2] सफ़र में हूं
तू भी तो मेरी सम्त कभी चल किसी तरह

यूं हिज्र[3] में किसी के सुलगने से फ़ाइदा
ऐ नामुरादे–इश्क़[4] कभी जल किसी तरह

होंटों पे तेरे शोख़ हंसी खेलती रहे
धुलने न पाये आंख का काजल किसी तरह

सौ सौ तरह से उस ने सताया मुझे मगर
छलकी न मेरे ज़ब्त[5] की छागल किसी तरह

चलने कभी न देंगे दरिन्दों की हम यहां
बनने न देंगे शह्र को जंगल किसी तरह

OO

---

1. ओर 2. निरन्तर 3. वियोग 4. प्यार में असफल व्यक्ति
5. सहनशीलता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हज़ार बार तुम्हें मैं ने भूलना चाहा
हज़ार बार तुम उभरे मिरे ख़यालों में

वो फूल अपने मुक़द्दर पे नाज़[1] करता है
सजा लो जिस को तुम अपने स्याह[2] बालों में

पनाह[3] मांगती है ज़ुल्मते-शबे-दैजूर[4]
वो तीरगी[5] है यहां सुब्ह के उजालों में

न हो सके वो हमारे किसी तरह 'रहबर'
झुकाया सर को बहुत मन्दिरों, शिवालों में

1. गर्व 2. काले 3. शरण 4. अंधेरी रात का अंधकार
5. अंधकार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आंखों में तजस्सुस[1] है रफ़्तार में तेज़ी है
लड़की है कि जंगल में भटकी हुई हिरनी है

जिस बात को कहने से मा'ज़ूर[2] हैं लब[3] तेरे
मैं ने तिरी आंखों में वो बात भी पढ़ ली है

बीते हुए लम्हों की, टूटे हुये रिशतों की
यादों की चिता शब[4] भर रह रह के सुलगती है

वो सिन्फ़े–सुख़न[5] जिसको कहते हैं ग़ज़ल यारो
हर रूप में जचती है हर रंग में खिलती है

खुलती है मिरे दिल के आंगन में वो ऐ 'रहबर'
बेलों से सजी संवरी उस घर में जो खिड़की है

1. तलाश 2. लाचार 3. होंट 4. रात 5. शायरी की क़िस्म

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

क्या आज उन से अपनी मुलाक़ात हो गई
सहरा[1] पे जैसे टूट के बरसात हो गई

वीरान बस्तियों में मिरा दिन हुआ तमाम
सुनसान जंगलों में मुझे रात हो गई

करती है यूं भी बात महब्बत कभी कभी
नज़रें मिलीं न होंट हिले बात हो गई

ज़ालिम ज़माना हम को अगर दे गया शिकस्त
बाज़ी महब्बतों की अगर मात हो गई

हम को मिटा सकें ये अंधेरों में दम कहां
जब चांदनी से अपनी मुलाक़ात हो गई

बाज़ार जाना आज सफल हो गया मिरा
मुद्दत के बाद उन से मुलाक़ात हो गई

1. रेगिस्तान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तुम जन्नते कश्मीर हो तुम ताज महल हो
'जगजीत'[1] की आवाज़ में ग़ालिब की ग़ज़ल हो

हर पल जो गुज़रता है वो लाता है तिरी याद
जो साथ तुझे लाए कोई ऐसा भी पल हो

होते हैं सफल लोग महब्बत में हज़ारों
ए काश कभी अपनी महब्बत भी सफल हो

उलझे ही चला जाता है उस ज़ुल्फ़ की मानिन्द
ऐ उक़दा–ए–दुशवारे महब्बत[2] कभी हल हो

लौटी है नज़र आज तो मायूस हमारी
अल्लह करे दीदार तुम्हारा हमें कल हो

मिल जाओ किसी मोड़ पे इक रोज़ अचानक
गलियों में हमारा ये भटकना भी सफल हो

1. विश्व प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक श्री जगजीत सिंह 2. महब्बत की राह में पेश आने वाली कठिन समस्या

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(A) क्या क्या सवाल मेरी नज़र पूछती रही
लेकिन वो आंख थी कि बराबर झुकी रही
मेले में ये निगाह तुझे ढूंडती रही
हर महजबीं[1] से तेरा पता पूछती रही

जाते हैं नामुराद[2] तिरे आस्तां[3] से हम
ऐ दोस्त फिर मिलेंगे अगर ज़िन्दगी रही

आंखों में तेरे हुस्न के जलवे बसे रहे
दिल में तिरे ख़्याल की बस्ती बसी रही

इक हश्र[4] था कि दिल में मुसलसल बपा रहा[5]
इक आग थी कि दिल में बराबर लगी रही

मैं था, किसी की याद थी, जामे–शराब था
ये वो निशस्त[6] थी जो सहर[7] तक जमी रही

शामे–विदा–ए–दोस्त[8] का आलम न पूछिये
दिल रो रहा था लब[9] पे हंसी खेलती रही

खुल कर मिला न जाम ही उसने कोई लिया
'रहबर' मिरे ख़ुलूस[10] में शायद कमी रही

OO

1. चांद जैसे माथे वाली 2. असफल 3. चौखट 4. महाप्रलय 5. निरंतर मचा रहा 6. बैठक 7. सुबह 8. प्रेमिका के विदा होने की शाम 9. होंट 10. प्यार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जाने वालो, हज़ार दरवाज़े
बाज़[1] हैं बे–शुमार दरवाज़े

शब ढले भी खुला हुआ क्यों है
किस का है इन्तिज़ार दरवाज़े

वो अटीं ख़ून से हसीं गलियां
वो हुए संगसार[2] दरवाज़े

'कृष्ण' को ले के जब चले 'वसुदेव'
खुल गए ख़ुद हज़ार दरवाज़े

इक ज़माना था हम पे भी वा[3] थे
शह्‌रे–उल्फ़त के द्वार दरवाज़े

1. खुले 2. पत्थर मार मार कर मारना 3. खुले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ज़िन्दगी ने फ़िरार[1] जब चाहा
खुल गए सद–हज़ार[2] दरवाज़े

हमः तन गोश[3] खिड़कियां घर की
हमः तन इन्तिज़ार[4] दरवाज़े

सो गए अह्ले–शह्र क्या दिन में
बंद हैं पुर–बहार दरवाज़े

मयकदा इस जगह से दूर नहीं
एक, दो, तीन, चार दरवाज़े

आमद आमद[5] है किस की ऐ रहबर
हो रहे हैं निसार[6] दरवाज़े ।

∞

---

1. पलायन, भाग जाना 2. सौ हज़ार 3. (आहट) सुनने के लिए उत्कंठित
4. पूर्णतया प्रतीक्षा 5. तशरीफ़ आवरी, पधारना 6. न्योछावर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पड़ी रहेगी अगर ग़म की धूल शाख़ों पर
उदास फूल खिलेंगे मलूल[1] शाख़ों पर

अभी न गुलशने–उर्दू को बे–चिराग़[2] कहो
खिले हुए हैं अभी चंद फूल शाख़ों पर

हवा के सामने उन की बिसात[3] ही क्या थी
दिखा रहे थे बहारें जो फूल शाख़ों पर

खिलाएं अह्ले–हकूमत[4] के हुक्म से वो फूल
न चल सकेगा कभी ये उसूल शाख़ों पर

निकल पड़े हैं हिफ़ाज़त[5] को चंद कांटे भी
हुआ है जब भी गुलों का नुज़ूल[6] शाख़ों पर

निसारे–गुल[7] हो मिला है ये इज़्न[8] बुलबुल को
हुआ है हुक्म गुले–तर[9] को झूल शाख़ों पर

वो फूल पहुंचे न जाने कहां कहां 'रहबर'
नहीं था जिन को ठहरना क़बूल[10] शाख़ों पर

∞

1. उदास 2. उजड़ा हुआ 3. सामर्थ्य 4. सरकार 5. रक्षा
6. उतारा 7. फूल पर न्योछावर 8. निर्देश 9. ताज़ा फूल 10. स्वीकृत

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिल ने भी किस से लौ लगाई है
जिस का मस्लक[1] ही बे–वफ़ाई है

गूंज उठी घाटियों में दर्द की लय
किस ने ये बांसरी बजाई है

गुल रुख़ों[2] से है दोस्ती मेरी
मह–जबीनों[3] से आशनाई[4] है

आदमी पस्तियों[5] में गुम है अभी
इस की गो चांद तक रसाई[6] है

---

1. नियम 2. जिन के चेहरे गुलाब की तरह सुर्ख हों 3. जिन के माथे चांद जैसे हों 4. दोस्ती 5. गिरावट 6. पहुंच

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हर डगर पुर–ख़ार[1] है हर राह नाहमवार[2] सी
ज़िन्दगी है ज़िन्दगी के नाम से बेज़ार[3] सी

ज़ह्र ये घोला है किस ने कुछ पता चलता नहीं
खिंच गई है दो दिलों के दरमियां दीवार सी

ज़िन्दगी अब तेरे लब[4] से वो भी ग़ाइब हो गई
रक़्स[5] करती थी जो कल तक इक हंसी.बीमार सी

बोल पड़ने को है गोया जिस्म का हर एक अंग
ख़ामुशी भी हैं किसी की माइले–गुफ़्तार[6] सी

मुस्क्राहट, चाल, तेवर, गुफ़्तगू, तर्ज़े–ख़िराम[7]
हर अदा उतरे है दिल में 'मीर' के अशआर सी[8]

क़त्ल होते हैं फ़रिश्ते रोज़ राहों में यहां
ज़िन्दगी सी क़ीमती शय को कहो बेकार सी

जब किया तसलीम[9] ऐ रहबर ज़माने ने हमें
जब कही हम ने ग़ज़ल उनके लब–ओ–रुख़सार[10] सी

∞

1. कांटों भरी 2. असमतल 3. रूष्ट 4. होंट 5. नृत्य 6. वार्तालाप प्रवृत
7. मंद मंद़ गति से चलने की अदा 8. प्रसिद्ध शायर मीर तक़ी मीर के शे'र
9. स्वीकृत 10. होंटों और गालों जैसी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हर एक शय से अलम आइना[1] है कमरे में
उदासियों का वो मेला लगा है कमरे में

वो कौन है जो ख़यालों पे है मुहीत[2] ऐ दिल
तमाम रात किसे सोचता है कमरे में

वही है शोरे–फ़ुगां[3], शोरे–आहे–नीम–शबी[4]
क़ियामतों का वही रतजगा[5] है कमरे में

महक उठी हैं फ़ज़ायें उदास कमरे की
ये किस के हुस्न का चर्चा हुआ है कमरे में

तमाम रोज़न–ओ–दीवार–ओ–दर[6] मुह्र–ब'लब[7]
ख़मोशियों का अजब सिलसिला है कमरे में

दिलों के कर्ब[8] का आईनादार होता है
वो क़हक़हा जो कभी गूंजता है कमरे में

बिखर गया है कोई मिस्ले–बूए–गुले[9] रहबर
कोई चिराग़ की सूरत जला है कमरे में

∞

---

1. हर चीज़ से व्यथा साफ़ झलकती है 2. व्याप्त 3. फ़र्यादा करने का शोर 4. अर्ध रात्रि में भरी गई आह 5. रात भर जागना (जगराता) 6. रोशनदान, दीवारें, दरवाज़े 7. चुप 8. व्यथा 9. फूल की सुगंधि की भांति

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिलों से गर्दे–जहालत[1] को साफ़ करता है
गुज़रता वक़्त नये इन्किशाफ़[2] करता है

ये कहकशां[3], ये सितारे, ये चांद ये सूरज
ये कुल निज़ाम[4] तुम्हारा तवाफ़[5] करता है

ख़ता[6] हुई है तो फिर उस के दर[7] पे सिजदा[8] कर
कि वो रहीम[9] ख़ताएँ मुआफ़ करता है

तिरे मकान के बेलों लदे दरीचे पर
ये किस की रूह का ताइर[10] तवाफ़ करता है

हो उस के ज़िहन[11] में शायद ख़्याले–नौ[12] कोई
हर एक शख़्स से वो इख़्तिलाफ़[13] करता है

ख़ामोश रह के करे है लहू लहू दिल को
करे वो बात तो दिल में शिगाफ़[14] करता है

कहें तो किस को कहें बेवफ़ा कि जब 'रहबर'
लहू लहू से यहां इन्हिराफ़[15] करता है

---

1. अज्ञानता की गर्द 2. प्रकटन 3. आकाश गंगा 4. व्यवस्था 5. परिक्रमा 6. भूल, अपराध 7. द्वार 8. माथा टेकना 9. दयावान् 10. पंछी 11. मस्तिष्क
12. नया ख़्याल 13. विरोध 14. दरार, [illegible] 15. विमुखता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

न कोई गुल न कोई पात बाक़ी
चमन में है ख़ुदा की ज़ात बाक़ी

बिखर जायेगा शीराज़ा[1] किसी दिन
फ़क़त[2] रह जायेंगे ज़र्रात[3] बाक़ी

इजाज़त हो तो वो भी अर्ज़ कर दूं
मिरे होटों पे है इक बात बाक़ी

वही हैं वस्वसे[4] अब भी दिलों में
वही हैं आज भी ख़तरात[5] बाक़ी

जलाल[6] अपना दिखायेगी किसी दिन
अगर होगी ख़ुदा की ज़ात बाक़ी

1. क्रम या तरतीब का बिगड़ना 2. केवल 3. कण
4. भ्रम 5. डर 6. तेज

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

देखो तो हमदर्द बड़े हैं
लोग मगर ये सर्द बड़े हैं

हर मौसम की रम्ज़[1] को जानें
वो पत्ते जो ज़र्द[2] बड़े हैं

हम मंज़िल पर क्या ठहरें गे
हम आवारा–गर्द बड़े हैं

पोंछ लिये हैं आंख से आंसू
लेकिन दिल में दर्द बड़े हैं

दुनिया एक दुखों का घर है
दुनिया में दुख दर्द बड़े हैं

आ निकले हैं उस की गली में
हम भी कूचा–गर्द[3] बड़े हैं

1. रहस्य 2. पीले 3. गलियों की खाक छानने वाले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

साफ़, शफ़्फ़ाफ़[1] आब[2] हैं हम लोग
आइनों का जवाब हैं हम लोग

चाक कर दें जिगर अंधेरों का
साहिबे–आबो–ताब[3] हैं हम लोग

हो सके तो मुतालआ[4] करना
आसमानी[5] किताब हैं हम लोग

क्या हमारा जवाब लाओ गे
आप अपना जवाब हैं हम लोग

काम हम ने किये हैं लाफ़ानी[6]
यूं तो मिसले–हबाब[7] हैं हम लोग

ज़िन्दगी हम पे नाज़ करती है
ज़िन्दगी का शबाब[8] हैं हम लोग

ख़ुशबुओं का मिज़ाज रखते हैं
इक शिगुफ़्ता[9] गुलाब हैं हम लोग

बह रहा है जो अपनी मस्ती में
ऐसे दरिया का आब हैं हम लोग

1. स्वच्छ 2. पानी 3. चमक दमक वाले 4. अध्ययन 5. किताब जो परमात्मा ने स्वयं लिखवाई हो 6. अनश्वर 7. पानी के बुलबुले की तरह 8. जवानी 9. खिला हुआ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सबाहतें[1] भी हैं कुर्बां वो सांवला–पन है
वो मेरा कृष्ण कन्हैया है मेरा काहन है

हवा के दोश[2] पे उड़ता है आप का आंचल
उलझ गया है जो कांटों से मेरा दामन है

जवानी भँवरा है रस चूसती है फूलों का
जो पीछे तितलियों के दौड़ता है, बचपन है

दिलो–दिमाग़ मुनव्वर[3] तुम्हारे ज़िक्र से हैं
तुम्हारी याद से दिल का चिराग़ रौशन है

तमाम शह्र हिमाचल के हम ने देखे हैं
जो सब से बढ़ के हसीं है वो शह्र 'नाहन' है

वो एक शायरे–यकता[4], वो बे–ग़रज़ इन्सां
बुरा किसी का नहीं सोचता ब्रहमन है

पठानकोट में रहते हैं इक ज़माना से
इसी के दम से हमारा भी नाम रौशन है

हर एक गोशा[5] यहां शोला–बार[6] है 'रहबर'
हमारा दिल है कि जलता हुआ कोई बन है

1. गोरापन 2. कांधा 3. रौशन 4. अद्वितीय 5. कोना 6. आग बरसाता है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कभी जब उन के शानों[1] से ढलक जाता रहा आंचल
तो दिल पर एक बिजली बन के लहराता रहा आंचल

नतीजा कुछ न निकला उन को हाले–दिल सुनाने का
वो बल देते रहे आंचल को, बल खाता रहा आंचल

इधर मजबूर था मैं भी, उधर पाबन्द थे वो भी
खुली छत पर इशारे बन के लहराता रहा आंचल

फ़क़त इक बार उन के रेशमी आंचल को चूमा था
मिरे एहसास[2] पर हर शाम छा जाता रहा आंचल

हवा के तुन्द[3] झोंके ले उड़े जब उन के आंचल को
तो उड़ उड़ कर उन्हें ता–देर[4] तड़पाता रहा आंचल

वो उस के तेज़, तीखे, दिल–नशीं रंगों का क्या कहना
हमारी ज़िन्दगी में रंग भर जाता रहा आंचल

वो आंचल को समेटे जब भी 'रहबर' पास से गुज़रे
मिरे कानों में कुछ चुपके से कह जाता रहा आंचल

1. कंधों 2. चेतना, अनुभव 3. तेज़ 4. देर तक

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दामने–सद–चाक[1] को इक बार सी लेता हूं मैं
तुम अगर कहते हो तो कुछ रोज़ जी लेता हूं मैं

बे–सबब पीना मिरी आदात[2] में शामिल नहीं
मस्त आंखों का इशारा हो तो पी लेता हूं मैं

गेसुओं का हो घना साया कि शिद्दत[3] धूप की
वो मुझे जिस रंग में रखता है जी लेता हूं मैं

आते आते आ गए अन्दाज़ जीने के मुझे
अब तो 'रहबर' ख़ून के आंसू भी पी लेता हूं मैं

1. सौ जगह से फटा हुआ 2. आदतों 3. तीव्रता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मौसम मिज़ाज अपना बदलने लगा है यार
वो शाल ओढ़ घर से निकलने लगा है यार

फैंका था जिस दरख़्त को कल हम ने काट के
पत्ता हरा फिर उस से निकलने लगा है यार

ये जान साहिलों के मुक़द्दर सँवर गए
वो गुस्ले–आफ़ताब[1] को चलने लगा है यार

उस का इलाज ख़ाक करे गा कोई तबीब[2]
वो ज़हर जो हवास[3] में पलने लगा है यार

उठ और अपने होने का कुछ तो सुबूत दे
पानी तो अब सरों से निकलने लगा है यार

दो एक कश लगा के चलेगा वो देखना
कुछ शय हथेलियों पे वो मलने लगा है य़ार

तुझ से तो ये उमीद रखी ही न थी कभी
तू भी हमारे नाम से जलने लगा है यार

मशरिक़[4] में जो तलूअ[5] हुआ था बवक़्ते–सुब्ह
मग़्रिब[6] में वक़्ते–शाम वो ढलने लगा है यार

OO

1. 'सन् बॉथ' 2. हकीम 3. देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने की पांच शक्तियां
4. पूर्व 6. उदय 7. पश्चिम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिल को जहान भर के महब्बत में ग़म मिले
कमबख़्त फिर भी सोच रहा है कि कम मिले

रोई कुछ और फूट के बरसात की घटा
जब आंसुओं में डूबे हुए उस को हम मिले

कुछ वक़्त ने भी साथ हमारा नहीं दिया
कुछ आपकी नज़र के सहारे भी कम मिले

आंखें जिसे तरसती हैं आये कहीं नज़र
दिल जिस को ढूंडता है कहीं वो सनम मिले

तेरे ख़ुश्बू में बसे ख़त (काव्य संग्रह)
राजेन्द्र नाथ 'रहबर' पठानकोटी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बे–इख़्तियार[1] आंखों से आंसू छलक पड़े
कल रात अपने आप से जिस वक़्त हम मिले

जितनी थीं मेरे वास्ते खुशियां मुझे मिलीं
जितने मिरे नसीब में लिख्खे थे ग़म मिले

फ़ाक़ो से नीमजान, फ़सुर्दा, अलम–ज़दा[2]
ग़म से निढाल, हिन्द के अह्ले–क़लम[3] मिले

कुछ तो पता चले कहां जाते हैं मर के लोग
कुछ तो सुराग़े–राह–रवाने–अदम[4] मिले

खोया हुआ है आज भी पस्ती[5] में आदमी
मिलने को उस के चांद पे नक़्शे–क़दम[6] मिले

'रहबर' हम इस जनम में जिसे पा नहीं सके
शायद कि वो सनम हमें अगले जनम मिले

OO

1. सहसा 2. भूक से अर्द्धमृत, खिन्न और व्यथित 3. कलमकार 4. मौत की राह के पथिकों की कुछ तो ख़बर मिले 5. गिरावट 6. पैरों के निशान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मचलते गाते हसीं[1] वलवलों[2] की बस्ती में
रहे थे हम भी कभी मनचलों की बस्ती में

किसी तरफ़ से कोई संग[3] ही न आन गिरे
ज़रा संभल के निकलना फलों की बस्ती में

ख़ुशी के भागते लम्हे[4] इधर का रुख़ न करें
ख़ुशी का काम ही क्या दिलजलों की बस्ती में

जो आ के बैठा वो दामन पे दाग़ ले के उठा
बचा है कौन भला काजलों की बस्ती में

चले चलो न कड़ी धूप की करो परवाह
रुकेंगे जा के हसीं आंचलों की बस्ती में

गुज़र गया हूं कभी बे–ख़राश[5] कांटों से
छिले हैं पैर कभी मख़्मलों की बस्ती में

---

1. सुन्दर 2. उमंगों 3. पत्थर 4. क्षण 5. बग़ैर छीलन या रगड़

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

टपक रहा है लहू जिन की आस्तीनों[1] से
वो लोग आन बसे हैं भलों की बस्ती में

हवा से कह दो यहां से गुरेज़–पा[2] गुज़रे
करे न शोर बहुत जंगलों की बस्ती में

यक़ीं रखो कोई आफ़त इधर न आयेगी
सुकूं[3] से बैठ रहो ज़लज़लों[4] की बस्ती में

बसे हुए हैं कुछ अहले–ख़िरद[5] भी ऐ 'रहबर'
न जाने सोच के क्या पागलों की बस्ती में

○○

1. शेरवाली, कोट, कुर्ते, क़मीस (क़मीज़) आदि की बांह 2. संकोच करती हुई
3. चैन 4. भूचालों 5. बुद्धिमान लोग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(8)

ग़ाज़े[1] हैं नए और हैं रुख़्सार[2] पुराने
बाज़ार में निकले हैं फ़सूंकार[3] पुराने

हो जाये सफल अपना भी बाज़ार में जाना
मिल जायें अगर राह में कुछ यार पुराने

हर रोज़ नया क़ौल[4], नया अह्द[5], नई बात
इस भीड़ में गुम हो गये इक़रार पुराने

कर देते हैं जो ताज़ा गुलाबों की ज़िया[6] मांद
हैं शह्र में कुछ ऐसे भी गुलज़ार पुराने

रखते थे दिलों में न तअस्सुब[7] न कदूरत[8]
किस शान के थे लोग मज़ेदार पुराने

तू कृष्ण ही ठहरा तो सुदामा का भी कुछ कर
काम आते हैं मुशिकल में फ़क़त[9] यार पुराने

---

1. पावडर, मुख चूर्ण 2. गाल 3. जादूगर 4. कथन 5. वायदा
6. प्रकाश 7. जातीय पक्षपात, कट्टरपन 8. रंजिश 9. केवल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अब और किसी जादा–ए–उल्फ़त[1] पे चलें क्या
पैरों में खटकते हैं अभी ख़ार[2] पुराने

उस शोख़ के तुम भी हो परस्तार[3] अज़ल[4] से
उस शोख़[5] के हम भी हैं परस्तार पुराने

आयेगी किसी रोज़ अजल[6] राहतें[7] ले कर
जीते हैं इसी आस पे बीमार पुराने

देखा जो उन्हें एक सदी[8] बाद तो 'रहबर'
छालों की तरह फूट पड़े प्यार पुराने

∞

---

1. प्यार का रास्ता 2. कांटे 3. पुजारी 4. अनादिकाल
5. चंचल 6. मृत्यु 7. आराम 8. शताब्दी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कैसा डेरा, कैसी बस्ती
हम फिरते हैं बस्ती बस्ती

हर नगरी में घर है अपना
हर बस्ती है अपनी बस्ती

रमते जोगी घूम रहे हैं
नगरी नगरी, बस्ती बस्ती

बस्ती बस्ती फिरने वालो
तुम भी बसा लो कोई बस्ती

अपनी बस्ती में सब कुछ है
क्यों फिरते हो बस्ती बस्ती

तुझ को छोड़ के तुझ को तरसे
हम ए जान से प्यारी बस्ती

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

इक अल्हड़ मुटयार पे यारो
मरती है बस्ती की बस्ती

कोई दूर नहीं बंजारो[1]
अलबेली नारों की बस्ती

पर्बत के उस पार बसायें
हम तुम एक सुहानी बस्ती

दिल का दामन थाम रही है
अन–देखी, अनजानी बस्ती

बस्ती छोड़ के जाने वाले
याद न क्या आयेगी बस्ती

बस्ते बस्ते बस जायेगी
'रहबर' दिल की सूनी बस्ती

ꝏ

1. व्यापारी, फेरी लगा कर चूड़िया आदि बेचने वाले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कभी हमारे लिये थीं महब्बतें तेरी
रहेंगी याद हमेशा रफ़ाक़तें[1] तेरी

रवां दवां[2] रहे सिक्का तिरे तबस्सुम[3] का
दिलों पे चलती रहें बादशाहतें तेरी

नज़र में, रूह में, दिल में, लहू में, सांसों में
कहां कहां नहीं हमदम स्कूनतें[4] तेरी

है कौन तुझ से बड़ा मुनसिफ़ो–अदील[5] यहां
तिरे हज़ूर करूंगा शिकायतें तेरी

बिला–सबब[6] नहीं सिजदा–गुज़ार[7] तू ऐ दिल
बिला–ग़रज़ नहीं साहिब–सलामतें तेरी

1. संगति 2. चलता रहे 3. मुस्कराहट 4. निवास
5. इन्साफ करने वाला 6. बिना कारण 7. बन्दगी करना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हर एक लफ़्ज़ में पिन्हां[1] है दफ़्तरे–मा'नी[2]
कुछ ऐसी सहल नहीं हैं सलासतें[3] तेरी

मिरे वतन तिरे तहवार ईद, दीवाली
हसीं हैं सारे जहां से रिवाइतें[4] तेरी

ये अपने अपने मुक़द्दर की बात है प्यारे
कि रंजो–ग़म तो मिरे हैं मसरर्तें[5] तेरी

जला न दे कहीं आतिश[6] तुझे तनफ़्फ़ुर[7] की
मिटा न दें कहीं तुझको कुदूरतें[8] तेरी

मिलेगा कुश्तों[9] को इन्साफ़ ऐ ख़ुदा किस दिन
न जाने बैठेंगी किस दिन अदालतें तेरी

नहीं हैं ज़ेब[10] तुझे ख़ुद–सिताइयां[11] 'रहबर'
अयां[12] हैं सारे जहां पर फ़ज़ीलतें[13] तेरी

OO

---

1. छिपा हुआ 2. शब्दों के प्रयोग और अर्थ का वृत्तांत 3. नर्म और हल्के फुल्के शब्दों का प्रयोग 4. रिवाज 5. खुशियां 6. आग 7. घृणा 8. रंजिशें 9. क़त्ल किये गये लोगों को 10. उचित 11. आत्म प्रशंसा 12. ज़ाहिर 13. [illegible]

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

देखों वो कब शाद[1] करे है
ग़म से कब आज़ाद करे है

मेरे हाल पे रोने वाले
क्यों आंसू बरबाद करे है

कितना सच्चा प्यार था अपना
आज भी दुनिया याद करे है

हर पल आहें भरता गुज़रे
हर लम्हा[2] फ़र्याद करे है

मुंह देखो की बातें हैं सब
कौन किसी को याद करे है

दिल को तोड़ के जाने वाले
ये दिल तुझ को याद करे है

दिल की उजड़ी बस्ती को वो
देखों कब आबाद करे है

मिलते थे जिस पेड़ तले हम
तुम को बराबर याद करे है

किस के हिज्र[3] में आंखें नम[4] हैं
किस को ऐ दिल याद करे है

1. प्रसन्न 2. क्षण 3. वियोग 4. सजल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तेरे ख़ुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे

प्यार की आख़िरी पूंजी भी लुटा आया हूं
अपनी हस्ती को भी, लगता है, मिटा आया हूं
उम्र भर की जो कमाई थी, गंवा आया हूं
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूं
आग बहते हुए पानी में लगा आया हूं

तूने लिख्खा था जला दूं मैं तिरी तहरीरें[1]
तू ने चाहा था जला दूं मैं तिरी तस्वीरें
सोच लीं मैंने मगर और ही कुछ तदबीरें[2]
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूं
आग बहते हुए पानी में लगा आया हूं

तेरे ख़ुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे
प्यार में डूबे हुए ख़त मैं जलाता कैसे
तेरे हाथों के लिखे ख़त मैं जलाता कैसे
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूं
आग बहते हुए पानी में लगा आया हूं

---

1. पत्र, लिखावटें 2. युक्तियां

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जिन को दुनिया की निगाहों से छुपाए रख्खा
जिन को इक उम्र कलेजे से लगाये रख्खा
दीन[1] जिनको, जिन्हें ईमान बनाये रख्खा

जिन का हर लफ़्ज़ मुझे याद था पानी की तरह
याद थे मुझ को जो पैग़ामे–ज़ुबानी[2] की तरह
मुझ को प्यारे थे जो अन्मोल निशानी की तरह

तूने दुनिया की निगाहों से जो बच कर लिख्खे
सालहा–साल[3] मिरे नाम बराबर लिख्खे
कभी दिन में तो कभी रात को उठकर लिख्खे

तेरे रूमाल, तिरे ख़त तिरे छल्ले भी गए
तेरी तस्वीरें, तिरे शोख़ लिफ़ाफ़े भी गए
एक युग ख़त्म हुआ युग के फ़साने भी गए
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूं
आग बहते हुए पानी में लगा आया हूं

कितना बेचैन उन्हें लेने को गंगा जल था
जो भी धारा था उन्हीं के लिये वो बेकल[4] था
प्यार अपना भी तो गंगा की तरह निर्मल था
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूं
आग बहते हुए पानी में लगा आया हूं

∞

1. धर्म 2. जुबानी सन्देश 3. कई सालों तक 4. व्याकुल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बदला

एक हाकिम[1] था फ़क़ीरों पर निहायत सख़्त–गीर
कांपते थे उस के डर से शहर के सारे फ़क़ीर

यूं तो वो हर रोज़ होता था फ़क़ीरों पर ख़फ़ा[2]
लेकिन इक दिन उस को गुस्सा कुछ ज़ियादा आ गया

कर लिया गुस्से को ठण्डा उसने बे–ख़ौफ़–ओ–ख़तर[3]
इक फ़क़ीरे बे–नवा[4] के सर पे पत्थर मार कर

और भी उस संग–दिल[5] का रो'ब तारी हो गया
बे–नवा के सर से जिस दम ख़ून जारी हो गया

ले सके बदला ये उस मज़लूम[6] में ताक़त न थी
सामने हाकिम के बेचारे की कुछ वक़्अत[7] न थी

जब न कुछ भी चल सका उस बे–नवा का इख़्तियार
कर लिया महफ़ूज़[8] पत्थर को समझ कर यादगार

1. अफ़सर 2. नाराज़ 3. बिना डर के 4. जिस की आवाज़ सुनने वाला कोई न हो
5. निष्ठुर 6. जिस पर जुल्म किया गया हो 7. प्रतिष्ठा 8. सुरक्षित

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लेकिन आख़िर रंग ला कर ही रही बेबस की आह
हो गया नाराज़ उस हाकिम से इक दिन बादशाह

कर दिया क़ैद उस को इक गहरे गढ़े में शाह ने
तब वही पत्थर उसे मारा फ़क़ीरे–राह ने

बेकसो–मजबूर हाकिम ने यह चिल्ला कर कहा
कौन हो, क्यों मारते हो मुझ को पत्थर बे–ख़ता[1]

तब कहा मज़लूम ने पत्थर को ख़ुद पहचान लो
बे–ख़ता है कौन हम दोनों में ये तुम जान लो

बात की तह से हुआ जब वो सितमगर[2] आश्ना[3]
तब कहा इतने दिनों बदला न क्यों तुम ने लिया

वो फ़क़ीर इस बात पर बोला कि ऐ हाकिम मिरे
पहले मैं डरता था तुझ से और उहदा[4] से तिरे

अब ख़ुदा के फ़ज़्ल[5] से तू है गिरफ़्तारे–बला[6]
वक़्त को मैंने ग़नीमत[7] जान कर बदला लिया

OO

1. बिना अपराध के 2. अत्याचारी 3. परिचित 4. पद, दर्जा
5. परमात्मा की दया से 6. आपत्ति ग्रस्त 7. सराहनीय

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गुफ़्तगू

जब कभी करता हूं टैलीफ़ोन उस नम्बर पे मैं
उस को बस अंगेज ही पाता हूं मैं
मस्रूफ़ ही पाता हूं मैं

पूछता हूं तब मैं ये अरबाबे[1] टैलीफ़ोन से
क्यों कोई पत्ता उधर हिलता नहीं
क्यों मिरे दिल का कँवल खिलता नहीं
क्यों फुलां[2] नम्बर मुझे मिलता नहीं

उस तरफ़ से तब ये मिलता है जवाब
ये तो नम्बर आप ही का है जनाब
दूसरों से बात बेशक कीजिए
ख़ुद से मिलने की न कोशिश कीजिए
आदमी ख़ुद से मुख़ातिब हो सके
आज की मसरूफ़ दुनिया में कहां मुम्किन है ये

(कहानीकार जोगिन्द्र पाल की एक कहानी पर आधारित)

OO

---

1. रब का वहुवचन, मालिक, स्वामी 2. वो चीज़ जो ख़्याल में हो मगर ज़ुबां से उसका नाम न लिया जाए जैसे फुलां नंबर, फुलां आदमी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आह! मीना कुमारी

महजूर, ना–मुराद, फ़सुर्दा, अलम–ज़दा[1]
तन्हा तू अपनी ज़ीस्त[2] के दिन काटती रही
दो गाम तेरा साथ ज़माना न दे सका
तल्ख़ी ग़मों की ज़ख़्मे–जिगर चाटती रही

कौसर[3] में वो धुला हुआ चेहरा नहीं रहा
वो वांकपन, वो अबरू–ए–ख़मदार[4] मिट गये
वो सादगी, वो सोज़ में डूबी हुई हंसी
वो चांद सी जवीन[5], वो रुख़सार[6] मिट गये

पानी थी तुझ को और भी शुहरत[7] जहान में
तेरे रहे–अदम[8] से गुज़रने के दिन न थे
करनी थीं तय कुछ और तरक़्क़ी की मंज़िलें
ऐ 'महजबीं'[9] अभी तिरे मरने के दिन न थे

∞

1. वियोगी, नाकाम, खिन्न, व्यथित 2. ज़िन्दगी 3. स्वर्ग में बहने वाली एक नहर
4. कमान की तरह भौंहें 5. माथा 6. गाल 7. मशहूरी 8. मौत का रास्ता
9. मीना कुमारी का वास्तविक नाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ख़मसे[1]

(1)

यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूं तिरे बग़ैर
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूं मैं
(जिगर मुरादाबादी)

आज़ुर्दा–ए–बहार[2] रहा हूं तिरे बग़ैर
रो रो के दिन गुज़ार रहा हूं तिरे बग़ैर
हां मौत को पुकार रहा हूं तिरे बग़ैर
यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूं तिरे बग़ैर
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूं मैं

1. पांच मिसरों क़ी कविता जिस में शायर किसी अन्य शायर के किसी मशहूर शे'र पर तीन मिसरे इस तरह लगाता है कि पांचों मिसरे दूध शक्कर की तरह एक जान हो जाते हैं।
2. बहार के मौसम में [illegible]

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(2)

मुझे दोनों जहां में एक वो मिल जायें गर 'अख़तर'
तो अपनी हसरतों को बे–नियाज़े दो जहां कर लूं
(अख़तर शीरानी)

नहीं है दीनो–दुनिया की मुझे कोई ख़बर 'अख़तर'
नहीं आता मुझे कुछ भी बजुज़[1] 'सलमा' नज़र 'अख़तर'
दुआयें मांगता हूं मैं यही शाम–ओ–सहर[2] 'अख़तर'
मुझे दोनों जहां में एक वो मिल जायें गर 'अख़तर'
तो अपनी हसरतों को बे–नियाज़े दो जहां[3] कर लूं

(3)

आती जाती सांस का आलम न पूछ
जैसे दुहरी धार का ख़ंजर[4] चले
(मीर दर्द)

किस क़दर हैं ज़िन्दगी में ग़म न पूछ
किस तरह कटती है ऐ हमदम[5] न पूछ
कितने दिन के अब हैं महमां हम न पूछ
आती जाती सांस का आलम न पूछ
जैसे दुहरी धार का ख़ंजर चले

1. सलमा के अतिरिक्त (सलमा और अख़्तर शीरानी का प्रेम जग ज़ाहिर है)
2. सुबह शाम 3. दुनिया से निःस्पृह 4. कटार 5. साथी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(4)

ज़िन्दगी क्या है चलना सफ़र में
मौत क्या है पलटना सफ़र से
(रतन पंडोरवी)

बैठ जाना न तुम रहगुज़र[1] में
चलते रहना हमेशा सफ़र में
दर्ज है शे'र 'फ़र्शे–नज़र'[2] में
ज़िन्दगी क्या है चलना सफ़र में
मौत क्या है पलटना सफ़र से

(5)

महरबां हो के बुला लो मुझे चाहो जिस वक्त
मैं गया वक़्त नहीं हूं कि फिर आ भी न सकूं
(ग़ालिब)

दिल की धड़कन में बसा लो मुझे चाहो जिस वक़्त
अपने सीने से लगा लो मुझे चाहो जिस वक़्त
ख़ाके–पा[3] अपनी बना लो मुझे चाहो जिस वक़्त
महरबां हो के बुला लो मुझे चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक़्त नहीं हूं कि फिर आ भी न सकूं

---

1. मार्ग 2. रतन पंडोरवी साहिब के काव्य–संग्रह का नाम
3. चरण धूल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(6)

शिकस्त खा के महब्बत में यूं उदास न हो
ये हार जीत से बेहतर है हारने वाले
(राजेन्द्र नाथ रहबर)

वो लाख दूर हो तुझ से वो लाख पास न हो
ये ज़िन्दगी तुझे उस के बग़ैर रास न हो
ख़ुदा के वास्ते इतना भी महवे–यास[1] न हो
शिकस्त खा के महब्बत में यूं उदास न हो
ये हार जीत से बेहतर है हारने वाले

(7)

मत सोच कि आने में होगी तिरी रुस्वाई[2]
ये देख तुझे दिल ने किस दिल से पुकारा है
(सुरेश चन्द्र शौक़ शिमलवी)

क्या शक्ल दिखाने में होगी तिरी रुस्वाई
क्या वा'दा निभाने में होगी तिरी रुस्वाई
क्या इस से ज़माने में होगी तिरी रुस्वाई
मत सोच कि आने में होगी तिरी रुस्वाई
ये देख तुझे दिल ने किस दिल से पुकारा है

---

1. निराशाग्रस्त 2. बदनामी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(8)

हैफ़[1] उस चार गिरिह[2] कपड़े की क़िस्मत ग़ालिब
जिस की क़िस्मत में हो आशिक़ का गरेबां[3] होना
(ग़ालिब)

उस की क़िस्मत में कहां फ़र्हत–ओ–राहत[4] ग़ालिब
उस पे हर रोज़ गुज़रती है क़ियामत ग़ालिब
कभी आती है मुसीबत कभी आफ़त ग़ालिब
हैफ़ उस चार गिरिह कपड़े की क़िस्मत ग़ालिब
जिस की क़िस्मत में हो आशिक़ का गरेबां होना

(9)

'क़दीर' हश्र[5] में पहुंचे तो हम ने क्या देखा
किसी के हाथ से दामन छुड़ा रहा है कोई
(क़दीर लख़्नवी)

अजीब दस्त–दराज़ी[6] का सिलसिला देखा
अजीब शोर क़ियामत के दिन बपा[7] देखा
अजीब आशिक़–ओ–माशूक़ का गिला देखा
'क़दीर' हश्र में पहुंचे तो हम ने क्या देखा
किसी के हाथ से दामन छुड़ा रहा है कोई

---

1. धिक्कार 2. गज़ का सोल्हवां भाग 3. कुरते, क़मीस (क़मीज़) आदि का गला
4. हर्ष और सुख 5. प्रलय 6. हाथापाई 7. मचा हुआ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(10)

किस बात को वो लिख नहीं पाते कि ज़मीं पर
फाड़े हुए औराक़ का अम्बार[1] मिले हैं
(शमीम करहानी)

तकते हैं ज़मीं पर तो कभी अर्श–ए–बरीं[2] पर
तशवीश के आसार नुमायां हैं जबीं[3] पर
रखते हैं क़लम लब पे कभी रूऐ–हसीं[4] पर
किस बात को वो लिख नहीं पाते कि ज़मीं पर
फाड़े हुए औराक़ का अम्बार मिले हैं

(11)

मुशताक़े–हमकिनारी[5] मलते हैं हाथ क्या क्या
तन तन के जब वो सीना अपना उभारते हैं
(हैदर अली आतिश लखनवी)

करते हैं आह–ओ–ज़ारी[6], मलते हैं हाथ क्या क्या
अल्ला रे बे'क़रारी, मलते हैं हाथ क्या क्या
हैं महवे–अश्बकारी[7] मलते हैं हाथ क्या क्या
मुशताक़े–हमकिनारी, मलते हैं हाथ क्या क्या
तन तन के जब वो सीना अपना उभारते हैं

1. कागज़ों का ढेर 2. आकाश पर 3. माथे पर चिन्ता के चिन्ह प्रत्यक्ष हैं 4. क़लम को कभी होटों पर रखते हैं कभी सुन्दर गाल पर 5. आलिंगन के अभिलाषी 6. चीखते, चिल्लाते हैं 7. आंसू बहाते हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

एक विद्यार्थी की आर्ज़ू

मेरे स्कूल मैं यह हमेशा दुआ करूं
अगले जनम में भी तिरा विद्यार्थी बनूं

छोटे से मेरे पांव हों और रास्ता तिरा
बस्ता उठा के मैं तिरी जानिब चला करूं

कण कण में तेरे इल्मो–अदब का निवास है
आंगन में तेरे इल्म के मोती चुना करूं

उस्ताद साहिबान से इज़्ज़त से आऊँ पेश
सहपाठियों को याद हमेशा किया करूं

तौफ़ीक़[1] यह अता[2] करे मेरा ख़ुदा मुझे
अध्यापकों के क़दमों में हर दम झुका रहूं

मेरे स्कूल मुझ को यह आर्शीवाद दे
जो रास्ता हो नेक मैं उस रास्ते चलूं

---

1. सामर्थ्य 2. प्रदान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अफ़सर बनूं, खिलाड़ी बनूं या शहीदे–क़ौम
दम तेरी अज़्मतों[1] का हमेशा भरा करूं

लब मेरे वक़्फ़[2] हों तिरी ता'रीफ़ के लिए
गुण गान मैं जहान में तेरा किया करूं

मुझ पर निसार इल्मो–अदब की हो दौलतें
मैं फ़ख़्रे–अह्ले–दानिशो–इल्मो–हुनर[3] बनूं

रौशन करूं मैं नाम तिरा ऐ मिरे स्कूल
ऊँचा रहे मक़ाम तिरा ऐ मिरे स्कूल

OO

1. श्रेष्ठता 2. समपर्ण 3. ज्ञानवान और साहित्य शास्त्र के ज्ञाता भी मुझ पर गर्व करें

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

क़त्ए

(1)

मा'रफ़त[1] की शराब है शिमला
एक शायर का ख़्ााब[2] है शिमला
दस्ते–कुदरत[3] ने ख़ुद लिखा जिस को
एक ऐसी किताब है शिमला

(2)

पत्ति पत्ति ने एहतिराम[4] किया
झुक के हर शाख़ ने सलाम किया
बढ़ के फूलों ने पांव चूम लिए
तुम ने जब बाग़ में ख़िराम[5] किया

(3)

बढ़ गया इज़्तिराब[6] ले आओ
हाले–दिल है ख़राब ले आओ
वो न आयेंगे अपने वादा[7] पर
मैकदे[8] से शराब ले आओ

1.अध्यात्म 2. सपना 3. कुदरत के हाथों ने 4. सम्मान
5. टहल क़दमी 6. व्याकुलता 7. वचन 8. मधुशाला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(4)

मय[1] को ग़म का जवाब कर दूंगा
ख़त्म सब इज़्तिराब[2] कर दूंगा
हिज्र की शब ग़मे–जुदाई को[3]
ग़र्क़े–जामे–शराब[4] कर दूंगा

(5)

दिल नहीं वाक़िफ़े–सुकूनो–क़रार[5]
हो चुके रंजो–ग़म गले का हार
अकसर औक़ात[6] सोचता हूं मैं
ज़िन्दगी है कि मुस्तक़िल आज़ार[7]

∞

Rajendar Nath Rehbar
1085, Sarai Mohalla, Pathankot
(Punjab) - 145 001 (India)

1. मदिरा 2. व्याकुलता 3. जुदाई की रात वियोग के ग़म को 4. मदिरा में ग़र्क कर दूंगा
5. दिल सुख और शान्ति से परिचित नहीं 6. समय 7. स्थायी रोग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अजमेर कौर*

हंगामा ख़ेज़ियाँ[1] थीं क़ियामत की हर तरफ़
'अजमेर कौर' आई थी जिस दिन से गाँव में
होने लगे थे उसकी जवानी के तज़किरे[2]
गलियों के मोड़—मोड़ पे, पीपल की छाँव में

जमने लगे थे छैल छबीलों के जमघटे
भट्टी के इर्द—गिर्द, दुकानों के आस—पास
रहने लगी थी एक अनोखी चहल—पहल
'अजमेर' की गली के मकानों के आस पास

बस एक ही लगन में उड़े जा रहे थे सब
बस एक ही ख़लिश थी दिलों में बसी हुई
'कुन्दन' भी ताक में था, 'गणेशा' भी घात में
इक आग थी हर एक के दिल में लगी हुई

कहता था आह भर के ये अकसर 'बहार सिंह'
उफ़ रे वो लब[3] गुलाब से, वो जोगिया बदन
वो अंखड़ियाँ[4] वो ज़ुल्फ़, वो गोरी कलाइयाँ
वो नाज़, वो हँसी, वो उबलता हुआ बदन

1. कोलाहल 2. प्रसंग 3. होंट 4. आँखें
* एक काल्पिनिक नाम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वो मोतियों से दाँत, वो बाज़ू भरे हुए
वो रेशमी लिबास, वो शोख़ी निगाह की
वो चौद्वीं के चाँद सा चेह्रा वो रंग रूप
वो हिरणियों सी चाल, वो मस्ती निगाह की

'बंसी' के जी में था कि उसे देखता रहे
'लशकर' था उसके गाल के तिल पर मिटा हुआ
'रेशम' के दिल में उसकी नज़र थी चुभी हुई
'चन्दन' का दिल था राह में उसकी बिछा हुआ

मेरे भी जी में था कि उसे देखता रहूँ
मैं भी था उसके गाल के तिल पर मिटा हुआ
मेरे भी दिल में उस की नज़र थी चुभी हुई
मेरा भी दिल था राह मे उसकी बिछा हुआ

उन मस्त अंखड़ियों ने लिया सब का जाइज़ा[1]
देखे नज़र नज़र में कई दिल टटोल कर
आख़िर निगाह आ के मिरे दिल पे रुक गई
कितने दिलों में ज़ह्र रक़ाबत[2] का घोल कर

आने लगे सलाम तो जाने लगे पयाम
होने लगीं निगाह की बातें निगाह से
दोनों तरफ़ लगी थी मुलाक़ात की लगन
दोनों के दिल थे बस इसी ग़म में तबाह से

इक शाम हो चुका था ग़ुरूब[3] आफ़ताब[4] जब
पंछी थे डालियों पे बसेरा किए हुए
गुम नींद के जहान में था बोढ़ का दरख़्त
बस्ती के रास्ते थे अंधेरा लिए हुए

1. परीक्षण 2. प्रतिद्वंदिता 3. अस्त 4. सूरज

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिल को सता रहा था मुलाक़ात का ख़्याल
दिल में था ये ख़याल दिनों से बसा हुआ
लेकर सहारा बोढ़ के बूढ़े दरख़्त का
मैं यूं खड़ा था जैसे मुसाफ़िर लुटा हुआ

इतने में बच बचा के नज़र से जहान की
आँखों में ख़ौफ[1] रूह में डर सा लिए हुए
मैं जिसका मुन्तज़िर[2] था दबे पाँव आ गई
हमराह एक नूर की दुनिया लिए हुए

फूलों पे झूम–झूम के बुलबुल हुई निसार[3]
भँवरों ने बढ़ के चूम लिए लब गुलाब के
रच सी गई फ़ज़ा में महक दूर–दूर तक
घुल से गए हवाओं में दरिया शराब के

माहौल[4] मुस्करा के सुनाने लगा ग़ज़ल
सरमस्त हो के साज़ हवा ने उठा लिया
बेले की हश्र–ख़ेज़[5] महक नाचने लगी
फूलों ने शाख़ शाख़ को झूला बना लिया

लेकिन इक इन्क़िलाब से आलम[6] बदल गया
वो नाज़नीन[7] फ़िक्र की दुनिया में खो गई
यकदम कुछ उसके फूल से मन में उठा ख़्याल
कुछ सोच के वो दिल में जुदा मुझ से हो गई

बोली तुम्हारे प्यार के क़ाबिल नहीं हूँ मैं
मेरी रगों में ज़ह्र है ग़म का भरा हुआ
वीरान हो चुकी है उमीदों की कायनात[8]
मायूसियों का रूह में घुन हैं लगा हुआ

---

1. भय 2. प्रतीक्षित 3. न्यौछावर 4. वातावरण 5. क़ियामत उठा देने वाली
6. दुनिया 7. सुन्दरी 8. दुनिया

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रहता है आँसुओं से मुझे काम हर घड़ी
रातें लुटी–लुटी सी हैं, दिन हैं तबाह से
मुझ को मिटा चुका है मिरा इक ग़लत क़दम
भारी है मेरा पाँव मिरे इक गुनाह से

अश्कों में डूब डूब गया बोढ़ का दरख़्त
इक बर्क़[1] हर चहार तरफ़ कौंदने लगी
शक़[2] हो गया ज़मीन का सीना मलाल[3] से
जलने लगे दरख़्त, हवा चीख़ने लगी

∞

1. बिजली 2. फट गया 3. दुख

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

नई दुनिया

दिले–मजबूर तू मुझ को किसी ऐसी जगह ले चल
जहां महबूब महबूबा से आज़ादाना[1] मिलता हो
किसी का नर्मो नाज़ुक हाथ अपने हाथ में ले कर
निकल सकता हो बे–खटके कोई सैरे–गुलिस्तां को

निगाहों के जहां पहरे न हों दिल के धड़कने पर
जहां छीनी न जाती हो ख़ुशी अह्‌ले–महब्बत[2] की
जहां अरमां भरे दिल ख़ून के आंसू न रोते हों
जहां रौंदी न जाती हो हंसी अह्‌ले–महब्बत की

जहां जज़बात[3] अह्‌ले–दिल के[4] ठुकराये न जाते हों
जहां बाग़ी[5] न कहता हो कोई खुद्‌दार इन्‌सां[6] को
जहां बरसाये जाते हों न कोड़े ज़िहने इनसां पर[7]
ख़यालों को जहां ज़ंजीर पहनाई न जाती हो!

कहां तक ऐ दिले–नादां क़ियाम[8] ऐसे गुलिस्तां में
जहां बहता हो ख़ूने–गर्मे–इन्‌सां[9] शाहराहों[10] पर
दरिन्दों[11] की जहां चांदी हो, ज़ालिम दनदनाते हों
झपट पड़ते हों शाहीं[12] जिस जगह कमज़ोर चिड़ियों पर

दिले–मजबूर तू मुझ को किसी ऐसी जगह ले चल
जहां महबूब महबूबा से आज़ादाना मिलता हो

OO

---

1. आज़ादी से 2. प्यार करने वालों की 3. मनोभाव 4. दिल वालों के 5. विद्रोही 6. स्वाभिमानी मनुष्य 7. इन्‌सान के मस्तिष्क पर 8. निवास 9. मनुष्य का गर्म लहू 10. रास्तों पर 11. हिंसक जंतु 12. बाज

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

नादान बुज़ुर्ग

इरादे आहनी,[1] यख़–बस्ता चिहरे, दिल जहांदीदा[2]
बड़ी संजीदा–ओ–संगीन माथों की मतानत[3] है
नज़र में एक पुर–असरार[4]–ओ–हैबतनाक[5] ख़ामोशी
ज़बां को तन्ज़िया तक़रीर[6] फ़रमाने की आदत है

ये कब फ़र्याद सुनते हैं किसी मजबूरे–उल्फ़त की
इन्हें तो दिल के शीशे तोड़ने में लुत्फ़ आता है
उक़ाबी आंख[7] जब उठती है इन कुहना[8] बुर्जुगों की
महब्बत का दिले–मासूम अकसर कांप जाता है

ये सीमो–ज़र के बन्दे[9] कब दिलों की क़द्र करते हैं
हिला देते हैं बुनयादे–महब्बत दबदबे इन के
दिलों के गुलस्तिानों पर, महब्बत की उमीदों पर
गिरा करते हैं बिजली बन कें अकसर फ़ैसले इन के

अज़ीज़ों के रआया जान कर[10] करते हैं सुल्तानी[11]
किसे हिम्मत कि इन के सामने अपनी जबां खोले
लबों की एक जुमबिश[12] से बदल देते हैं तक़दीरें
झपट पड़ते हैं, इन के सामने कोई अगर बोले

1. फ़ौलादी 2. बर्फ़ से सर्द चिहरे और हुशियार दिल 3. गम्भीरता 4. रहस्यपूर्ण 5. डरावनी 6. व्यंग्य भरा भाषण 7. गिद्द की आंख की तरह तीक्ष्ण 8. पुराने 9. चांदी सोने के पुजारी 10. छोटों को प्रजा जान कर 11. राज 12. होटों की एक थरथराहट से

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कोई मजबूर होकर जब बग़ावत[1] पर उतरता है
तो कहते हैं वक़ारे–ख़ान्दां पर हर्फ़[2] आयेगा
कोई ऐ काश इन नादां[3] बुजुर्गों को ये समझाए
वक़ारे–ख़ान्दां शीशा नहीं जो टूट जाए गा

ये कुहना मश्रिक़ी तहज़ीब के ख़ुद–साख़ता पुतले[4]
भरे बाज़ार में तहज़ीब को नीलाम करते हैं
समझ कर लाडलों की शादियों को साइते–नादर[5]
ये सौदागर वसूल अच्छे से अच्छे दाम करते हैं

कोई ऐ काश इन नादां बुजुर्गों को ये समझाए
तिजारत की तराजू में न तोलें जिन्से–उल्फत[6] को
महब्बत इक मुक़द्दस जज़बा–ए–ईसारे–इन्सां[7] है
न बेचें चंद सिक्कों के इवज़[8] रूहे–मुहब्बत को

OO

1. विद्रोह 2. परिवार की प्रतिष्ठा पर दोष आएगा 3. नासमझ 4. पूरब की पुरातन सभ्यता के तथाकथित पुतले 5. दुष्प्राप्य घड़ी 6. प्यार, पदार्थ 7. इन्सान के स्वार्थ–त्याग की पवित्र मनोवृत्ति का नाम मुहब्बत है 8. बदले में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चले आओ कहीं से

ये सब्ज़ा, ये गुलपोश मनाज़िर[1] ये घटायें
ये कैफ़ में डूबी हुई मय–बार फ़ज़ायें[2]
ये फूल, ये कलियों के चटकने की सदायें
ये अब्र, ये झरनों का तरन्नुम[3] ये हवायें

ऐ काश तुम ऐसे में चले आओ कहीं से

ये सिलसिला–ए–कोह[4] ये गुल बूटे, ये मन्ज़र[5]
ये पेड़, ये टीले, ये चटानें, ये सनोबर[6]
ये धुंद में लिपटी हुई राहें, ये गुले–तर[7]
शानों पे परेशान किये ज़ुल्फ़े–मुअम्बर[8]

ऐ काश तुम ऐसे में चले आओ कहीं से

बेदार[9] हैं दीदार की हसरत में सितारे
बेचैन हैं क़दमों से लिपटने को नज़ारे
करते हैं तुम्हें याद ये बहते हुए धारे[10]
शाख़ों की लचक में भी निहां[11] हैं ये इशारे

ऐ काश तुम ऐसे में चले आओ कहीं से

1. हरियाली, पुष्प ओढ़े दृष्य 2. मस्त,मदिरा, बरसाता हुआ वातावरण 3. ये बादल, यह झरनों का स्वर माधुर्य 4. पहाड़ों की क़तारें 5. दृश्य 6. चीढ़ के पेड़ 7. ताज़ा फूल 8. कंधों पर ख़ुशबू में बसे बाल बिखराए हुए 9. जाग्रत 10. झरने 11. छुपे हुए

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ऐ वतन

लहलहाती रहें वादियां खेतियां
ऐ वतन तेरे गुलशन महकते रहें
तेरी कानें जवाहर उगलती रहें
जाम ख़ुशहालियों के खनकते रहें
तेरे बाग़ों में गुनचे चटकते रहें

तेरी तोपों के मुंह आग उगलते रहें
दुशमनों को तिरे मात होती रहे
तेरी धरती उगलती रहे सीमो–ज़र[1]
सोने चांदी की बरसात होती रहे
तेरी तामीर[2] दिन रात होती रहे

1. चांदी सोना 2. निर्माण

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तेरे टैंकों के बढ़ते हुए क़ाफ़िले
दुशमनों की सफ़ों[1] को मिटाते रहें
कर के सर हर महाज़[2] और हर मोर्चा
शान अपने वतन की बढ़ाते रहें
धाक अपनी जहां में बिठाते रहें

दुशमनों के ठिकानों पे प्यारे वतन
तेरी मीज़ाइलें वार करती रहें
कर के तय सैंकड़ों कोस की दूरियां
दुशमनों पर ये यलग़ार[3] करती रहें
उन के अड्डों को मिस्मार[4] करती रहें

जगमगाते रहें कारख़ाने तिरे
तू तरक़्क़ी की राहों पे चलता रहे
तेरी हर आरज़ू का मुक़द्दस शजर[5]
हर घड़ी फूलता और फलता रहे
तू तरक़्क़ी के सांचे में ढलता रहे

ऊँची शिक्षा के भी सिलसिले आ'म हों
आए दिन हर जगह दर्स–गाहें[6] खुलें
नित नए डैम तामीर होते रहें
पेश–क़दमी[7] की हर रोज़ राहें खुलें
हर जगह हर तरफ़ शाहराहें[8] खुलें

1. प्रक्तियों 2. युद्ध केन्द्र 3. आक्रमण 4. ध्वस्त 5. पवित्र वृक्ष
6. स्कूल 7. आगे बढ़ना 8. सड़कें

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तेरे सच्चे सिपाही तिरे वास्ते
अपनी जानों को क़ुर्बान करते रहें
तेरे जां–बाज़[1] जब भी ज़रूरत पड़े
तेरी राहों में हंस हंस के मरते रहें
तेरे दामन को फूलों से भरते रहें

आएँ ठण्डी हवाएँ तिरी ऐ वतन
मस्त झरने हसीं गीत गाते रहें
तेरे बाग़ों के संरसब्ज़ पेड़ों तले
तेरे दिहक़ान[2] तानें उड़ाते रहें
जश्न आज़ादियों के मनाते रहें

मुझ को मालूम था मेरे प्यारे वतन
'कारगल' से भी तू कामयाब आयेगा
वक़्त का ये गुज़रता हुआ क़ाफ़िला
तेरे दामन को फूलों से भर जायेगा
दुश्मन अपने किए की सज़ा पायेगा

∞

1. ज़ान पर खेल जाने वाले 2. किसान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दूधिया आंचल

हाय ये बर्फ़–पोश[1] नज़्जारे
रूह आलम की मुस्कराती है
आज हर शै पे है निखार नया
आज हर चीज़ जगमगाती है

बर्फ़ की आज हुक्मरानी[2] है
रास्तों और शाख़सारों पर[3]
है मुहीत[4] एक दूधिया आंचल
पर्बतों की हसीं क़तारों पर

बर्फ़ के नर्म दूधिया गाले
जब ज़मीं पर क़ियाम[5] करते हैं
रंग उड़ता है लाला–ओ–गुल का[6]
चांद तारे सलाम करते हैं

चांदनी इस तरह बिखरती है
बर्फ़ की सीम'रंग[7] चादर पर
जैसे सोना घुला हो चांदी में
जैसे सीमाब[8] का कोई सागर

1. बर्फ का लिबास पहने 2. शासन 3. वृक्षों के झुरमुटों पर 4. व्याप्त
5. निवास, ठहराव 6. रंगीन खूबसूरत फूलों का 7. चांदी जैसी 8. पारा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वो पड़ी बर्फ़ पर शुआए–मेह्र[1]
मुस्कराये · हज़ार आईने
देखकर इस हसीन मन्ज़र[2] को
हो गये शर्मसार[3] आईने!

पेड़ हैं या सुतून[4] चांदी के
रास्ते हैं कि दूध की नहरें
हेच[5] लगती हैं बर्फ़ के आगे
दिल को रावी की सीमगूं[6] लहरें

हम ने माना कि हम हैं बर्फ़–नशीं[7]
और तुम वादियों की रसिया हो
हाय यह मौसिमे–बहारे–बर्फ़[8]
यह समां[9] काश तुम ने देखा हो

लिख तो दूं बर्फ़ पर तुम्हारा नाम
लेकिन इक डर है मेरे दिल में मकीं[10]
बर्फ़ की अनगिनत ·तहों के तले
दब न जाये तुम्हारा नाम कहीं

OO

1. सूरज की किरण 2. सुन्दर दृश्य 3. लज्जित 4. स्तम्भ 5. तुच्छ 6. चांदी जैसी
7. बर्फ़ानी इलाक़ा के रहने वाले 8. बर्फ़ की बहार का मौसम 9. दृश्य 10. निवास किए हुये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आ जाना

फ़ज़ा[1] में दर्द–आगीं[2] गीत लहराये तो आ जाना
सुकूते–शब[3] में कोई आह थर्राए तो आ जाना
जहां का ज़र्रा ज़र्रा यास[4] बरसाए तो आ जाना
दरो–दीवार पर अन्दोह[5] छा जाए तो आ जाना

समझ लेना कोई रो रो के तुझ को याद करता है
समझ लेना कोई ग़म का जहां आबाद करता है
कोई तक़दीर का मारा हुआ फ़रियाद करता है
तिरी आंखों में अश्के–ग़म[6] उतर आये तो आ जाना

1. वातावरण 2. दर्द में डूबा हुआ 3. रात की ख़ामोशी
4. निराशा 5. शोक, व्यथा 6. ग़म के आँसू

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिलों को गुदगुदाये जब तरन्नुम आबशारों[1] का
घटा बरसात की जब चूम ले मुंह कोहसारों[2] का
मुलाक़ातों के जब दिन हों ज़माना हो बहारों का
बहारे–गुल मुलाक़ातों पे उकसाये तो आ जाना

ज़माना मुशकिलों के जाल फैलाए तो फैलाए
क़दम बढ़ते रहें बे–दर्द दुनिया लाख बहकाए
समझते हैं कहीं दीवानगाने–इश्क़[3] समझाऐ
तिरे होंटों पे मेरा नाम आ जाये तो आ जाना

झड़ी बरसात की जब आग तन मन में लगाती हो
गुलों को बुलबुले–नाशाद[4] हाले दिल सुनाती हो
कोई बिरहन किसी की याद में आंसू बहाती हो
अगर ऐसे में तेरा दिल धड़क जाये तो आ जाना

∞

1. झरनों का स्वर माधुर्य 2. पहाड़ों 3. प्यार के दीवाने 4. उदास बुलबुल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ज़वाल[1]

अब कोई 'अख़तर'[2] न गायेगा किसी 'सलमा'[3] के गीत
अब न गूंजेंगे फ़ज़ाओं में तराने इश्क़ के
अब न होगी जान–लेवा मर्गे–शीरीं[4] की ख़बर
अब न दुहरायेगा कोई वो फ़साने इश्क़ के

अब न होगी मौत की ख़ाहिश दिले 'मनसूर' को
अब फ़राज़े–दार[5] तक हरगिज़ न पहुंचेगा कोई
अब नहीं करने का कोई इश्क़े–सादिक़[6] इख़तियार
अब न गुल की चाह में कांटों से उलझेगा कोई

---

1. पतन 2. मशहूर शायर अख़्तर शीरानी 3. अख़्तर शीरानी की प्रेमिका
4. शीरीं की मौत की ख़बर 5. सूली की ऊँचाई 6. सच्चा प्यार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अब न देगा जान 'बूटा सिंह' भी 'ज़ैनब' के लिये
अब न ख़ूनी बाब[1] आयेंगे किताबे–इश्क़ में
अब न अंपने वास्ति घोलेगा कोई ज़ह्रे–मर्ग[2]
अब न होगी ख़ून की सुर्ख़ी शराबे इश्क़ में

अब न कोई रुख़ करेगा दश्तो–सहरा[3] की तरफ़
अब नहीं करने का कोई दामने–दिल तार तार
अब कोई 'मजनूं' न उट्ठेगा दयारे–दहर[4] से
अब न होगा उल्फ़ते–लैला में कोई संगसार[5]

अब नहीं बाक़ी जहाने–इश्क़ में अह्ले–वफ़ा
अब शिआरे–ज़ीस्त कोई इश्क़ का ग़म क्या करे[6]
मिट गये जो ख़ून रोते थे किसी के हिज्र में
अब कोई रो कर सुकूते शब[7] को बरहम[8] क्या करे

OO

1. अध्याय 2. मृत्यु ज़हर 3. सुनसान जंगल 4. दुनिया 5. पथराव–ग्रस्त
6. प्यार के ग़म को जीवन का आचरण क्या बनाये 7. रात की ख़ामोशी 8. अस्त व्यस्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

भीगी पलकें

जुदाई की वो साअत[1] मेरे दिल को याद है अब तक
तुम्हारी सि्सकियां तहलील[2] होती थीं फ़ज़ाओं में
मुझे रोका था तुम ने वासिता दे कर महब्बत का
अभी तक लोह–ए–दिल पर नक़्श हैं[3] भीगी हुई पलकें

चला आया था मैं मजबूर हो कर फ़िक्रे–फ़र्दा से[4]
तुम्हारे दीदा–ओ दिल को सुलगते छोड़ आया था
तुम्हें बस जल्द–तर अपना बनाने की तमन्ना में
तुम्हारे प्यार की आग़ोश[5] से मुंह मोड़ आया था

ये सोचा था कि ले जाऊंगा तुम को अपने साथ इक दिन
तुम्हारा प्यार पा कर इक नई दुनिया बसा लूंगा
तुम्हारी सुहबते–रंगीं[6] में गुज़रेंगे मिरे लम्हे
तुम्हारे ख़ुश–नुमा जलवों[7] से बज़्मे–दिल सजा लूंगा

1. घड़ी 2. विलयन 3. दिल की तख़्ती पर अंकित है 4. आने वाले कल के विचार से
5. गोद 6. संगत 7. तुम्हारी मनोहर छब से दिल की महफ़िल सजा लूंगा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ख़बर क्या थी बिगड़ जायेगा सारा खेल दो दिन में
मिरे जाते ही दुनिया प्यार पर यलग़ार[1] कर देगी
जुदाई बख़्श देगी ज़िन्दगी भर के लिए हमको
महब्बत के रगो–रेशा[2] में ग़म का ज़हर भर देगी

पता क्या था मुक़द्दर में फ़क़त दिल–दोज़ आहें हैं
ज़माना प्यार की शहरग पे ख़ूनी हाथ रख देगा
महब्बत सिस्‌कियां लेगी, तबाही मुस्करायेगी
ज़माना इतनी बेदर्दी से बदला प्यार का लेगा

किया करती है गोशे–गुल[3] में जब सरगोशियां[4] बुलबुल
तुम्हारा मुझ को अंदाज़–ए–तकल्लुम[5] याद आता है
महब्बत करने वाले जब गले लग लग के मिलते हैं
तो मेरा दामने–दिल आंसुओं से भीग जाता है

ꝏ

1. आक्रमण 2. नाड़ियों में 3. फूल के कान में 4. दबी ज़बान में बात कहना
5. बात करने का ढंग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तुम्हारी याद

रात के सुरमई अंधेरों में
सांस लेते हुए सवेरों में

आबजू[1] के हसीं किनारों पर
ख़्वाब–आलूद रहगुज़ारों पर[2]

गुल्सितानों की सैर–गाहों में
ज़िन्दगी की हसीन राहों में

मये–रंगीं[3] का जाम उठाते वक़्त
रंजो–ग़म की हंसी उड़ाते वक़्त

शादमानी में,[4] ग़म के तूफ़ां में
रौनक़े शहर में, बियाबां[5] में

रक़्स[6] करती हुई बहारों में
ख़ून–आशाम ख़ारज़ारों[7] में

दोपहर हो कि नूर का तड़का
फ़स्ले–गुल[8] हो कि दौर पतझड़ का

सुबह के वक़्त, शाम के हंगाम[9]
बे क़यूदे मक़ाम,[10] बे–हंगाम[11]

दामने दिल[12] को थाम लेती है
कितनी गुस्ताख़[13] है तुम्हारी याद

OO

---

1. नदी 2. ऊंगते हुए रास्तों पर 3. रंगीन मदिरा 4. खुशी में 5. जंगल 6. नृत्य 7. खून पीने वाले कांटों का जंगल 8. बहार का मौसम 9. समय 10. स्थान की क़ैद के बिना 11. बे वक्त 12. दिल का दामन 13. असभ्य

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उसूल

फ़र्क़ है तुझ में, मुझ में बस इतना,
तू ने अपने उसूल की खातिर,
सैंकड़ों दोस्त कर दिए क़ुर्बां

और मैं!
एक दोस्त की ख़ातिर
सौ उसूलों को तोड़ देता हूं ।

∞

तेरे ख़ुशबू में बसे ख़त (काव्य संग्रह) – राजेन्द्र नाथ रहबर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गुल–ए–खंदां

दुश्मन है तेरी ऐ गुले–ख़ंदां[1] तिरी हंसी
तू जानता नहीं है मआले–शिगुफ़्तगी[2]

गुलचीं[3] का हाथ तुझ को झटकने को बेक़रार
सोज़न[4] तिरे जिगर में खटकने को बेक़रार

बेशक तू जाने–रौनक़े–फ़स्ले–बहार[5] है
लेकिन यहां फ़ना[6] पे किसे इख़्तियार[7] है

दो रोज़ में थपेड़े नसीमे–बहार[8] के
रख देंगे तुझ को शाख़े–शजर[9] से उतार के

जिन दिल–फ़रेबियों[10] पे तू नाज़ां[11] है इस क़दर
उड़ जायेंगी वो चश्म–ज़दन[12] में लगा के पर

बुलबुल जो तुझ को देख के है आज शादमां[13]
कल होगी तेरे हाले–परीशां[14] पे नौहा–ख़्वां[15]

हो जायेगा तू सूख के कांटा बहार में
बाक़ी न होगा फ़र्क़ कोई तुझ में ख़ार[16] में

1.मुस्कराता हुआ फूल 2.खिलने का परिणाम 3.पुष्प चुनने वाला 4.सूई 5.बहार के मौसम की रौनक की जान है 6.विनाश 7.अधिकार 8.बहार की शीतल और खुशगवार हवा 9.वृक्ष की टहनी
CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri
10.सुन्दरताओं 11.अभिमानी 12.आंख झपकते ही 13.खुश 14.व्याकुलता की हालत 15. शोक ग्रस्त 16. कांटा

शीराज़ा–ए–हयात[1] बिखर जायेगा तिरा
एक एक पंखड़ी तिरी हो जायेगी जुदा

दो दिन की है बहार रुख़े–पुर बहार[2] की
हो जायेगा तू ख़ाक[3] किसी रहगुज़ार[4] की

तुझपर खुलेगा राज़ मआले–हयात[5] का
जब कोई पैर तुझ को कुचल कर निकल गया

ऐ कम–निगाह[6] क्या तुझे ये भी ख़्याल है
ये रंगो–बू[7] ये हुस्न रहीने–ज़वाल[8] है

मेहमां है तू भी दह्र[9] में दो दिन का ऐ बशर[10]
ऐ मुश्ते–ख़ाक[11] इतना तकब्बुर[12] ख़ुदा से डर

शौक़त[13] पे अपनी तुझ को मुनासिब नहीं ग़ुरूर
ये आइना तो रोज़े–अज़ल[14] से है चूर चूर

OO

---

1. जीवन क्रम 2. मुख की शोभा 3. भस्म, राख 4. मार्ग 5. जीवन का परिणाम 6. जो दूरदर्शी न हों 7. मनोहरता 8. नाशवान 9. जगत 10. आदमी 11. मुट्ठी भर राख 12 अहंकार 13. शान 14. अनादिकाल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आ मिरी बाती में तेल डाल

बुझने लगा है दीप कोई रास्ता निकाल
दशरथ के लाल आ मिरी बाती में तेल डाल

महंगाई छू रही है यहां आस्मान को
क़ीमत हर एक चीज़ की कहती है दूर हो
घर का हर एक फ़र्द है फ़ाकों से अब निढाल
दशरथ के लाल आ मिरी बाती में तेल डाल

बच्चों की ज़िद कि उन के पटाख़े भी आएँगे
दीपावली के दिन वो मिठाई भी खाएँगे
ऐ राम इस जहां में नहीं है तिरी मिसाल
दशरथ के लाल आ मिरी बाती में तेल डाल

तहवार रोशनी का मनाता है ये जहां
होता है चांदनी का अमावस पे भी गुमां
वाली है तू जहां का तो मेरा भी कर ख़्याल
दशरथ के लाल आ मिरी बाती में तेल डाल

मैं ने ये कब कहा यहां दौलत उछाल दे
जो हो सके तो पैर का कांटा निकाल दे
इस रौशनी के पर्व पर इतना सां है सवाल
दशरथ के लाल आ मिरी बाती में तेल डाल

(रौशनी के पर्व पर 'राम' जी के दरबार में एक निर्धन की फरियाद)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

महब्बत कर के पछताना पड़ा है
ग़मों में ग़र्क़ हो जाना पड़ा है

किसी ने मुस्करा कर जब भी देखा
मुझे कुछ देर रूक जाना पड़ा है

दिल आमादा[1] न था तर्के–वफ़ा[2] पर
इसे ता देर[3] समझाना पड़ा है

उन्हें आवाज दी है जब भी दिल ने
वो आए हैं उन्हें आना पड़ा है

शबे–फ़ुर्क़त[4] बड़े हीलों से 'रहबर'
दिले–मुज़्तर[5] को बहलाना पड़ा है

---

1 राजी 2 वफा छोड़ने पर 3 देर तक 4. जुदाई की रात 5 व्याकुल दिल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कोई जीना है जीना ऐ सनम तुझ से जुदा हो कर
किसी की आई हम को काश आ जाये ख़ता[1] हो कर

मुझे ठुकरा के जा सकते हो तुम तसलीम[2] है लेकिन
कहां जाओगे आग़ोशे–तस्व्वुर[3] से जुदा हो कर

निकल जाते हो जब तुम फेर कर मुंह बेनियाज़ाना[4]
किसी पर टूट पड़ते हैं अलम[5] क़हरे–ख़ुदा[6] हो कर

तकल्लुफ़[7] बर–तरफ़[8] हर दिन नया ग़म ले के आता है
बड़ा दुशवार[9] है दुनिया में जीना आप का होकर

कभी तो आप मेरे पास आने की तरह आएं
कोई आना है आते ही चले जाना जुदा हो कर

अंधेरी रात है रस्तों पे तारी हू का आलम[10] है
बला जाये तिरी ऐ दोस्त ऐसे में जुदा हो कर

मैं उन के वादा–ए–फ़र्दा पे ईमां[11] किस तरह लाऊँ
ये वादा भी न रह जाए कहीं आया गया होकर

कोई कब तब सहे 'रहबर' फ़िराक़े यार[12] के सदमे
कोई कब तक जिए रंज–ओ–अलम में मुब्तला[13] होकर

---

1. चूक कर 2. स्वीकृत 3. ख़्याल की गोद 4. बेपराही से 5. गम 6. ईश्वरीय प्रकोप 7. बनावटीपन 8. समाप्त 9. मुशकिल 10. रास्तों पर जन शून्यता की दशा छाई हुई है 11. आने वाले कल के इकरार पर विश्वास कैसे करूं 12. मित्र वियोग के आघात 13. ग्रस्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मैं इक चिराग़ हूं दहलीज़ पर सजा मुझको
बुझा न दे कहीं ये सर–फिरी हवा मुझको

मैं एक बर्ग[1] हूं और आंधियों की ज़द पर हूं
न जाने ले के कहां जाएगी हवा मुझको

अजीब बात है जो ख़ुद ही राह में गुम है
दिखा रहा है वो मंज़िल का रास्ता मुझको

करूंगा उस से गिला उस की बे–नियाज़ी का
वो बे–नियाज़[2] जो भूले से मिल गया मुझको

सुना है बैठ गया थक के राह में वो भी
क़दम क़दम पे जो देता था हौसला मुझको

मिलूंगा तुम को ब–हर गाम[3] राहे–हस्ती में
मगर ये शर्त है दिल से पुकारना मुझ को

1. पत्ता 2. निःस्पृी 3. हर क़दम पर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वो दूर हों तो आग का दरिया है ज़िन्दगी
नज़दीक हों तो सुब्ह का झोंका है ज़िन्दगी

तुम ने बजा[1] कहा कि तुम्हें भूल जाएं हम
लेकिन ये दिल जो तुम को समझता है ज़िन्दगी

जचती नहीं नज़र में किसी की बहारे-हुस्न
क्या जाने किस हसीन की शैदा[2] है ज़िन्दगी

शिमला में हम ने ये किया महसूस दोस्तो
ज़ुल्फ़े-दराज़े-यार[3] का साया है ज़िन्दगी

क्या इस का एतिबार अभी थी अभी नहीं
रहबर बसाने-नक़्शे-कफ़े-पा[4] है ज़िन्दगी

1. ठीक 2. आशिक 3. प्रेमिका की लम्बी अलकों का साया
4. पैर के निशान की तरह

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हम उनके मुस्कराने की अदा पर जान देते हैं
ग़ज़ब है मुस्करा कर वो हमारी जान लेते हैं

कभी वो दिन थे हम यारों की ज़िद पर भी न पीते थे
मगर अब ग़ैर के हाथों का साग़र छीन लेते हैं

हमारी दीद[1] का ऐ दोस्त सामां[2] यूं भी होता है
हम आंखें बंद कर के भी किसी को देख लेते हैं

जिगर से ख़ून के चश्मे उबल पड़ते हैं ऐ 'रहबर'
वो हम को देख कर नफ़रत से जब मुंह फेर लेते हैं

OO

1. दीदार 2. सामग्री

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

याद कर कर के आप की बातें
काटता हूं पहाड़ सी रातें

हैफ़ सद हैफ़[1] कट गयीं तन्हा
ज़िन्दगी की हसीं–तरीं[2] रातें

इक फ़क़त आपके न होने से
दिल को डसती हैं चांदनी रातें

किस क़दर दिल–नवाज[3] रातें थीं
किस क़दर सोगवार[4] हैं रातें

बदलियां छा गई हैं लहरा कर
आ कि फिर आ गई हैं बरसातें

हैं मिरी ज़िन्दगी का सरमाया[5]
आप की एक दो मुलाक़ातें

हश्र[6] से पहले ख़त्म क्या होंगी
तेरी जुल्फ़े–दराज़[7] की बातें

फीके फीके हैं मेरे दिन 'रहबर'
और रातें लुटी लुटी रातें

---

1. अफसोस, सौ अफसोस 2. अति सुन्दर 3. रोचक 4. शोक ग्रस्त
5. पूंजी 6. प्रलय 7. लम्बी अलकें

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जब मिरे प्यार पे ग़ुस्से से बिफर जाते हैं
आप अल्लाह क़सम और निखर जाते हैं

क्या ग़ज़ब है कि वो अव्वल तो हमें मिलते नहीं
और मिलते हैं तो कतरा के गुज़र जाते हैं

फूल खिलते हैं चटक जाती हैं नौरस कलियां
साथ जाती है बहार आप जिधर जाते हैं

ग़ैर मुमकिन है कि रुक जायें मिरे अश्के–रवां[1]
ये वो दरिया नहीं जो चढ के उतर जाते हैं

एक तुम हो कि हर इक दिल में उतर जाते हो
और इक हम कि हर इक दिल से उतर जाते हैं

मुस्कराते हुए महफ़िल में तिरी आए थे हम
क्या तमाशा है कि बा–दीदा–ए–तर[2] जाते हैं

मैकदे[3] में ही न क्यों कर लें बसेरा 'रहबर'
इस जगह कहते हैं हालात सुधर जाते हैं

1 बहते हुये आंसू 2. गीले चक्षु लेकर
3. मदिरालय

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बराबर जामे–मय[1] के जामे–कौसर[2] हो नहीं सकता
कभी ज़र्रा बरंगे–माहो–अख़्तर[3] हो नहीं सकता

हमारा हाल है और अब्तरी[4] की आख़िरी मंज़िल
चलो अच्छा हुआ ये और अब्तर हो नहीं सकता

ख़ुदारा[5] कोई समझाये मिरे समझाने वालों को
मुझे राहत मिले उन से बिछड़ कर हो नहीं सकता

उन्हें क्या फ़ाइदा हाले–ख़राबे–दिल[6] सुनाने का
असर हाले–ख़राबे दिल का उन पर हो नहीं सकता

वो नंगे–इश्क़े–सादिक़[7] है उसे दिल कौन कहता है
जो तेरे इक इशारे पर निछावर हो नहीं सकता

सहर का वक़्त हो या शाम के ढलते हुए साये
जुदा दिल से ख़्याले–यार दम भर हो नहीं सकता

सुकूने दिल के तालिब ये तलब है सई ए लाहासिल[8]
सुकूने दिल तो जीते जी मुयस्सर[9] हो नहीं सकता

मैं उन को ढूंडने निकलूं ये अकसर होता रहता है
वो मुझ को ढूंडने निकलें ये 'रहबर' हो नहीं सकता

1 शराब का जाम 2 स्वर्ग की नहर 'कौसर' में से भरा गया जाम 3. कण कभी चांद तारों की समानता नहीं कर सकता 4. बुरी दशा 5 प्रभात्मा के लिये 6. दिल का खराब हाल 7 वह सच्चे प्यार [illegible] को कारण है 8 मन की शान्ति के इच्छुक की तलाश बे–फ़ाइदा है 9 प्राप्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जो ग़म दिया हो उसने, वो ग़म कोई ग़म नहीं
उसका सितम हमारी नज़र में सितम नहीं

मुहताज आप ज़ेवरो–ज़र के नहीं हुज़ूर
ख़ुद आप का बदन किसी ज़ेवर से कम नहीं

जन्नत[1] की आरज़ू हो मुझे शैख़[2] किस लिये
मेरा वतन मुझे किसी जन्नत से कम नहीं

अब इस का क्या इलाज कि दिल में समा गया
इक महजबीं[3] जो इश्क़ में साबित–क़दम[4] नहीं

अब तोड़ते नहीं हो सितम[5] क्यों नया कोई
अब क्यों शरीके–हाल[6] तुम्हारा करम[7] नहीं

'रहबर' मैं देखता हूं उन्हें बस अक़ीदतन[8]
हो और कोई बात ख़ुदा की क़सम नहीं

1. स्वर्ग 2. पीर मुर्शिद 3. जिस का माथा चांद जैसा हो 4 स्थिर 5. जुल्म
6. भागीदार 7. कृपा 8. श्रद्धा से

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुल्तफ़ित[1] जब तिरी नज़र होगी
हर ख़ुशी मेरी हम–सफ़र[2] होगी

इस जहाने–हरीफ़े उल्फ़त[3] में
ज़िन्दगी किस तरह बसर होगी

क़ातिले दिल[4] कोई तो है आख़िर
तू नहीं तो तिरी नज़र होगी

दोस्ती तेरी क्या ख़बर थी मुझे
चार दिन से भी मुख़्तसर[5] होगी

इश्क़ की राह ऐ दिले–नादां
हम न कहते थे पुर–ख़तर[6] होगी

शबे–ग़म[7] और तो न कुछ होगा
इक सदाए सहर–सहर[8] होगी

हंस ले 'रहबर' कि कोई आया है
आहो–ज़ारी[9] तो उम्र भर होगी

OO

1. मेह्‌रबान 2. साथी 3. इस प्यार विरोधी जहान में 4. दिल का हत्यारा 5. संक्षिप्त 6. भयंकर 7. ग़म की रात 8. एक आवाज होगी कि प्रभात हो 9. रोना पीटना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बात दिल की अदा[1] नहीं होती
ये गिरह[2] हम से वा[3] नहीं होती

ऐसी बातों पे क्यों बिगड़ते हो
जिन की कोई बिना[4] नहीं होती

आदमी ख़ामियों[5] का पुतला है
किस बशर से ख़ता[6] नहीं होती

जुल्म की इन्तिहा[7] न हो जब तक
रहम की इबतिदा[8] नहीं होती

जब से रूठे हैं मुझ से वो 'रहबर'
फ़स्ले गुल कैफ़ ज़ा नहीं होती[9]

1. वर्णन 2. गांठ 3. उदघटित 4. नींव 5. त्रुटियों 6. ग़लती 7. अंत
8. प्रारंभ 9. बहार मादकता देने वाली नहीं होती

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिल बन रहा है मरकज़–ऐ–आफ़ात[1] इन दिनों
मिलती है रोज़ दर्द की सौग़ात इन दिनों

सब देखते हैं अपने मफ़ादात[2] इन दिनों
बटती है अपने अपनों में ख़ैरात इन दिनों

बरसात की फुहार के रसिया ये सुन रखें
होती है गोलियों की भी बरसात इन दिनों

मिलते हैं यूं तो लोग सब अच्छे बुरे मगर
मुशिकल है एक खुद से मुलाक़ात इन दिनों

मेरे वतन में दौर रवादारियों[3] का था
बरपा किये हैं किस ने फ़सादात इन दिनों

तहतुस्सरा हो[4] अर्श हो[5], धरती हो या ख़ला[6]
अच्छे किसी जगह नहीं हालात इन दिनों

फुर्सत अगर मिले तो कभी आ के तुम सुनो
क्या क्या हैं दिल को तुम से शिकायात इन दिनों

डूबा हुआ है आहों में 'रहबर' हर एक दिन
भीगी हुई है अश्कों में हर रात इन दिनों

1. आपत्तियों का केन्द्र 2. लाभ 3. आपसी भाई चारा 4. पाताल
5. आकाश 6. अंतरिक्ष, शून्य

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ग़म के मारों से दोस्ती कर लो
बेसहारों से दोस्ती कर लो

तुम कि उड़ते हुए बगूले[1] हो
रेग–ज़ारों[2] से दोस्ती कर लो

कर के तूफ़ान के सपुर्द मुझे
तुम किनारों से दोस्ती कर लो

मेरी पलकों पे जो लरज़ते हैं
उन सितारों से दोस्ती कर लो

इक तबस्सुम[3] को जो तरसती हैं
उन बहारों से दोस्ती कर लो

मंज़िलों की अदा–शनास[4] हैं ये
रहगुज़ारों[5] से दोस्ती कर लो

ख़ाकसारी[6] में सरबुलन्दी[7] है
ख़ाकसारों से दोस्ती कर लो

चाह फूलों की है अगर 'रहबर'
ख़ार–ज़ारों[8] से दोस्ती कर लो

OO

1. गर्द–बाद, हवा का चक्कर 2. मरूस्थल 3. मुस्कान 4. पहचानने वाला
5. रास्तों 6. नम्रता 7. प्रतिष्ठा 8. कांटों भरा स्थान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri



कुछ दिये तारीकी–ए–शब[1] में जला देता हूं मैं
जब किसी की याद में आंसू बहा देता हूं मैं

ज़िन्दगी के इक बिलकते मोड़ पर बिछड़ा था जो
आज भी उस जाने वाले को सदा देता हूं मैं

अनगिनत फल फूल आ गिरते हैं कद़मों में मिरे
पेड़ की बस एक टहनी को हिला देता हूं मैं

इतनी आसां भी नहीं तेरी महब्बत ऐ सनम
आ तुझे सब ज़ख़्म इस दिल के दिखा देता हूं मैं

इस क़दर ही बेक़रारी है अगर ऐ दिल तुझे
उस की राहों में ही आ तुझ को बिछा देता हूं मैं

1. रात्रि का अंधकार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जब मज़ा है हम पे लुत्फ़े–ख़ास[1] फ़रमाए शजर[2]
पुर–समर[3] शाख़ों को ले कर हम पे झुक जाये शजर

चल रहे हैं देर से तपती हुई राहों पे हम
देखते हैं कब हमारी राह में आए शजर

बस्तियां जब से बसा ली हैं किसी ने दूर देस
ले गए उस देस शायद अपने सब साए शजर

देर से बैठे हैं हम दामन को फैलाए हुए
क्या अजब फल फूल पत्ते हम पे बरसाए शजर

1. विशेष कृपा 2. वृक्ष 3. फलदार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्यार में डूबे हुए गीत सुना कर किस ने
जुल्फ़ से बांध लिया दिल सा तवंगर[1] किस ने

उस के वादा पे भरोसा तो है ऐ दिल तुझ को
रेत पर यार बनाया है मगर घर किस ने

वो था सुक़रात कि थी कृष्ण की मीरा कोई
पी लिया ज़ह्र का छलका हुआ साग़र किस ने

काश अरबाब–ए–सियासत[2] से ये पूछे कोई
कर लिया कुर्क़[3] ग़रीबों का मुक़द्दर किस ने

हो गया और भी वो जुल्म–ओ–सितम पर माइल[4]
कह दिया एक सितमगर[5] को सितमगर किस ने

बहरे–हस्ती[6] के शनावर[7] हैं बख़ूबी आगाह[8]
आज तक पार किया है ये समुन्दर किस ने

राह में कौन मिला आज ये हंस कर 'रहबर'
कर दिया जादा–ए–हस्ती[9] को मुनव्वर[10] किस ने

1. समृद्ध, धनाढ्य 2. राजनीति के रब, बडे नेता 3. मासंत्रित, जब्ती 4. प्रवृत्त 5. अत्याचारी
6. जीवन सागर 7. तैराक 8. अवगत, सूचित 9. जीवन–पथ 10. प्रकाशमान, दीप्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कहने को तो इक ज़र्रा–ए–ख़ाकी[1] हूं मैं लेकिन
तारों से भी आगे की ख़बर दी गई मुझ को

रहने को अता[2] की मुझे नफ़रत भरी दुनिया
चलने को महब्बत की डगर दी गई मुझ को

करती है जो सफ़्फ़ाक[3] अंधेरों का जिगर चाक़[4]
वो रौशनी–ए–फ़िक्र–ओ–नज़र दी गई मुझको

थी ऐश–ए–दोआलम की तिरे दर से तवक़्क़ो
इक हस्ती कि है ख़ाक–ब–सर, दी गई मुझको

∞

1. मिट्टी का कण 2. प्रदान 3. निर्दय 4. टुकड़े–टुकड़े करना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रात भर चलता है जाम–ओ–साग़र–ओ मीना[1] का दौर
जागते हैं रात भर मयख़ाने[2] तेरे शह्‌र में

कौन है दीवानगान–ए–इश्क़ का पुर्साने–हाल[3]
किस को अब आवाज़ दें दीवाने तेरे शह्‌र में

कौन किस पर मर मिटा, किस किस का ईमां लुट गया
रोज़ सुनते हैं नये अफ़्साने तेरे शह्‌र में

कौन किस के साथ है 'रहबर' तुझे कुछ है ख़बर
किस के किस के साथ हैं याराने तेरे शह्‌र में

---

1. प्याला, चषक, सुराधानी 2. मदिरालय 3. हाल पूछने वाला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

घटा उठी है तो याद आ गई हैं वो ज़ुल्फ़ें
खिला है फूल तो वो चिहरा याद आया है

वही सी चाल, वही सी अदा वही सा बदन
ये कौन उस सा मिरे सामने से गुज़रा है

तरस रही हैं तिरी दीद[1] को मिरी आंखें
जो ख़ाके–पा[2] को तरसता है मेरा माथा है

ख़ुदा की बन्दगी हम इस लिए नहीं करते
किसी को हम ने ख़ुदा मान कर ही पूजा है

बसे हुए हो तुम्हीं तुम हमारी सोचों में
किसी को हम ने तुम्हारे सिवा न सोचा है

1. दर्शन 2. चरण धूली

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फ़साना–गो है तेरे वस्ल की[1] टूटी हुई चूड़ी
है हमको जां से भी प्यारी तिरी टूटी हुई चूड़ी

मैं कहता हूं कि दिल है रेज़ा रेज़ा[2] आप के ग़म में
वो कहते हैं कि दिल है या कोई टूटी हुई चूड़ी

कभी रौनक़ रही होगी किसी कोमल कलाई की
है जिस का नाम आज इक कांच की टूटी हुई चूड़ी

हज़ारों चूड़ियां यूं तो खनकती हैं ख़्यालों में
मगर कुछ और ही शय[3] है तिरी टूटी हुई चूड़ी

सहर[4] होते ही कोई हो गया रुख़सत[5] गले मिलकर
फ़साने रात के कहती रही टूटी हुई चूड़ी

पड़ी है बाग़ के इक तीरा–ओ–तारीक गोशे[6] में
ये किस बाज़ू को सूना कर गई टूटी हुई चूड़ी

रवां[7] है ख़ून की धारी किसी गोरी के बाज़ू से
बड़ी बेदर्द है ये कांच की टूटी हुई चूड़ी

तिरे दर[8] पर खड़ा है इक सवाली हाथ फैलाये
कोई लोहे का छल्ला या कोई टूटी हुई चूड़ी

भरा है भेस बंजारों का किस के इश्क़ में 'रहबर'
बुलाती है तुझे किस शोख़[9] की टूटी हुई चूड़ी

1. तेरे मिलन का अफ़साना कहती है 2. कण कण 3. चीज़ 4. सुब्ह
5. विदा 6. अंधेरे कोने में 7. गतिशील 8. दरवाज़े पर 9. नटखट

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जिसे देखो वो ग़म में मुब्तला[1] है
ये दुनिया है कि इक मातम–सरा[2] है

अलम में दिल युहीं डूबा हुआ है
महब्बत जिसने भी, की लुट गया है

बड़े बे–मेह्र[3] पर आई तबीयत
बड़े बे–दर्द से पाला पड़ा है

तुम आ जाते तो क्या जाता तुम्हारा
किसी ने रात भर रस्ता तका है

रहे–उल्फ़त[4] में यूं लूटा गया हूं
तुम्हारा ग़म ही ले दे के बचा है

हमारे हल्क़[5] पर ख़ंजर चला कर
इलाही उनका सर क्यों झुक गया है

हद्दे–आरज़ू[6] से बढ़ चला हूं
रफ़ीक़[7] अपना दिले–बे–मुद्आ[8] है

महब्बत में हमेशा ही से 'रहबर'
यही होता है जो तुझ से हुआ है

OO

1. ग्रस्त 2. मातम करने की जगह 3. दया रहित 4. उल्फत की राह 5. गले पर
6. इच्छाओं की सीमाएं 7. साथी 8. इच्छा रहित

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

खिला हुआ है शफ़क़ की मिसाल[1] फिर कोई
दिखा रहा है बहारे–जमाल[2] फिर कोई

नहा के बांध रहा है वो बाल फिर कोई
बना हुआ है अछूता ख़याल फिर कोई

मिरे ख़्याल की दुनिया में आ के चुपके से
छिड़क गया है फ़ज़ा में गुलाल फिर कोई

न मिल सकेगा कोई हम सा चाहने वाला
न ला सको गे हमारी मिसाल फिर कोई

लजा लजा सी गई है फ़ज़ा दुआलम[3] की
निहारता है ख़ुद अपना जमाल[4] फिर कोई

1. सूरज उदय/अस्त के समय की लालिमा की तरह
2. सुन्दरता की बहार 3. लोक परलोक 4. सुन्दरता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जो हौसला है तो फिर बढ़ के हाथ फैला दे
वो देख बांट रहा है मलाल[1] फिर कोई

ज़मीन कांप उठी आस्मां है सक्ते[2] में
सुना रहा है मुसीबत का हाल फिर कोई

पलट दिया है किसी ने बिसाते–आलम[3] को
वो चल गया है क़ियामत की चाल फिर कोई

मिरे वतन मिरे हिन्दोस्तां उदास न हो
मिले गा लाल बहादुर सा लाल[4] फिर कोई

किसी के हुस्ने–दिलारा[5] को देख कर 'रहबर'
मचल रहा है लबों[6] पर सवाल फिर कोई

∞

1. दुख 2. गति भंग, अचेत 3. शतरंज खेलने का संसार रूपी तख़्ता
4. एक बहुत ही क़ीमती रत्न 5. दिल को श्रृंगारित करने वाली सुन्दरता 6. होटों पर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri



कोई भूला हुआ ग़म दिल में बसाए रखना
इस ख़राबे[1] में कोई जोत जगाए रखना

मैं पलट आऊंगा परदेस से इक रोज़ ज़रूर
आस के दीप मंडेरों पे जलाए रखना

ग़म की यूरुश[2] में भी हंसता हूं कि फ़ितरत है मिरी
रेगज़ारों[3] में भी कुछ फूल खिलाए रखना

ज़ीस्त[4] को और भी दुश्वार[5] बना देता है
चन्द यादों को कलेजे से लगाए रखना

सुब्ह के शोख़ उजालों से मिरा रिश्ता है
मेरे घर में न क़दम शाम के साए रखना

1. खंडहर 2. आक्रमण 3. मरूस्थल 4. जिन्दगी 5. मुश्किल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फिर कोई गर्म हवा तुम को नहीं छू सकती
तुम मिरी बात के मफ़हूम[1] को पाए रखना

मैं भी पलकों पे सितारों को करूंगा रौशन
तुम भी बुझती हुई शमओं को जलाए रखना

तुम कन्हैया हो न मैं राधा हूं फिर भी मुझ को
बांसुरी जान के होंटों से लगाए रखना

बस यही शेवा–ए–अरबाबे–वफ़ा[2] है यारो
उस की चौखट पे सरे–शौक़ झुकाए रखना

शौक़ से चाहो किसी ज़ुहरा–बदन[3] को 'रहबर'
दौलते–दिल[4] से मगर हाथ उठाए रखना

∞

1. भाव 2. वफ़ादारों का तौर तरीक़ा 3.सितारे की तरह सुन्दर 4. दिल रूपी धन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जब से दिल में तुम्हें बसाया है
हर नफ़स[1] वक़्फ़े–आह[2] पाया है

कितना जां–बख़्श कितना कैफ़–अफ़ज़ा[3]
उन हसीं गेसुओं[4] का साया है

आह का कुछ असर न नाले[5] का
दिल भी किस संगदिल[6] पे आया है

एक बिजली सी दिल पे कौंद[7] गई
किस ने रूख़ से निक़ाब[8] उठाया है

जान मैं क्यों न दूं तिरे ग़म पर
इस को सब कुछ गंवा के पाया है

हाले–दिल दीदनी था[9] जब ये खुला
तू हमारा नहीं पराया है

जाने क्या बात है कि 'रहबर' को
जब भी देखा उदास पाया है

1. श्वास 2. आह के समर्पण 3. जीवन वर्द्धक और मस्ती वर्द्धक 4. सुन्दर अलकों का 5. फरयाद 6. निष्ठुर 7. चमक 8. चेहरे से पर्दा उठाया है 9. दिल का हाल देखने लायक़

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सख़्त नासाज़[1] है दुनिया की फ़ज़ा ऐ साक़ी
जाम भर भर के मुझे आज पिला ऐ साक़ी

छा गई झूम के गर्दूं[2] पे घटा ऐ साक़ी
आज हर रिन्द[3] को भरपूर पिला ऐ साक़ी

कब से प्यासा हूं मिरी प्यास बुझा ऐ साक़ी
मैं तिरा बन्दा हूं तू मेरा ख़ुदा ऐ साक़ी

हम नहीं वो कि जो उठ जायेंगे पी कर इक जाम
हम को मैख़ाने का मैख़ाना[4] पिला ऐ साकी

आज 'रहबर' भी है मैख़ाना में रौनक़–अफ़रोज़[5]
मुतरिबा[6] .छेड़ ग़ज़ल जाम उठा ऐ साक़ी[7]

OO

1. प्रतिकूल 2. गगन 3. शराबी 4. मदिरालय
5. शोभायमान 6. गायका 7. मधुबाला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चूम लेता हूं हाथ क़ातिल[1] के
हौसले देखिये मिरे दिल के

कौन पुर्साने–हाल[2] है दिल का
किस से कहिये मुआमले दिल के

तेरे ग़म, तेरी याद, तेरे तीर
दिल में आये तो हो रहे दिल के

ख़ून रोती हैं हस्रतें दिल की
ज़ख़्म–ख़ुर्दा[3] हैं वलवले[4] दिल के

वक़्त पड़ने पे साथ छोड़ गये
ना–ख़ुदा मेरी कश्ती–ए–दिल[5] के

दिल का हरगिज़ बुरा नहीं 'रहबर'
आप चाहें तो देख लें मिल के

OO

1. हत्यारा 2. हाल पूछने वाला 3. घायल 4. उमंगें
5. दिल की कश्ती के नाविक

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

काम रहता है हर घड़ी ग़म से
दूर रहती है हर ख़ुशी हम से

आप क्या हम से रूठ जाते हैं
रूठ जाती है ज़िन्दगी हम से

इस क़दर ग़म न दे मुझे ऐ दोस्त
मर न जाऊं मैं शिद्दते–ग़म[1] से

आ गये हैं वो बज़्म में 'रहबर'
पड़ गये हैं चिराग़ मध्धम[2] से

1. गम की तीव्रता 2. फीके

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आप के हिज्र[1] में ये आलम है
मैं हूं और एक लशकरे–ग़म[2] है

आ भी जाओ कि बुझ न जाये कहीं
ज़िन्दगी का चिराग़ मध्धाम है

ज़िन्दगी भी निसार[3] कर दूंगा
आपकी हर ख़ुशी मुक़द्दम[4] है

मुझ को अपनी ख़बर नहीं 'रहबर'
और उन का ख़्याल पैहम[5] है

1. वियोग 2. ग़मों का दल 3. न्योछावर 4. प्रमुख 5. निरंतर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

नज़र के तीर दिलों मे उतारने वाले
वो आये ख़ल्क़[1] को बे मौत मारने वाले

शिकस्त खा के महब्बत में यूं उदास न हो
ये हार जीत से बेहतर है हारने वाले

ये क्या कि लुत्फ़े बहारे–चमन से हैं महरूम[2]
चमन को अपने लहू से निखारने वाले

हर एक शब के मुक़द्दर में[3] है तुलूअे–सहर[4]
तड़प तड़प के शबे–ग़म–गुज़ारने वाले

न कोई आह, न शोरे–फुग़ां, न नाला–ए–दिल[5]
कहां गए शबे–हिज्रां[6] गुज़ारने वाले

ज़रा संभल के, न गिर जाये कोई क़तरा–ए–मय[7]
शराब शीशा–ए–मय[8] में उतारने वाले

पलट के भी नहीं देखा किसी ने ऐ 'रहबर'
पुकारते ही रहे गो पुकारने वाले

OO

1. जन साधारण 2. बहार के आनन्द से वंचित 3. हर एक रात की किस्मत में 4. प्रभातोदय
5. फर्याद और रोने का शोर 6. जुदाई की रात 7. शराब की बूंद 8. चषक में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

न ग़ुन्चे हैं न गुल हैं आह अपने
फ़क़त कांटे हैं फ़र्श–ए–राह अपने

किसे अपना कहे कोई जहां में
जब आंखें फेर लें नागाह[1] अपने

चले हो सूए–मैख़ाना[2] तो यारो
हमें भी ले चलो हमराह[3] अपने

ख़ज़ाने दे गये रंजो–अलम के
वो ख़ुशियां ले गये हमराह अपने

पलट कर काश आ सकते दुबारा
वो दिन, वो पल, वो सालो–माह[4] अपने

निक़ाब[5] अपना उलटने को है कोई
छुपा लें जलवे मह्रो–माह[6] अपने

सरे–मंज़िल[7] पहुंचते हम भी 'रहबर'
वो चलते दो क़दम हमराह अपने

∞

1. अचानक 2. मदिरालय की ओर 3. साथ 4. साल और महीने
5. घूंघट 6. सूरज और चांद 7. मंज़िल पर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हाल दिल का सुना नहीं सकते
आप को हम रूला नहीं सकते

जा तो सकते हो छोड़ कर मुझको
तुम मिरे दिल से जा नहीं सकते

दिल जलाते हो क्या क़ियामत है
शम्अे उल्फ़त[1] जला नहीं सकते

रात भर उन का इन्तिज़ार किया
भूल कर भी जो आ नहीं सकते

हम तुम्हारे हसीं तसव्वुर[2] से
दामने–दिल[3] छुड़ा नहीं सकते

इश्क़े–सादिक़ की शमअे–रौशन[4] को
लाख तूफ़ां बुझा नहीं सकते

शे'र हम अन्जुमन[5] में ऐ 'रहबर'
पढ़ तो सकते हैं गा नहीं सकते

1. प्यार का दीप 2. सुन्दर ख़्याल 3. दिल का दामन
4. सच्चे प्यार के उज्ज्वल दीप को 5. महफिल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हस्रते दिल कभी नाकाम भी हो जाती है
बेबसी प्यार का अन्जाम भी हो जाती है

ये मसाइब[1] की कड़ी धूप भी ढल जायेगी
दिन निकलता है तो फिर शाम भी हो जाती है

अह्ले–ज़र[2] पर कोई उंगली नहीं उठने पाती
मुफ़्लसी[3] बे–वजह बदनाम भी हो जाती है

गर्दिशे–वक़्त[4] के सद्मात[5] को सहते सहते
ज़िन्दगी टूटा हुआ जाम भी हो जाती है

हम ने देखा है कई बार जुनूं[6] के आगे
अक़्ल की पुख़्ता–गरी[7] ख़ाम[8] भी हो जाती है

पेट की आग है वो चीज़ कि जिस के हाथों
आबरू[9] हुस्न की नीलाम भी हो जाती है

पीने वालो नहीं हर रोज़ का पीना अच्छा
दुश्मने–जां मये–गुल़फाम भी हो जाती है[10]

हस्रते दीद[11] में दर[12] को तिरे तकते तकते
ये नज़र जुज़वे–दरो–बाम[13] भी हो जाती है

1. मुसीबतों की 2. धनवानों पर 3. ग़रीबी 4. समय का चक्र 5. आघात 6. पागलपन 7. सुदृढ़ता 8. अदृढ़ 9. इज़्ज़त 10. फूल जैसे रंग वाली मदिरा भी जान की दुशमन बन जाती है 11. दर्शन अभिलाषा 12. किवाड़ 13. किवाड़ और मंडेर का अंश हो जाती है ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उन को क्या चाहने लगा हूं मैं
ख़ुद से बेगाना हो गया हूं मैं

अपनी तस्कीने–बंदगी[1] के लिये
नित नये बुत तराशता हूं मैं

तुझ को दिल में छुपाये बैठा हूं
देख लेता हूं जब भी चाहूं मैं

दिन हो या रात सूरते–तस्वीर[2]
आप की राह देखता हूं मैं

सर हथेली पे रख के ऐ 'रहबर'
इश्क़ की राह हो लिया हूं मैं

1. बंदगी की सांत्वना 2. बुत समान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मस्त आंखों का फ़ैज़[1] जारी है
मैकशो, इज़ने–मैगुसारी[2] है

अब क़ियामत का डर नहीं हम को
हम ने फ़ुर्क़त की शब[3] गुज़ारी है

हम तही–दस्त[4] ही सही लेकिन
दौलते–रंज[5] तो हमारी है

आज फिर दोस्ती के पर्दे में
कोई महवे–फ़रेबकारी[6] है

ख़ारज़ारे–हयात[7] में रहबर
मेरे ज़ख़्मों से ख़ून जारी है

1. दानशीलता 2. पीने वालो! पीने का आदेश हैं 3. जुदाई की रात
4. निर्धन 5. रंज की दौलत 6. धोका देने में व्यस्त 7. जीवन का कांटों भरा पथ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वो नज़र बदगुमां सी लगती है
ज़िन्दगी रायगां[1] सी लगती है

जिस पे वो मह्वे ख़ुश–ख़िरामी[2] हों
वो ज़मीं आसमां सी लगती है

नक़्शे–पा हैं कि माह–ओ–अंजुम हैं[3]
रहगुज़र[4] कह्कशां[5] सी लगती है

ज़िक्र हो जिस में उस परी–वश[6] का
वो ग़ज़ल नौजवां सी लगती ह

आरज़ूओं के ख़ूने–नाहक़[7] में
दिल की कश्ती रवां[8] सी लगती है

तेरी तन्हा–रवी[9] भी ऐ 'रहबर'
कारवां कारवां सी लगती है

∞

1. व्यर्थ 2. टहल क़दमी में मग्न 3. पैरों के निशान हैं या चांद सितारे
4. मार्ग 5. आकाश गंगा 6. परी जैसी 7. अनुचित बहाया गया लहू
8. गतिशील 9. अकेले चलना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लुत्फ़ गो जज़बात के दरिया में बह जाने में है
अज़मते–इन्सां[1] तो दिल को राह पर लाने में है

सूरते–परवाना जल आऊंगा शम्‌अे–हुस्न पर
मुझ में उतना हौसला है जितना परवाने में है

दिलबरों के जौर–ए–पैहम[2] का गिला अच्छा नहीं
आशिक़ी की शान रहबर' घुट के मर जाने में है

---

1. इन्सान की श्रेष्ठता 2. निरंतर अत्याचार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

इक दुशमने–वफ़ा से तमन्ना वफ़ा की है
हर बात लाजवाब दिले–मुब्तला[1] की है

दिल में हमारे चाह किसी बे–वफ़ा की थी
दिल में हमारे चाह किसी बेवफ़ा की है

पहले किसे थी ताबे–नज़र[2] अब तो ख़ैर से
रक़्सां रुख़े–सबीह पे सुर्ख़ी हया की[3] है

वैसे तो वे–वफ़ा हैं ज़माने के सब हसीं
लेकिन कुछ और बात मिरे बे–वफ़ा की है

उठ एहितमामे–जामे–मये अरग़वां[4] करें
शिमले में 'रहबर' आज तो सर्दी बला की है

1. प्यार ग्रस्त दिल 2. आंख भर के देखने का सामर्थ्य 3. गोरे मुख पर शर्म और लज्जा की लालिमा खेल रही है 4. सुर्ख़ मदिरा के जाम की व्यवस्था करें।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ख़्यालों मे जब उस महवश[1] की बज़्मे–नाज़ होती है
तो मेरे दिल की हर धड़कन सरापा साज़ होती है

कभी तो बाग़े–हस्ती में ख़ुशी के फूल खिलते हैं
कभी हद्दे–नज़र की हर फ़ज़ा नासाज़[2] होती है

तिरे क़दमों की आहट गूंजती है अब भी कानों में
तिरी पाइल की अब भी गोश–ज़द[3] आवाज़ होती है

मिरा हर लफ़्ज़ है आइना–दारे–हस्ती–ए–इन्सां[4]
मिरी आवाज़ 'रहबर' वक़्त की आवाज़ होती है

1. चांद सा 2. प्रतिकूल 3. सुनाई देना 4. इन्सानी जीवन का अक्स

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कभी फ़र्याद बर–लब[1] तेरे दीवाने नहीं होते
कि हरगिज़ शिकवा–संज–ए–शमअ[2] परवाने नहीं होते

हमें ऐ नासहे–ना फ़हम[3] समझाना है ला–हासिल
जो समझाए समझ जाते हैं दीवाने नहीं होते

नज़र ही से शराबे–अर्ग़वां[4] का लुत्फ़ आता है
हक़ीक़ी[5] मयकशों के पास पैमाने नहीं होते

हमीं उठ कर चले आये हैं वरना तेरी महफ़िल में
वो बातें अब नहीं होतीं कि अफ़साने नहीं होते

जो साए की तरह रहते थे हर दम साथ ऐ रहबर
वो मेरे सामने अब क्यों ख़ुदा जाने नहीं होते

---

1. होटों पर फ़र्याद नहीं लाते 2. शमअ का गिला नहीं करते 3. नसीहत करने वाला बुद्धिहीन
4. लाल रंग की मदिरा 5. असली

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जोशे–जज़्बाते–महब्बत[1] का असर देखा किए
दिल में हम दिलबर को हर दम जलवा–गर[2] देखा किए

सूरते–तसवीर[3] उन की रहगुज़र देखा किए
आ के वो चल भी दिए हम बे–ख़बर देखा किए

जीते जी 'रहबर' न कोई राज़े–पिन्हां[4] खुल सका
उम्र भर इक जलवा–ए–हैरत[5]–असर देखा किए

1. महब्बत के जजबात की तीव्रता 2. प्रकट 3. मूरत समान
4. गुप्त भेद 5. हैरान करने वाला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चले आओ कि याद अकसर दिले–दीवाना करता है
तुम्हारा इंतिज़ार अब भी ये बे–ताबाना[1] करता है

किसी ने मुस्करा कर मुझ को देखा ही सही लेकिन
ज़माना क्यों ज़रा सी बात को अफ़साना करता है

अगर बे–लौस[2] उल्फ़त उठ चुकी है दह्‌र से नासह[3]
तो क्यों कुर्बान अपनी ज़िन्दगी परवाना करता है

खिरद–मंदों[4] से भी बढ़ कर ख़िरद–मंदाना[5] होती हैं
जो बातें बे–ख़ुदी[6] में आप का दीवाना करता है

बड़ी अनमोल शै है कर भी ले नादां क़बूल इस को
दिल अपना पेश 'रहबर' अज़–रहे–नज़राना[7] करता है

1. बेचैनी से 2. निष्काम 3. नसीहत करने वाला 4. बुद्धिमान लोग
5. दानाई भरी 6. बेसुधी 7. भेंट के तौर पर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जाने–दिल, जाने जिगर, जाने तमन्ना[1] आप हैं
क्या करें अब आप से हम अर्ज़[2] क्या क्या आप हैं

मेरे दिल ने दिल से जिस मूरत को पूजा, आप हैं
मैंने जिस तस्वीर को ख़ाबों में देखा, आप हैं

आप ही की जुस्तजू[3] है मेरा मक़सूद ए हयात[4]
ढूंडती है जिस को मेरी चश्मे–बीना[5] आप हैं

देख कर इक नौशिगुफ़्ता[6] फूल को कल बाग़ में
आलमे–बारफ़्तगी[7] में मैं ये समझा आप हैं

1. आरज़ू 2. निवेदन 3. तलाश 4. जीवन का उद्धेश्य
5. देखने वाली आँख 6. स्फुटित 7. बेसुधी की हालत में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रंज की ख़ूगर[1] तबीयत हो गई
लीजिए जीने की सूरत हो गई

आप नाहक़ हो रहे हैं शर्मसार
मेरी जो होनी थी हालत हो गई

एक कांटा सा खटकता है मुदाम[2]
दिल की दुश्मन दिल की हसरत हो गई

अब वो आयें भी अयादत[3] को तो क्या
ग़ैर अब अपनी तो हालत हो गई

हो गये दीवाने हम अच्छा हुआ
रोज़ के झगड़ों से फुर्सत हो गई

मयकशी[4] की क्या कहूँ 'रहबर' कि ये
होते होते मेरी आदत हो गई

1. स्वाभावित 2. सर्वदा 3. हाल पूछने 4. मदिरा पान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बुलबुल के ज़मज़मे हैं

बुलबुल के ज़मज़मे[1] हैं चिड़ियों के चहचहे हैं
आई बसंत, हर सू गुंचे खिले हुए हैं

मौसम भी आज अपने तेवर बदल रहा है
सर्दी की शिद्दतों[2] से बाहर निकल रहा है

ग़श[3] हो रही है बुलबुल फूलों के बांकपन पर
मस्ती सी छा रही है हर शाख़ हर चमन पर

शबनम के आइने में ख़ुद को निहारती है
अपनी ज़बां[4] में बुलबुल किस को पुकारती है

फूलों की ख़ुशबुओं से सब्ज़ा महक रहा है
कोंपल महक रही है, गुंचा चटक रहा है

OO

1. तराने 2. तीव्रता 3. मुग्ध 4. भाषा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मिट्टी का मकां

क्यों तन–ए–ख़ाकी[1] पे इतराता है तू
रूह को क्यों भूलता जाता है तू

किस लिये साये के पीछे ऐ बशर[2]
भागता है अस्ल शै[3] को छोड़ कर

जिस्म क्या है एक मिट्टी का मकां
जिस से टकराती हैं लाखों आंधियां

एक दिन तूफ़ान ऐसा आयेगा
ये घरोंदा[4] ख़ाक में मिल जायेगा

क्या भरोसा इस ख़राबाबाद पर
जो खड़ा है रेत की बुन्याद पर

जिस्म का अन्जाम[5] इब्रत–नाक है[6]
जिस्म मिट्टी का मकां है, ख़ाक है

OO

1. मिट्टी का बना हुआ शरीर 2. मनुष्य 3. चीज़ 4. घर
5. अंत 6. भयानक

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मिन्नत

सुना है तेरे दर पर आ के जो सर को झुकाता है
तिरी दरगाह से मन की मुरादें पा के जाता है

सँवर जाती हैं तेरे लुत्फ़ से माथे की तहरीरें[1]
तिरी नज़रे–इनायत से बदल जाती हैं तक़दीरें
जो हो तेरा इशारा ख़ाक से बनती हैं इकसीरें[2]
जो हो तेरी रज़ा आहों में आ जाती हैं तासीरें[3]

चले आए हैं हम भी तेरे दर पर हाथ फैलाए
हमारी बे–कसी की ऐ ख़ुदा अब लाज रह जाए
हुए जाते हैं गहरे और भी कुछ यास के साए
तिरी चौखट से उठ कर कोई जाए तो कहां जाए

सवाली बन के बैठे हैं मुरादें पा के उठ्ठें गे
तुझे हम अपने दिल का मुद्आ समझा के उठ्ठें गे

भरे हैं जाम औरों के हमारा जाम ख़ाली है
निगाहें भी सवाली हैं ये दामन भी सवाली है
तू इस दुनिया का मालिक है तू इस दुनिया का वाली है
तिरे दर पर तिरे बन्दों ने अब गर्दन झुका ली है

1. लिखावट 2. रसायन 3. असर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जिन्हें बख़्शी हैं दाता तू ने आली शान जागीरें
लिखी हैं तू ने सोने के क़लम से जिन की तक़दीरें
तिरे दर पर खड़े हैं आज बन कर ग़म की तस्वीरें
मिलें गी नामुरादों को तिरे ही दर से तौक़ीरें[1]
हजूरी में न काम आती हैं तदबीरें न तक़रीरें

ज़माने भर की हर ने'मत से जब तू ने नवाज़ा है
तो फिर औलाद की ने'मत से क्यों महरूम रक्खा है
खुले कुछ तो ये बन्दों पर कि बन्दों की ख़ता क्या है
भरे औलाद की ने'मत से झोली ये तमन्ना है

कोई नन्हीं सी कोंपल तो हमारी शाख़ से फूटे
जो अपनी मुस्कुराहट से हमारे दो जहां लूटे
हमारे घर के आंगन में खिलें ऐ काश गुल बूटे
हमारी ना–मुरादी का कहीं तो सिलसिला टूटे

जो हो तेरा इशारा ख़ाक से बनती हैं इकसीरें
सँवर जाती हैं तेरे लुत्फ़ से माथे की तहरीरे

(एक दरवेश की दरगाह पर सम्राट 'अकबर' की अर्ज़ दाश्त)

OO

1. प्रतिष्ठा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आह!. प्रो. पुरुषोतम लाल 'ज़िया' (मरसिया)

चल बसा दह्र से ज़िया अफ़सोस
इक चिराग़ और बुझ गया अफ़सोस
आह इक शायरे–फ़सीह–बयां[1]
वक़्त से पहले उठ गया अफ़सोस
कितनी वहशत–असर ख़बर है ये
जिस किसी ने सुनी कहा अफ़सोस
कारवाने–ज़बाने–ग़ालिब–ओ–ज़ौक़[2]
रोज़–ए–रौशन में लुट गया अफ़सोस
संग–दिल मौत तेरे तरकश में
एक ऐसा भी तीर था अफ़सोस
हो गई महफ़िले–अदब वीरां
अपने बेगाने सब हैं नोहा–कनां[3]

1. खुश बयां 2. 'ग़ालिब' और 'ज़ौक़' की भाषा (उर्दू) का कारवां 3. मातम में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शेर'गोई पे जिस को क़ुदरत थी
जिस के दम से अदब की अज़मत थी
शायरी का वक़ार था जिस से
जिस के अशआर में हरारत थी
जिस की ग़ज़लें अदब का सरमाया
जिस की हर नज़्म बेश-क़ीमत थी
फ़न पे जिस को उबूर[1] हासिल था
जिस की फ़ितरत अदब की ख़िदमत थी
जो था शे'रो-अदब का दीवाना
जिस से दीवानगी इबारत थी
अब नहीं है ब-क़ैदे-जिस्मो हयात[2]
उठ गया बज़्मे-दह्र से हेहात

गंजे-अफ़कार है कलामे-ज़िया
अर्शे-आ'ज़म पे है मक़ामे-ज़िया
उस की हस्ती थी हुरमते-हस्ती
क्यों न हो सब को एहतिरामे-ज़िया
झुक ही जायेगा सर अक़ीदत से
जब भी आयेगा लब पे नामे-ज़िया
अह्ले-फ़न का है इत्तफ़ाक़ इस पर
दुर्रे-शहवार[3] है कलामे-ज़िया
गो वजूदे-ज़िया नहीं बाक़ी
ता-क़ियामत रहेगा नामे-ज़िया
क्या नज़ामे-ख़ुदाए-आलम है
नेक बन्दों की उम्र ही कम है

1. महारत 2. ज़िन्दगी की क़ैद 3. बड़ा मोती

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हर तरफ़ एक शोरे–मातम है
ग़र्क़े–ग़म आज सारा आलम है
तू अकेला नहीं है ऐ परवेज़[1]
एक दुनिया शरीके–मातम है
रो कि दिल का ग़ुबार धुल जाए
रो कि ये ग़म बहुत बड़ा ग़म है
अपनी क़िसमत पे ख़ूब अश्क बहा
रो कि जितना भी रोएगा, कम है
मैं न रोकूंगा तुझ को रोने से
रो कि इक भाइयों में अब कम है
फ़ख़्रे–पंजाब था तिरा भाई
रो कि जाता रहा तिरा भाई

आना जाना लगा ही रहता है
ये तमाशा अजब तमाशा है
वक़्त से पहले लेकिन उठ जाना
आदमी को लहू रुलाता है
शे'र गोई में अब नहीं गर्मी
शायरी एक सर्द लाशा है
जाने–बाग़े–अदब था जो ग़ुंचा
उस को दस्ते–क़ज़ा[2] ने तोड़ा है
अब मुलाक़ात हो तो कैसे हो
अब बहुत दूर घर ज़िया का है
अब उसे ढूंडना है ला–हासिल
अब उसे ढूंडने से क्या हासिल

OO

---

1. प्रो. परशोतम लाल ज़िया का छोटा भाई प्रकाश नाथ परवेज़ 2. मौत का हाथ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आया ज़बां पे नाम

आया ज़बां पे नाम श्री परशुराम का
ये भी है फ़ैज़–ए–आम श्री परशुराम का

हर दिल में बस रहे हैं श्री परशुराम जी
हर दिल में है क़्याम श्री परशु राम का

उस की महानता में भला क्या कलाम हो
जिस देश में हो धाम श्री परशुराम का

हर पीर[1], हर जवान हर इक तिफ़्ल[2] के लिए
लाज़िम है एहतिराम[3] श्री परशुराम का

फूलों की अंजुमन में, सितारों की बज़्म में
चर्चा है सुब्हो–शाम श्री परशुराम का

चुन चुन के ज़ालिमों को मिटाया जहान से
ऐसा था इंतिक़ाम श्री परशुराम का

1. बूढ़ा 2. बच्चा 3. सम्मान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आयें और एह्ले–ज़ुल्म[1] उतरवाएँ अपने सर
ख़ंजर है बे–नियाम[2] श्री परशुराम का

उत्सव मना रहे हैं बड़ी धूम धाम से
याराने–नेक नाम श्री परशुराम का

तकते हैं उस को चांद सितारे भी रश्क[3] से
आ'ली[4] है क्या मक़ाम श्री परशुराम का

'रहबर' ये फ़ख़्र कम नहीं मेरे लिए कि मैं
अदना[5] सा हूं ग़ुलाम श्री परशुराम का

∞

1. अत्याचारी 2. म्यान से बाहर 3. ईर्ष्या 4. ऊँचा 5. छोटा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ब्रह्मन

ब्रह्मन हूं वुजूदे–अक़्लो–दानिश की जबीं[1] मैं हूं
गुले–फ़ह्मो–ज़का[2] खिलता है जिस में वो ज़मीं मैं हूं
ज़माना मुझ से दर्से–इल्म[3] ले सकता है सदियों[4] तक
ऋषि मुनियों की तालीमाते–ज़र्रीं[5] का अमीं[6] मैं हूं

OO

---

1. बुद्धि और ज्ञान के शरीर का मस्तक 2. बुद्धिमता और दक्षता का फूल
3. विद्या प्राप्त करना 4. शताब्दियों तक 5. सुनहरी शिक्षा, स्वर्ण जड़ित 6. अमानतदार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ऐ ताजदारों के अमीर

ऐ दयानन्द ऐ अमीरे–कारवाने दो–जहां
पूजते हैं सब तुझे ऐ अज़्मते–हिन्दोस्तां

महर्षि तूने किया बेदार सारे हिन्द को
याद है अब भी तिरा प्रचार सारे हिन्द को

महर्षि हम सब को तूने कर दिया रौशन ज़मीर
ऐ फ़क़ीरों के फ़क़ीर ऐ ताजदारों के अमीर

तेरा इक इक लफ़्ज़ स्वामी कितना पुर–तासीर था
यानि तू हक़ बात की मुंह बोलती तस्वीर था

तू ने की तशरीह[1] वेदों की हमारे वास्ते
तू ने खोले ज्ञान के अह्ले–जहां पर रास्ते

क़ौम के गिरते हुए हालात पर एहसां किया
क़ौम की तामीर का पैदा नया सामां किया

ऐ दयानन्द तू हक़ीक़त का अलम–बरदार[2] था
तू सदाक़त का फ़रिशता, ज्ञान का भण्डार था

जो तिरे दरबार में आया वो तेरा हो गया
दूर हर दिल से जहालत[3] का अंधेरा हो गया

तेरी अज़्मत में किसी को हो नहीं सकता कलाम
बानी–ए–सिदक़ो–सफ़ा[4] तुझ को मिरा सौ सौ सलाम

∞

---

1. व्याख्या 2. ध्वजा वाहक 3. अज्ञानता
4. सत्यता और पवित्रता के संस्थापक

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रूठे हुओं को हम ने मनाना है दोस्तो

खेतों में मोतियों को उगाना है दोस्तो
जन्नत–निशां वतन को बनाना है दोस्तो

मंज़िल की समत देश रवाना है दोस्तो
मिल कर क़दम सभी ने बढ़ाना है दोस्तो

देखें गगन के चांद सितारे भी रश्क[1] से
भारत को वो मक़ाम दिलाना है दोस्तो

हिन्दू हो, सिख हो या कि मुसिलमान हो कोई
अपने वतन में सब का ठिकाना है दोस्तो

गो पैरहन[2] जुदा हैं अक़ाइद[3] जुदा मगर
यक–जहतियों[4] का लब पे तराना है दोस्तो

हम ने मुरव्वतों की बसानी हैं बस्तियां
दिल से कदूरतों को मिटाना है दोस्तो

राइज करेंगे सिक्का रवादारियों[5] का हम
यकसानियत[6] हमारा निशाना है दोस्तो

कशमीर हो कि कैरल–ओ–आसाम–ओ–आंधरा
हर गोशा इस चमन का सुहाना हैं दोस्तो

---

1. ईर्ष्या 2. लिबास 3. धर्म विश्वास 4. एकता 5. इकट्ठे मिल बैठना
6. समानता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

है बर्क़[1] घात में तो ख़ज़ां[2] भी है ताक में
ख़तरात से वतन को बचाना है दोस्तो

ऐने–सवाब[3], ऐने–वफ़ा, ऐने–ज़िन्दगी
राहे–वतन में जां का लुटाना है दोस्तो

होना है ख़ुद–कफ़ील[4] हमें हर लिहाज़ से
इस में सभी ने हाथ बटाना है दोस्तो

चलने न देंगे चाल अदू[5] की यहां कोई
दुशमन को हम ने नीचा दिखाना है दोस्तो

रूठे हुए जवां भी वतन के सपूत हैं
रूठे हुओं को हम ने मनाना है दोस्तो

बंगाल का हो या कि हो गुजरात का कोई
हम ने दुई[6] का फ़र्क़ मिटाना है दोस्तो

हिन्दोस्तां का बाज़ुए–शमशीर–ज़न[7] है ये
पंजाब का ये फ़ख़्र[8] पुराना है दोस्तो

हमराह ले के पुख़्ता इरादों की रौशनी
ज़र्रों को आफ़ताब[9] बनाना है दोस्तो

OO

---

1. बिजली 2. पतझड़ 3. पुण्य 4. आत्म निर्भर 5. दुशमन
6. भेद भाव 7. वह बाज़ू जिस में कटार पकड़ी जाए 8. गर्व 9. सूरज

• CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ईद

किरन उम्मीद की लेकर हिलाले–ईद[1] निकला है
चमकती हैं जबीनें[2] रोज़ादारों, हक़ गुज़ारों की
उसे मालूम है रोज़े–सईदे–ईद[3] की क़ीमत
मुयस्सर आई हो जिस को सआदत[4] तीस रोज़ों की

घटा छाई है रहमत की फ़ज़ाएँ मुस्कराई हैं
दरे मयख़ाना–ए–तौहीद वा है रोज़ादारों पर
मुरादें मिन्नतें बर आई हैं सजदा गुज़ारों की
है फ़ैज़े–आम[5] जारी ईद का अल्लाह वालों पर

ये दिन वो है कि दुशमन दुशमनी को भूल जाते हैं
गले लग लग के मिलते हैं शहनशाहो–गदा[6] इस दिन
मिटा देता है ये दिन फ़र्क़ अपने और पराए का
ये दिन वो है कि मिट जाते हैं सब शिकवे गिले जिस दिन

ये दिन हर साल पैग़ामे–महब्बत ले के आता है
रहें मिल जुल के हम सब ईद का दिन ये सिखाता है
लगाएं हम उन्हें सीने से जो ग़म से तड़पते हैं
ख़ुशा ऐ दिल ज़माना ईद की ख़ुशियां मनाता है

OO

1. पहली रात का चांद 2. माथे 3. ईद का शुभ दिन 4. सौभाग्य 5. उदारता
6. बादशाह और भिक्षुक

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बूटा सिंह की 'ज़ैनब' के नाम

चिरागे़–उम्र इक बेबस का क्यों गुल कर दिया तू ने
वफ़ा के हल्क़[1] पर ख़ंजर चलाया क्या किया तू ने

वो बूटा सिंह कि बस मेह्रो–महब्बत काम था जिस का
दियारे–इश्क़[2] में तेरे लिए सब कुछ लुटा जिस का

वो जिस के ख़ून से लबरेज[3] है पैमाना–ए–उल्फ़त[4]
वो जो दुहरा गया फ़र्हाद का अफ़साना–ए–उल्फ़त

बला का दर्द है जिसकी महब्बत के फ़साने में
वफ़ा पर मर मिटा जो इस गये गुज़रे ज़माने में

अगर तू उसकी हो जाती किसी सूरत किसी ढब से
तो चर्चे आज यूं होते न उस के ख़ूने–नाहक़ के

महब्बत क़ैद–ए–मज़हब की नहीं पाबंद ऐ 'ज़ैनब'
तुझे राज़े–निहाने–इश्क़[5] कब मालूम है 'ज़ैनब'

ꝏ

1. गले पर 2. प्रेम नगरी 3. परिपूर्ण 4. प्यार का चषक 5. महब्बत का रहस्य

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ऐ मेरे उस्ताद

ऐ मिरे उस्ताद इल्मो–नूर[1] का दरिया है तू
ले के मंज़िल पर जो जाता है वही रस्ता है तू

आदमी के रूप में अवतार कहना चाहिए
रोशनी का तुझको इक मीनार कहना चाहिए

गो कि तू उस्ताद जी के नाम से मशहूर है
मेरी नज़रों में मगर तू इक सरापा[2] नूर है

तेरी इज़्ज़त तेरी अज़मत हर बशर के दिल में है
ज़िक्र तेरी अक़्लो–दानिश का हर इक महफ़िल में है

रंग भर देता है तू शार्गिद की तक़दीर में
रंग भरता है मुसव्विर[3] जिस तरह तसवीर में

ꝏ

1. ज्ञान, रौशनी 2. सर से पांव तक 3. चित्रकार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तिरंगा

मेरे वतन की शान तिरंगा निशान है
ये देश भक्तियों की हसीं दास्तान है

ये माउँट ऐवरेस्ट पे जलवा फ़िगन हुआ
ये कारगल में पहुंचा तो शाने--वतन हुआ

इस में निहां हैं ख़ूने--शहीदां की शौकतें
और सब्ज़ खेतियों की हैं इस में तरावतें

इस में सचाई और महब्बत का रंग है
चक्कर अशोक का भी यहां अंग संग है

तेरी निराली शान है ऊँचा तिरा मक़ाम
मेरे वतन की शान तिरंगे तुझे सलाम

ОО

तेरे खुशबू में बसे ख़त (काव्य संग्रह) – राजेन्द्र नाथ रहबर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुतफ़र्रिक़ अश्आर

- शायद जहान में मिरा बाक़ी निशां रहे
  शायद कि मेरा शे'र कोई जाविदां[1] रहे

- उठ्ठा है फिर फ़साद का फ़ितना नगर नगर
  महफ़ूज़[2] हर बला से हमारा मकां रहे

- हम को दरवेशी[3] की दौलत भी मिली है फ़न के साथ
  हम रतन पंडोरवी के सीनियर शार्गिद हैं

- वहीं पेड़ों तले छोटी सी कुटिया डाल कर रहते
  तुम इस जंगल की हिरनी को कहां शह्रों मे ले आए

- हम कोई 'सरमद' नहीं हक़ बात भी कहते नहीं
  क्यों हमारे क़त्ल के एहकाम[4] जारी हो गए

- आते जाते मुझे रौंदा करें बस्ती वाले
  सोचता हूं कि तिरे गांव का रस्ता हो जाऊँ

- कुछ तो तस्कीन[5] मिले मुझ से किसी राही को
  मैं कोई पेड़ बनूं पेड़ का साया हो जाऊँ

- दुआ है कि ऊँचे घरानों में जाएं
  मिरे शह्र की नेक दिल लड़कियां

---

1. अमर 2. सुरक्षित 3. फ़क़ीरी 4. हुक्म 5. आराम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

o मैं देखता हूं तुझे बस अक़ीदतन[1] वरना
मिरी निगाह का मरकिज़[2] तिरा शबाब नहीं

o तय होंगे ज़िन्दगी के कड़े कोस किस तरह
जब तुम ही इस सफ़र में मिरे हमसफ़र नहीं

o लग जायेगी चुप उन को भी इक रोज़ यक़ीनन
उन पर भी मिरे ग़म का असर हो के रहेगा

o ज़ालिम मरीज़े–इश्क़ के हक़ में तिरी नज़र
वो काम कर गई है कि मसीहा[3] न कर सके

o क़दम क़दम पे दिए हैं फ़रेब तू ने मुझे
'ये दोस्ती है कि इस दौर की सियासत है'

o ज़माना हम को क्या समझे ज़माना हम को क्या जाने
हमारी गर्द तक भी अक़्ले इन्सानी नहीं जाती

o बहुत दिनों ठहर लिए यहां से अब उठो मियाँ
नए नगर की राह लो, नए नगर चलो मियाँ

o मंज़र हैं दिल–फ़रेब सुहाने हैं रास्ते
आना हमारे गाँव अगर तुम से बन पड़े

---

1. श्रद्धा से 2. केन्द्र 3. जो हर रोग का उपचार कर सके, हज़रत ईसा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

○ ये जोगिया लिबास ये गेसू खुले हुए
किस के फ़िराक़[1] में है तू जोगिन बनी हुई

○ उधर उन के गले में अजनबी बाहें मचलती थीं
इधर रो कर सुकूते–शब[2] को बरहम[3] कर दिया हमने

○ तुझे सीमो–ज़र[4] से महब्बत बहुत है
तिरी कायनात एक कार एक बंगला
मिरी कायनात एक लोहे का छल्ला
जो तूने बतौरे–निशानी दिया था

○ पहले पहल जो उस ने भेजा था हम को रहबर
वो सलाम याद आया वो प्याम याद आया

○ ज़मीं उन को निगलती है न गर्दू[5] ही उठाता है
ख़ुदा–वन्दा तिरे हारे हुए बन्दे कहां जाऐं

○ ये भी एक पहलू है इश्क़ के फ़साने का
हौसला किया दिल ने उन को भूल जाने का

○ जब से देखी है आप की सूरत
दिल सम्भलता नहीं किसी सूरत

○ ये क्या उस दिल की अफ़सुर्दा–दिली[6] देखी नहीं जाती
सहर के साथ जिस को फूल की मानिन्द खिलना था

---

1. वियोग 2. रात्रि की चुप्पी 3. भंग 4. चांदी सोना
5. आसमां 6. उदासी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

- किए हैं कितने घरों के चिराग़ गुल उस ने
  जो देखने में ख़ुदा सा दिखाई देता है

- हमारे दिल में रहती है इक ऐसी दिल–नशीं[1] सूरत
  कि जिस के सामने भरती है पानी हर हसीं सूरत

- उस गुल की सवारी का जो कहीं मिरे दर पे उतारा हो जाए
  मिट जाएँ गिले दिल के सारे जीने का सहारा हो जाए
  वो रश्के–क़मर[2], तस्कीने–नज़र, वो गुन्चा दिहन[3] वो सीमीं बदन[4]
  वो बाइसे–राहते–क़ल्बो–जिगर[5] ऐ काश हमारा हो जाए

- जाने किस देस जा बसे हो तुम
  ईद का चांद हो गए हो तुम

- मैं ने तुम पर गीत लिखा है
  तुम को अपना मीत लिखा है

- शैख़ की जन्नते पुर–फ़ज़ा से
  मेरा हिन्दोस्तां कम नहीं है

- ख़ुलूस, सिदक़ो–सफ़ा, आशती,[6] वफ़ा, नेकी
  किसी को रास न आई हवा ज़माने की

1. सुन्दर 2. चांद जैसा 3. फूल जैसे मुख वाला 4. चांदी से बदन वाला
5. दिल/ज़िगर को आराम देने वाला 6. सच्चाई, पवित्रता, दोस्ती

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

- ऐ काश मुझे सुनते कहीं अह्ले–समाइत[1]
  'मैं शाख़ से टूटे हुए पत्ते की सदा[2] हूं'
  जिस रोज़ से वो जाने–जहां मुझ से ख़फ़ा[3] है
  उस रोज़ से मैं सारे ज़माने से ख़फ़ा हूं

- तुम्हारी राह मैं अगले बरस भी देखूंगा
  तुम आओगे तो मैं घी के दिये जलाऊंगा

- हम वो राही हैं जो मंज़िले–इश्क़ से कामरां[4] आए हैं
  अपनी रातों की तक़दीर में दर्द के कारवां आए हैं

- बढ़ के हम सर काट लेंगे दुशमने–बे पीर का
  संग–रेज़ा[5] भी उठाए वो अगर कशमीर का

- लगा ले बढ़ के गले उन के ग़म को ऐ रहबर
  इसी में चैन है, आसूदगी[6] है, राहत है

- उड़ के पहुंचा सब के सर माथे पे वो
  कल तलक जो रास्ते की धूल था

- चुभ गया वो दिल में कांटे की तरह
  ख़ार[7] था वो या वो कोई शूल था

- जीते जी मैं नहीं उठने का तुम्हारे दर[8] से
  मौत ही आ के उठाए तो उठाए मुझको

---

1. सुनने की शक्ति रखने वाले 2. आवाज़ 3. नाराज़ 4. कामयाब 5. कंकर 6. आराम 7. कांटा 8. द्वार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri